www.deshbandhu.co.in खबरें लगातार ... | पत्र नहीं; मित्र | RNI No. - MPHIN/2018/76121

देशबन्धु

वर्ष – 8 I अंक – 84 I नर्मदापुरम, शनिवार 21 जून 2025 I पृष्ठ–8 I मूल्य – 2.00 रुपए

मप्र के 14 जिलों के नगरों में कर्क रेखा पर गायब होगी छाया — पृष्ठ 2

कबाड़ से जुगाड़ ही उनकी पहचान है
छोटे बैंकों के डूबने की भी फ़िक्र करनी जरूरी है — पृष्ठ 4

अहमदाबाद विमान हादसे के मृतकों को श्रद्धांजलि
काली पट्टी बांध कर मैदान में उतरे खिलाड़ी — पृष्ठ 5

कमाल है, गंभीर बीमारी को लोग हल्के में ले रहे हैं... — पृष्ठ 7

सार-समाचार

राष्ट्रपति श्रीमती मुर्मु को मुख्यमंत्री ने जन्मदिन की शुभकामनाएं दीं

भोपाल, देशबन्धु। राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु को मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने जन्मदिन की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं दीं हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा है कि राष्ट्रपति श्रीमती मुर्मु ने लोक कल्याण के लिए अनेक महत्वपूर्ण कार्यों का नेतृत्व किया है। उनका सार्वजनिक जीवन सभी के लिए प्रेरक है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कामना की है कि मध्यप्रदेश की प्रगति, लोक कल्याण और कमजोर वर्ग के उत्थान के पावन लक्ष्य की प्राप्ति के लिए राष्ट्रपति श्रीमती मुर्मु की प्रेरणा प्राप्त होती रहेगी। उन्होंने बाबा महाकाल से राष्ट्रपति श्रीमती मुर्मु को आरोग्यपूर्ण एवं सुदीर्घ जीवन प्रदान करने की प्रार्थना की है।

कनाडा में भारतीय छात्रा की मौत

नई दिल्ली, एजेंसी। कनाड़ा में वैंकूवर स्थित भारतीय महावाणिज्य दूतावास ने कहा है कि कैलगरी विश्वविद्यालय में पढ़ने वाली एक भारतीय छात्रा तान्या त्यागी की मौत हो गई है। दूतावास ने छात्रा की मौत का कारण नहीं बताया लेकिन कहा है कि वह अधिकारियों के संपर्क में है और शोक संतप्त परिवार को सभी सहायता प्रदान करेगा। दूतावास ने शुक्रवार को सोशल मीडिया पर एक पोस्ट में कहा हम कैलगरी विश्वविद्यालय की भारतीय छात्रा सुश्री तान्या त्यागी के आकस्मिक निधन से दुखी हैं। वाणिज्य दूतावास अधिकारियों के संपर्क में है और शोक संतप्त परिवार को सभी आवश्यक सहायता प्रदान करेगा। हमारी हार्दिक संवेदनाएं और प्रार्थनाएं मृतक के परिवार और दोस्तों के साथ हैं।

बैंक धोखाधड़ी मामले में रतुल पुरी आरोप मुक्त

नई दिल्ली, एजेंसी। दिल्ली की दो अलग-अलग अदालतों ने उद्योगपति रतुल पुरी और अन्य आरोपियों को कुल 1,101 करोड़ रुपए के बैंक धोखाधड़ी के दो मामलों में आरोप मुक्त कर दिया है। केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीई) के आरोपपत्र में किसी भी प्रकार की आपराधिक मंशा साबित न होने पर अदालत ने यह फैसला सुनाया। यह दोनों मामले मोजर बेयर सोलर लिमिटेड और मोजर बेयर इंडिया लिमिटेड से जुड़े थे, जिनमें एक मामले में 747 करोड़ रुपए और दूसरे मामले में 354 करोड़ रुपए की बैंक धोखाधड़ी के आरोप लगाए गए थे।

डीएनए मिलान से अब तक 220 शवों की पहचान

नई दिल्ली, एजेंसी। एअर इंडिया प्लेन क्रैश के एक सप्ताह बाद भी डीएनए मिलान से शवों की पहचान की जा रही है। शुक्रवार को गुजरात के स्वास्थ्य मंत्री रुशिकेश पटेल ने बताया कि अब तक 220 शवों की पहचान हो गई है और उनमें से 202 के पार्थिव शरीर उनके परिजनों को सौंप दिए गए हैं। अहमदाबाद में हुई इस दुर्घटना में 270 लोगों की मौत हो गई थी।

कर्नाटक के साथ सीमा विवाद सुलझाएगी महाराष्ट्र सरकार

मुंबई, एजेंसी। कर्नाटक के साथ चल रहे सीमा विवाद को सुलझाने के लिए महाराष्ट्र सरकार ने पहल की है। महाराष्ट्र सरकार ने इस मुद्दे को लेकर सीएम देवेंद्र फडणवीस की अध्यक्षता में दोबारा उच्चस्तरीय समिति का गठन किया है। यह समिति सीमा विवाद से जुड़े महत्वपूर्ण फैसले लेगी। महाराष्ट्र और कर्नाटक के बीच 1957 से सीमा विवाद चल रहा है। जब भाषाई आधार पर राज्यों का पुनर्गठन किया गया। महाराष्ट्र की मांग है कि कर्नाटक में शामिल बेलगावी को महाराष्ट्र का हिस्सा बनाया जाए।

देश में कोरोना मामलों में कमी, 5608 सक्रिय मामले

नई दिल्ली, एजेंसी। देश में पिछले कुछ दिनों से कोरोना संक्रमण के सक्रिय मामलों में कमी देखी गई है और शुक्रवार को कुल सक्रिय मामलों की संख्या घटकर 5608 रह गई। पिछले 24 घंटों के दौरान कोराना संक्रमित 1092 मरीजों के स्वस्थ होने के साथ इस बीमारी से निजात पाने वालों की संख्या 18256 तक पहुंच गई और इस अवधि में चार और मरीजों की मौत से मृतकों का आंकड़ा 120 पहुंच गया है। गौरतलब है कि 22 मई को देश में कोराना के सिर्फ 257 मामले सक्रिय थे। पिछले 24 घंटों के दौरान कोरोना संक्रमित चार और मरीजों की मौत होने से मृतकों का आंकड़ा 120 पहुंच गया।

ईरान-इजराइल जंग के आठवें दिन ईरानी मिसाइलों ने मचाया कहर

तेल अवीव से लेकर हाइफा तक धमाके

कई कारों में लगी आग व आस-पास के घरों को पहुंचा नुकसान

तेहरान/तेल अवीव, एजेंसी। ईरान और इजराइल के बीच जंग के आठवें दिन शुक्रवार सुबह ईरान ने इजराइल के बीर्शेबा शहर में माइक्रोसॉफ्ट ऑफिस के पास बैलिस्टिक मिसाइल से हमला किया। इससे कई कारों में आग लग गई। आस-पास के घरों को भी नुकसान पहुंचा।

ईरान ने गुरुवार को बीर्शेबा के एक अस्पताल पर मिसाइल दागी थी, जिसमें 50 से ज्यादा लोग घायल हो गए थे। न्यूयॉर्क टाइम्स की एक रिपोर्ट के मुताबिक अमेरिका का मानना है कि ईरान अब परमाणु हथियार बनाने की पूरी क्षमता रखता है। व्हाइट हाउस की प्रेस सचिव कैरोलिन लेविट ने कहा कि अगर ईरान के सर्वोच्च नेता अयातुल्ला अली खामेनेई आदेश दे दें, तो ईरान कुछ ही हफ्तों में परमाणु बम बना सकता है। लेविट ने कहा कि ईरान के पास परमाणु हथियार बनाने के लिए जरूरी हर चीज मौजूद है। अब बस उन्हें अपने नेता के हां कहने भर की देर है। उन्होंने यह भी कहा कि अगर ईरान ऐसा करता है, तो इससे सिर्फ इजराइल नहीं, बल्कि अमेरिका और पूरी दुनिया की सुरक्षा को खतरा होगा। इजराइल डिफेंस फोर्स ने कहा कि ताजा हमले में ईरान की ओर से करीब 25 बैलिस्टिक मिसाइलें दागी गई है। डॉक्टरों का कहना है कि हाइफा में एक मिसाइल हमले में कई लोग घायल हो गए है, जिनमें एक नाबालिग की हालत गंभीर है। दक्षिणी और मध्य इजराइल में भी मिसाइल हमले की खबरें हैं। वॉशिंगटन स्थित एक ह्यूमन राइट्स ग्रुप ने दावा किया है कि ईरान में मौत का आंकड़ा अब 657 हो चुका है और

ईरान में मौत का आंकड़ा 657 पहुंचा, इजराइल में 24 लोग मारे गए

2,037 लोग घायल हैं। वहीं, जंग में अब तक इजराइल के 24 लोग मारे गए हैं, जबकि 600 से ज्यादा लोग घायल हैं। वहीं ईरान के खोरासन रजवी इलाके में सुप्रीम लीडर अली खामनेई के प्रतिनिधि अहमद अलामोलहोदा ने शुक्रवार को कहा कि कमांडरों, परमाणु कार्यक्रम अधिकारियों की मौत या सामाजिक नुकसान से ईरानियों को घबराने की जरूरत नहीं है। उन्होंने शुक्रवार की नमाज़ के दौरान कहा कि दुश्मन मनोवैज्ञानिक और सैन्य हमलों से डर फैलाना चाहता है, लेकिन ईरानी जनता डटी हुई है। खामनेई की हालिया बंकर से दी गई अपील को दोहराते हुए उन्होंने कहा कि लोग अपना सामान्य जीवन जारी रखें और शहरों को खाली न करें, क्योंकि इससे दुश्मन अपने इरादे में कामयाब हो जाएंगे। ■ **शेष पृष्ठ 8 पर**

नाटो समिट में उठेगा ईरान का मुद्दा

जर्मन सरकार के प्रवक्ता ने शुक्रवार को कहा कि अगले सप्ताह होने वाले नाटो शिखर सम्मेलन में ईरान पर चर्चा होने की संभावना है। प्रवक्ता ने इजराइल-ईरान युद्ध में संभावित अमेरिकी सैन्य भागीदारी का जिक्र करते हुए कहा कि हम सहयोगियों की संभावित हमले की योजनाओं पर टिप्पणी नहीं करते हैं। बता दें, अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने गुरुवार को कहा था कि वह दो सप्ताह के भीतर तय करेंगे कि उनका देश इजराइली हमलों में शामिल होगा या नहीं।

ईरान ने भारत के लिए अपना एयरस्पेस खोला

इजराइल के साथ हफ्ते भर से जारी जंग के बीच ईरान ने भारत के लिए अपना एयरस्पेस खोल दिया है। ऑपरेशन सिंधु के तहत भारत सरकार अगले दो दिनों के दौरान 3 स्पेशल चार्टर्ड फ्लाइट्स से करीब 1 हजार भारतीय छात्रों का वहां से रेस्क्यू करेगी। छात्रों को लेकर एक फ्लाइट शुक्रवार रात और दो फ्लाइट्स शनिवार दोपहर तक भारत पहुंचेगी। इन फ्लाइट्स की व्यवस्था भारत सरकार ने की है। ये फ्लाइट्स ईरान के मशहद से उड़ान भरेंगी और दिल्ली में उतरेंगी। इससे पहले 110 भारतीय छात्र 19 जून को ईरान से भारत पहुंचे थे। हालांकि, इन्हें लैंड बॉर्डर के रास्ते ईरान से निकाला गया था। क्योंकि 13 जून को इजराइली हमले के बाद से ईरान का एयरस्पेस इंटरनेशनल फ्लाइट्स के लिए बंद था।

शाह के अंग्रेजी के ब्यान पर बोला हमला

अंग्रेजी भाषा शर्म नहीं शक्ति

नई दिल्ली, एजेंसी। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने कहा कि अंग्रेजी सशक्तीकरण करती है। यह शर्मनाक नहीं है और इसे हर बच्चे को सिखाया जाना चाहिए।

राहुल ने आरोप लगाया कि भाजपा-आरएसएस नहीं चाहते कि गरीब बच्चे यह भाषा सीखें, क्योंकि वे नहीं चाहते कि वे सवाल पूछें और समानता हासिल करें। राहुल का यह पोस्ट अमित शाह की उस टिप्पणी के बाद आया, जिसमें शाह ने कहा था कि इस देश में जो लोग अंग्रेजी बोलते हैं, उन्हें जल्द ही शर्म आएगी। कांग्रेस नेता ने कहा कि आज की दुनिया में, अंग्रेजी उतनी ही जरूरी■ **शेष पृष्ठ 8 पर**

भाषा विवाद में टीएमसी नेता भी कूदे

भाषा पर छिड़ी बहस के बीच, तृणमूल कांग्रेस के नेता डेरेक ओ ब्रायन ने शुक्रवार को कहा कि भारत में 22 संवैधानिक रूप से मान्यता प्राप्त भाषाएं और 19,500 भाषाएं और बोलियां हैं और यही हमारे देश की विविधता में एकता है। 97 प्रतिशत लोग मान्यता प्राप्त भाषाओं में से किसी एक को अपनी मातृभाषा के रूप में इस्तेमाल करते हैं। अमित शाह, पीएम नरेंद्र मोदी और उनका गिरोह इसे कभी नहीं समझ पाएगा। टीएमसी की राज्यसभा सदस्य सागरिका घोष ने भी लिखा, भारतीयों को किसी भी भाषा पर शर्म नहीं आनी चाहिए।

अहमदाबाद विमान हादसे के बाद 9 दिनों में 84 उड़ानें हुईं रद्द

एअर इंडिया ने रद्द की 9 उड़ानें

नई दिल्ली, एजेंसी। एअर इंडिया ने शुक्रवार को 9 उड़ानें रद्द कर दी हैं। इनमें चार अंतरराष्ट्रीय और पांच घरेलू हैं। एअर इंडिया ने बताया कि एयरपोर्ट पर मेंटेनेंस और ऑपरेशनल वजहों से इन उड़ानों को रद्द किया गया है। घरेलू उड़ानों में पुणे से दिल्ली जा रही फ्लाइट एआई 874, अहमदाबाद से दिल्ली की फ्लाइट एआई 456, हैदराबाद से मुंबई की फ्लाइट एआई 2872 और चेन्नई से मुंबई की फ्लाइट एआई 571 रद्द हुई हैं। वहीं, अंतरराष्ट्रीय उड़ानों में दुबई से चेन्नई आ रही फ्लाइट एआई 906, दिल्ली से मेलबर्न जा रही फ्लाइट एआई 308, मेलबर्न से दिल्ली आ रही फ्लाइट एआई 309 और दुबई से हैदराबाद आ रही फ्लाइट एआई 2204 शामिल हैं। वहीं, दिल्ली से पुणे जा रही फ्लाइट से पक्षी टकराया गया, जिसके चलते विमान की रिटर्न जर्नी कैंसिल कर दी गई। इस तरह अहमदाबाद प्लेन क्रैश के बाद 9 दिन में अलग-अलग वजह से अब तक 84 उड़ानें रद्द की गई हैं। 12 जून को हुए विमान हादसे में 270 लोगों की मौत ■ **शेष पृष्ठ 8 पर**

राज्य स्तरीय गौशाला सम्मेलन में बोले मुख्यमंत्री

मध्यप्रदेश को बनाएंगे देश की दुग्ध राजधानी

- पशुपालन विभाग का नाम अब गौपालन विभाग होगा
- गौशालाओं को 90 करोड़ रुपये की अनुदान राशि की अंतरित
- उत्कृष्ट गौशालाएं और गौ सेवियों को किया पुरस्कृत

भोपाल, देशबन्धु। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि मध्यप्रदेश को देश की डेयरी केपिटल बनाएंगे। पशुपालन एवं डेयरी विभाग का नाम पशुपालन, डेयरी और गौपालन विभाग होगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव शुक्रवार को मुख्यमंत्री निवास परिसर में राज्य स्तरीय गौशाला सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे। सम्मेलन में प्रदेश भर से आए गौ-पालकों और गौ-शाला संचालकों ने उत्साह से भागीदारी की। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने गौ-शालाओं को 90 करोड़ रुपए की अनुदान राशि अंतरित सिंगल क्लिक से की। इस अवसर पर भीमराव अंबेडकर कामधेनु योजना के तीन हितग्राहियों को प्रतीक स्वरूप ऋण स्वीकृति आदेश भी दिए गए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने घोषणा की कि पशुपालन विभाग का नाम बदल कर अब इसे पशुपालन के साथ गोपालन विभाग भी कहा जाएगा।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि मध्यप्रदेश को देश की दुग्ध राजधानी बनाना है, राज्य शासन द्वारा इसके लिए अनेक कदम उठाए जा रहे हैं। मध्यप्रदेश नदियों का मायका है। पूरा प्रदेश वनों से आच्छादित है। वर्ष 2002-03 तक पशुपालन विभाग का बजट सिर्फ 300 करोड़ था, जो बढ़कर अब 2600 करोड़ हो गया है। किसी समय प्रदेश में फैट मात्रा के अनुसार दूध खरीदने की व्यवस्था लागू की गई थी। राज्य सरकार ने अमृत समान गौ-माता का दूध खरीदने का निर्णय लिया है, ताकि गौ-पालकों तक लाभ पहुंचे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि गाय का दूध सम्पूर्ण आहार है। राज्य में हाईटेक गौशालाएं संचालित हो रही हैं। सरकार ने गौशाला संचालन के लिए अनुदान राशि 20 रुपए से बढ़कर 40 रुपए प्रति गाय प्रतिदिन की गई है। राज्य सरकार ने राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड से अनुबंध किया है। प्रदेश का दूध उत्पादन पांच गुना करने का लक्ष्य है। वर्तमान■ **शेष पृष्ठ 8 पर**

जिनके घर गाय वो गोपाल

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि जिनके घर गाय है, वे गोपाल है। मुख्यमंत्री निवास आज गौपालकों का निवास हो गया है। जहां गौमाता है, वहीं स्वर्ग है। हमें जन्म भले माता ने दिया है, पहली रोटी का अधिकार गौ-माता का ही है। सनातन संस्कृति में गौमाता का अहम स्थान है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन में मध्यप्रदेश गौ-पालन से संपन्न बन रहा है। भारत की आत्मा गांवों में बसती है। सरदार वल्लभ भाई पटेल ने वास्तव में गुजरात में अमूल संस्थान की स्थापना करवाई, हम प्राय: अमूल की प्रगति का श्रेय अन्य लोगों को दे देते हैं। गौ-पालन ऐसा माध्यम है, जो आय प्रदान करता है।

सेवानिवृत्त रेलवे कर्मचारी के घर सीबीआई का छापा

भोपाल, देशबन्धु। केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) की टीम ने गुरुवार देर रात भोपाल में छापामार कार्रवाई की। सीबीआई की टीम ने सेवानिवृत्त रेलवे कर्मचारी के घर दबिश दी। सेवानिवृत्त रेलकर्मी पर आय से अधिक संपत्ति रखने का आरोप है।

जानकारी के मुताबिक निशातपुरा कालोनी स्थित रेलवे के शासकीय आवास में रहने वाले रिटायर्ड कर्मचारी अशोक शर्मा के आवास पर देर रात सीबीआई की टीम दबिश देने पहुंची। गुरुवार देर रात तक सीबीआई टीम की कार्रवाई चलती रही। शर्मा पिछले साल ही रेलवे विभाग से चीफ लोको पायलट के पद से रिटायर हुए है। अशोक वर्तमान में वेस्ट सेंट्रल रेलवे यूनियन में महामंत्री के पद पर कार्यरत है। फिलहाल सीबीआई ने इस बात का खुलासा नहीं किया है कि उनके पास से कितनी अवैध संपत्ति बरामद हुई है। सीबीआई के सूत्रों का कहना है कि जांच के बाद ही इस पूरे मामले का खुलासा हो सकेगा।

स्विस नेशनल बैंक के आंकड़ों में हुआ खुलासा

स्विस बैंकों में भारतीयों के 37 हजार करोड़ से ज्यादा जमा

नई दिल्ली/ज्यूरिख, एजेंसी। स्विस बैंकों में भारतीयों का जमा पैसा 2023 के मुकाबले 2024 में तीन गुना बढ़कर 3.5 अरब स्विस फ्रैंक हो गया है। भारतीय रुपए में यह रकम करीब 37,600 करोड़ रुपए होती है। स्विस नेशनल बैंक ने यह आंकड़े जारी किए। हालांकि, भारतीयों के ग्राहक खातों में जमा धन केवल 11 प्रतिशत बढ़ा और यह 34.6 करोड़ स्विस फ्रैंक (लगभग 3,675 करोड़ रुपए) रहा। यह कुल धन का लगभग दसवां हिस्सा है।

11 प्रतिशत बढ़ा ग्राहक खातों में जमा धन

इससे पहले, 2023 में भारत के लोगों और कंपनियों की ओर से स्विस बैंकों में जमा धन में 70 प्रतिशत की गिरावट की आई थी और यह चार साल के निचले स्तर 1.04 अरब स्विस फ्रैंक पर आ गया था। इसमें स्थानीय शाखाओं और अन्य वित्तीय संस्थानों के माध्यम से रखी जमा राशि शामिल है। एसएनबी ने 2023 के अंत में स्विस बैंकों की कुल देनदारियों या उनके भारतीय ग्राहकों की बकाया राशि के रूप में कुल राशि 354.55 करोड़ स्विस फ्रैंक आंकी है। इसमें ग्राहक जमा में 34.6 करोड़ स्विस फ्रैंक (2023 के अंत में 31 करोड़ स्विस फ्रैंक से अधिक), अन्य बैंकों के माध्यम से रखे गए 3.02 अरब स्विस फ्रैंक (42.7 करोड़ स्विस फ्रैंक से अधिक), न्यासों (ट्रस्टों) के माध्यम से 4.1 करोड़ स्विस फ्रैंक (1 करोड़ स्विस फ्रैंक से अधिक) तथा बॉन्ड, प्रतिभूतियों (सिक्योरिटीज) और अन्य वित्तीय उत्पादों के रूप में 13.5 करोड स्विस फ्रैंक की राशि शामिल हैं। स्विस बैंकों में विदेशी ग्राहकों की रखी राशि के मामले में ब्रिटेन 222 अरब स्विस फ्रैंक के साथ शीर्ष पर है। उसके बाद दूसरे स्थान पर अमेरिका (89 अरब स्विस फ्रैंक) और तीसरे स्थान पर वेस्टइंडीज (68 अरब स्विस फ्रैंक) है। इन तीनों के बाद शीर्ष 10 में जर्मनी, फ्रांस, हॉन्ग कॉन्ग, लक्जमबर्ग, सिंगापुर, ग्वेर्नसे और संयुक्त अरब अमीरात हैं। भारत इस मामले मं 48वें स्थान पर है जबकि 2023 में 67 वें स्थान पर था।

2021 में टूटा था 14 साल का रिकॉर्ड

बीते वर्ष की जमा राशि 2021 के बाद से सबसे अधिक है। उस समय स्विस बैंकों में भारतीयों की जमा राशि 14 साल के उच्चतम स्तर 3.83 अरब स्विस फ्रैंक पहुंच गई थी। यह स्विस नैशनल बैंक (एसएनबी) को बैंकों से मिले आधिकारिक आंकड़े हैं। इसे स्विट्जरलैंड में रखे गए भारतीयों का काला धन नहीं माना जाना चाहिए। इन आंकड़ों में वह राशि भी शामिल नहीं है जो भारतीयों, एनआरआई या अन्य लोगों ने तीसरे देश की संस्थाओं के नाम पर स्विस बैंकों में रखी हो सकती है। हालांकि, यह 2022 के अंत में 46 वें स्थान से नीचे है। पाकिस्तान के निवासियों की जमा राशि भी घटी है और यह 28.6 करोड़ से घटकर 27.2 करोड़ स्विस फ्रैंक पर रही। वहीं बांग्लादेश के मामले में यह 1.8 करोड़ स्विस फ्रैंक से बढ़कर 58.9 करोड़ स्विस फ्रैंक हो गई।

2024 के लोकसभा चुनावी खर्च को लेकर एडीआर की रिपोर्ट में खुलासा

भाजपा ने किए 1,494 करोड़ रुपए खर्च

कांग्रेस ने 620 करोड़ रुपए खर्च किए

नई दिल्ली, एजेंसी। चुनाव अधिकार के निकाय एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स (एडीआर) ने शुक्रवार को कहा कि 2024 के लोकसभा चुनाव के दौरान भाजपा ने लगभग 1,494 करोड़ रुपए खर्च किए, जो कुल चुनावी व्यय का 44.56 प्रतिशत है। इसके बाद कांग्रेस का स्थान है जिसने 620 करोड़ रुपए या कुल व्यय का 18.5 प्रतिशत खर्च किया। एडीआर ने कहा कि उसने 32 राष्ट्रीय और क्षेत्रीय दलों के रिकार्ड का विश्लेषण किया। इन पार्टियों ने 16 मार्च से छह जून, 2024 के बीच लोकसभा चुनावों के साथ-साथ हुए आंध्र प्रदेश, अरुणाचल प्रदेश, ओडिशा और सिक्किम विधानसभा चुनावों के दौरान कुल 3,352.81 करोड़ रुपये खर्च किए। इस खर्च में राष्ट्रीय दलों का योगदान 2,204 करोड़ रुपये (65.75 प्रतिशत) से अधिक रहा। रिपोर्ट के अनुसार, एकत्रित कुल धन में से राष्ट्रीय दलों को 6,930.246 करोड़ रुपए (93.08 प्रतिशत) और क्षेत्रीय दलों को 515.32 करोड़ रुपए (6.92 प्रतिशत) प्राप्त हुए। यह विश्लेषण अनिवार्य व्यय विवरण पर आधारित है, जिसे राजनीतिक दलों को आम चुनाव के 90 दिनों के भीतर और राज्य चुनाव के 75 दिनों के भीतर चुनाव आयोग के पास दाखिल करना होता है। पार्टियों ने वर्चुअल कैंपेन पर 132 करोड़ रुपए और अपने उम्मीदवारों के आपराधिक इतिहास को प्रकाशित करने पर 28 करोड़ रुपए खर्च किए। प्रचार पर 32 राजनीतिक दलों के कुल खर्च में से 1,511.30 करोड़ रुपए या 75.25 प्रतिशत राष्ट्रीय दलों ने और 496.99 करोड़ रुपए या 24.75 प्रतिशत क्षेत्रीय दलों ने खर्च किए। यात्रा व्यय भी स्टार प्रचारकों पर काफी हुआ था। यात्रा पर खर्च किए गए 795 करोड़ रुपए में से 765 करोड़ रुपए (96.22 प्रतिशत) पार्टी के हाई-प्रोफाइल चेहरों को लाने-ले जाने में खर्च किए गए, जबकि अन्य नेताओं पर सिर्फ 30 करोड़ रुपये खर्च किए गए।

चुनावी खर्च की सूची में प्रचार रहा सबसे ऊपर

चुनावी खर्च की सूची में प्रचार सबसे ऊपर रहा। इस मद में पार्टियों ने 2,008 करोड़ रुपये खर्च किए, जो उनके कुल घोषित व्यय का 53 प्रतिशत से अधिक है। यात्रा व्यय 795 करोड़ रुपए के साथ दूसरे स्थान पर रहा। इसके बाद उम्मीदवारों को एकमुश्त भुगतान 402 करोड़ रुपए का स्थान रहा।

मुस्कान संस्था इटारसी के बच्चों ने किए बाबा महाकाल के दर्शन

इटारसी, देशबन्धु। मुस्कान संस्था इटारसी के बच्चों ने 19 जून को दो दिवसीय यात्रा पर उज्जैन पहुंचकर महाकाल बाबा के दर्शन किए। यह यात्रा बच्चों के लिए एक यादगार अनुभव रही, जिससे उनमें खासा उत्साह देखने को मिला। बच्चों ने अपनी इस यात्रा के दौरान उदासीन आश्रम में एक दिन का विश्राम किया, जहां उनके भोजन की भी व्यवस्था की गई थी। एसडीएम प्रतीक राव ने बच्चों के लिए विशेष दर्शन की व्यवस्था कलेक्टर उज्जैन के माध्यम से करवाई, जिससे उन्हें सुगमतापूर्वक दर्शन का अवसर मिला। महाकाल बाबा के दर्शन के बाद बच्चों ने अपनी खुशी व्यक्त करते हुए कहा कि यह उनके लिए एक अविस्मरणीय पल था।

अटल पार्क में मनेगा योग दिवस, योग करने नगर को आमंत्रण

11 वे अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर विधायक नगर पालिका को भेंट करेंगे 11 पौधे

सुबह 8 से 9 बजे तक अटल पार्क में योगासन, बारिश भी नहीं कर सकेगी परेशान, नगर पालिका परिषद के अध्यक्ष पंकज चौरे ने नागरिकों को किया पार्क में आमंत्रित

इटारसी, देशबन्धु। नगर पालिका परिषद के तत्वावधान में अटल पार्क में 11 वॉ अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया जाएगा। नगर पालिका अध्यक्ष पंकज चौरे ने नगर के लोगों को योग दिवस पर अटल पार्क में आमंत्रित किया है। उन्होंने आह्वान किया है कि योग स्वस्थ्य रहने के लिए एक जीवन चर्या है, इसमें सभी को शामिल होना चाहिए। हम नागरिकों को आमंत्रित करते हैं कि वे आएं, बुलावे का इंतजार किये बिना। योग करेंगे, निरोग रहेंगे। एक कुशल योग गुरु के सानिध्य में सीखें और इसे अपनी जीवनचर्या का हिस्सा बनायें। नपाध्यक्ष चौरे ने बताया कि अटल पार्क में सुबह 8 से 9 बजे तक योग दिवस का आयोजन होगा। पूर्व विधानसभा अध्यक्ष एवं विधायक डॉ.सीतासरन शर्मा योग दिवस के मुख्य अतिथि रहेंगे। वे नगर पालिका को 11 वे योग दिवस पर स्वच्छ पर्यावरण के लिए 11 पौधे भेंट करेंगे, इन पौधों को अटल पार्क सहित अन्य जगहों पर रोपा जाएगा। श्री चौरे ने कहा कि योग दिवस के लिए अटल पार्क में आयोजन की व्यवस्था की है, यदि मौसम बारिश का हुआ तो इसके लिए ऑडिटोरियम में व्यवस्था की गई है।

शनिवार दोपहर में तीन घंटे नहीं मिलेगी इटारसी शहर को बिजली

इटारसी, देशबन्धु। 21 जून को संपूर्ण इटारसी शहर में दोपहर में तीन घंटे बिजली सप्लाई बंद रहेगी। दोपहर 2 से शाम 5 बजे तक प्री मानसून मेंटेनेंस के कारण बिजली कंपनी सप्लाई बंद रखेगी। मध्यप्रदेश मध्यक्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी से मिली जानकारी के अनुसार 21 जून 2025 दिन शनिवार को 33 केवी इटारसी-2 एवं इटारसी 1 से निर्गमित सभी उपकेंद्रों की विद्युत सप्लाई दोपहर 2 से शाम 5 तक प्री मानसून मेंटेनेंस होने के कारण बंद रहेंगे। इस दौरान संपूर्ण इटारसी शहर में कहीं भी बिजली नहीं मिलेगी। कंपनी सूत्रों के अनुसार कार्य के दौरान समय को घटाया बढ़ाया भी जा सकता है।

साल 2025 का सबसे लंबा दिन कल 21 जून को रहेगा

सारिका घारू ने समझाये घटनाक्रम के असल कारण

मप्र के 14 जिलों के नगरों में कर्क रेखा पर गायब होगी छाया

समर सोलिस्टस की खगोलीय घटना 21 जून को

इटारसी, देशबन्धु। मध्यप्रदेश के रतलाम, उज्जैन, आगरमालवा, सीहोर, भोपाल, राजगढ़, विदिशा, रायसेन, सागर, दमोह, कटनी, जबलपुर, उमरिया और शहडोल में कर्क रेखा पर स्थित स्थानों पर कल मध्यान्ह लोग अपनी छाया गायब होते देखेंगे। 21 जून योग दिवस पर सूर्य का कर्क रेखा के साथ मानसूनी योग बन रहा है। 21 जून को सूर्य अपनी उत्तर यात्रा के अंतिम पड़ाव कर्क रेखा पर पहुंचने जा रहा है। सुबह सबेरे जब आप योग दिवस पर योग कर चुके होंगे तब प्रात: 8 बजकर 12 मिनट पर सूर्य ठीक कर्क रेखा के ऊपर होगा। नेशनल अवार्ड प्राप्त विज्ञान प्रसारक सारिका घारू ने बताया कि इस खगोलीय घटना को समर सोल्स्टिस कहा जाता है। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर 21 जून को सूर्य का कर्क रेखा के साथ योग होगा। मध्यप्रदेश में मानसून के आ जाने से इसे मानसूनी योग कह सकते हैं। सारिका ने जानकारी दी कि कर्क रेखा पृथ्वी के 16 देशों, भारत के 8 राज्यों तथा मध्यप्रदेश के 14 जिलों से होकर निकलती है। 21 जून को सूर्य, कर्क रेखा पर स्थित नगरों में वहां के निवासियों के ठीक सिर के ऊपर होगा इस कारण यहां जीरो शैडो डे की स्थिति होगी। उन स्थानों पर दोपहर में बादल न होने की स्थिति में किसी भी खंबे या टॉवर की छाया उसके आधार के नीचे बनेगी। इससे छाया कुछ पल के लिये दिखाई नहीं देगी। सारिका ने बताया कि इस खगोलीय घटना के कारण पृथ्वी के उत्तरी गोलार्द्ध के नगरों में दिन सबसे लंबा और रात सबसे छोटी अवधि की होगी। कल आपके शहर में भी दिन की अवधि साल की सबसे अधिक होगी। हालांकि मानसून आ जाने से सूर्य दर्शन कुछ शहरों में ठीक से नहीं हो पायेगा। सूर्य कर्क रेखा पर पहुंचकर यह अपनी वापसी दक्षिणयात्रा आरंभ करेगा जिसे दक्षिणायन होना कहा जाता है। तो तैयार हो जाईये सबसे लंबे अवधि के दिन में कुछ अच्छा करने के लिये। कर्क रेखा पर स्थित भारत के राज्य गुजरात, राजस्थान, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड, पश्चिमी बंगाल, त्रिपुरा और मिजोरम। कर्क रेखा पर स्थित मध्यप्रदेश के जिले रतलाम, उज्जैन, आगरमालवा, सीहोर, भोपाल, राजगढ़, विदिशा, रायसेन, सागर, दमोह, कटनी, जबलपुर, उमरिया और शहडोल 21 जून को दिन की अवधि 13 घंटे 30 मिनट और कुछ जगह यह बढ़ सकती है।

82 वर्ष के बुजुर्ग रेवाशंकर ने अपनी भूमि से कब्जा हटने पर जतायी खुशी

दस साल से अधिक की कानूनी लड़ाई के बाद मिला न्याय

न्यायालय के आदेश पर करीब तीन दर्जन लोगों के कब्जे बुजुर्ग की भूमि से हटाए

इटारसी, देशबन्धु। समीपस्थ ग्राम मेहरागांव के निवासी 82 वर्षीय एक बुजुर्ग को करीब दस वर्ष से अधिक की कानूनी लड़ाई के बाद आखिरकार न्याय मिला और उसकी खुशी का ठिकाना न रहा। दरअसल, बुजुर्ग की भूमि पर करीब तीन दर्जन लोगों ने थोड़ा-थोड़ा कब्जा करके रखा था। कोर्ट के आदेश के बाद अतिक्रमण हटाकर बुजुर्ग को उसकी भूमि वापस दिलायी गयी।

अतिक्रमण हटाने नाला मोहल्ला के वार्ड 25 में पहुंची प्रशासनिक टीम को पहले तो महिलाओं और बच्चों के विरोध का सामना करना पड़ा, महिलाएं और बच्चे जेसीबी मशीन के आगे खड़ी हो गये। पुलिस ने उन्हें हटाने के लिए सख्ती दिखाने की कोशिश की तो विरोध और तेज होने लगा। लेकिन, विरोध के बावजूद आखिरकार प्रशासन ने बुजुर्ग को कब्जा दिलाया। यह कार्रवाई प्रथम सिविल जज सीनियर डिवीजन सूर्यपाल सिंह राठौर के आदेश पर की गई। गौरतलब है कि मेहरागांव निवासी रेवा शंकर बड़कुर की जमीन पर 35 लोगों ने कुछ-कुछ हिस्से में कब्जे करके मकान आगे बढ़ा लिए थे। यह मामला 2014-15 से इटारसी कोर्ट में चल रहा था। कोर्ट ने हाल ही में अवैध कब्जेदारों को खिलाफ कार्रवाई करने के आदेश दिए थे। इसे लेकर आरआई, पटवारी और पुलिस बल नगर पालिका की जेसीबी मशीन लेकर मौके पर पहुंचे। अतिक्रमणकारियों का कहना था कि उन्हें नोटिस नहीं मिला। लेकिन न्यायालय की ओर से मौजूद मचकुली वीरेश मेहरा ने बताया कि सभी को पहले ही नोटिस दिया जा चुका था, यह कार्रवाई वारंट के तहत की गई।

सामान हटाने का सामान मांगा

इधर, ग्रामीण शहनाज बी, रानी मेहरा और आरती साहू ने घर का सामान हटाने के लिए दो दिन का समय मांगा। पार्षद सुभम गौरे ने भी मौके पर पहुंचकर कार्रवाई रोकने की मांग की। लेकिन, न्यायालय के आदेश पर हो रही कार्रवाई को रोका नहीं गया। टीम ने दिनेश, गुलाबराव, चंगू, सुधा, सालिगराम, रामसिंह, मोतीराम, जया, रमेश, गुलाब, ओमप्रकाश, भोला, कैलाश, सीताबाई, गोकुलप्रसाद, कदीरखा, संध्या, सुंदरलाल, कमल, रसीद शाह, गनेशीबाई, किशोरी और शंकर उइके द्वारा किये कब्जे को हटाया।

फुटबॉल : नीमच और इटारसी ने बड़े अंतर से जीते अपने मैच

इटारसी, देशबन्धु। जूनियर बालक अंतर जिला फुटबॉल प्रतियोगिता के तीसरे दिन दो मैच खेले गए। पहला मैच डीएफए मुरैना एवं डीएफए नीमच के मध्य खेला गया जिसमें डीएफए नीमच ने डीएफए मुरैना टीम पर 12 गोल मारकर बड़ी जीत हासिल की। जिला फुटबाल संघ नर्मदापुरम के सचिव दीपक परदेशी ने बताया कि प्रथम मैच में खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त करने के लिए वरिष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता संजीव दीपू अग्रवाल, नगर पालिका के सभापति पार्षद राकेश जाधव, पूर्व पार्षद हरप्रीत सिंह छाबड़ा, सभापति मनजीत कलसिया के साथ विष्णु कांत पांडे डैनी उपस्थित थे। प्रतियोगिता का द्वितीय मैच डीएफए नर्मदापुरम एवं डीएफए धार के मध्य खेला जिसमें नर्मदापुरम की टीम ने लगातार शानदार खेल का प्रदर्शन करते हुए 10 गोल मारकर बहुत ही शानदार जीत हासिल की।

दूसरे मैच के अतिथि फाइटर फुटबॉल क्लब के कोषाध्यक्ष अध्यक्ष गोलू मालवीय, भागवत सिंह राजपूत, आशीष डेविड, दीपू पुरोहित, तौसीफ खान, प्रदीप प्रजापति, अरविंद ठाकुर, भूषण कनौजिया, रुद्राक्ष परदेसी आदि उपस्थित थे। कल 21 जून 2025 को दो मैच खेले जाना है, प्रथम मैच 1:30 बजे से प्रारंभ होगा।

विराजित होंगे 11 फीट के श्री गणेश भगवान

बैतूल, देशबन्धु। द्वारका नगर बडोरा में गणेश चतुर्थी पर इस वर्ष भी बड़े ही धूमधाम से श्री गणेश उत्सव मनाया जाएगा। श्री गणेश युवा उत्सव समिति द्वारका नगर बडोरा द्वारा यह आयोजन लगातार दूसरे वर्ष किया जा रहा है। इस बार भी यहां 11 फीट ऊंचे विशाल गणपति बप्पा की स्थापना की जाएगी। आयोजन की तैयारी अभी से शुरू कर दी गई है और मूर्ति निर्माण का कार्य शुरू हो गया है। बैतूल के जाने-माने मूर्तिकार सुनील प्रजापति गणपति बप्पा की विशाल प्रतिमा को स्वरूप दे रहे हैं। वे इस वर्ष विशेष रूप से 11 फीट ऊंची मूर्ति तैयार कर रहे हैं जो अपने भव्य स्वरूप और आकर्षक रंग संयोजन के लिए चर्चित है। द्वारका नगर बडोरा में गणेश चतुर्थी का यह आयोजन पूरे क्षेत्र में विशेष आकर्षण का केंद्र रहता है।

संदर्भ इटारसी पुस्तक विमोचन समारोह द पार्क रिसॉर्ट परिसर में आज

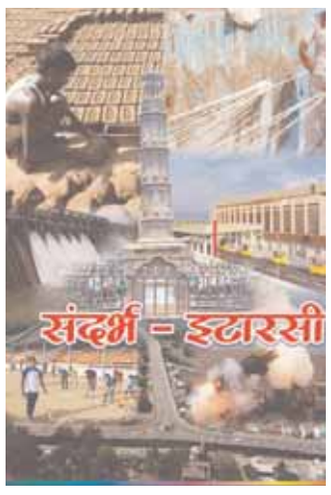

इटारसी, देशबन्धु। इटारसी नगर के इतिहास, कला, खेलकूद, संस्कृति, धार्मिक जानकारी सहित ऐसे विभिन्न व्यक्तियों का जीवन परिचय जो इस शहर में पैदा हुए एवं जिन्होंने प्रदेश एवं देश में इटारसी का नाम रोशन किया है। जिसमें शिक्षा, समाज सेवा, खेल, राजनीति क्षेत्र के व्यक्ति पुस्तक में शामिल है। विमोचन कार्यक्रम द पार्क रिसोर्ट इटारसी नर्मदापुरम रोड पर होगा। 21 जून की सायंकाल 4 बजे प्रारंभ होगा।

विमोचन समारोह के अवसर पर कुछ विशिष्ट व्यक्तियों का सम्मान किया जाएगा। जिनमें फिल्म क्षेत्र से जुड़े राहुल चेलानी, अंतरराष्ट्रीय हास्य कवि राजेंद्र मालवीय, प्रशासनिक सेवा से संयुक्त कलेक्टर कुमारी निकिता तिवारी, फिल्म प्रोड्यूसर मुंबई से भोलाराम मालवीय, स्टेट न्यूज ब्यूरो चीफ संदीप भम्मरकर, वरिष्ठ पत्रकार पंकज पटेरिया, खेल क्षेत्र से सॉफ्टबॉल के अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी एवं कोच आलोक चौधरी, प्रशासनिक सेवा के लिए चयनित मोनू शर्मा, प्रसिद्ध वैद्य रामआश्रय वाजपेई, समाजसेवी एवं मुस्कान बालिका गृह के संचालक मनीष सिंह ठाकुर, समाजसेवी जितेंद्र ओझा शामिल हैं। विमोचन समारोह में अतिथि के रूप में मध्य प्रदेश विधानसभा के पूर्व अध्यक्ष एवं विधायक डॉ. सीतासरन शर्मा, सांसद नर्मदापुरम दर्शन सिंह चौधरी, राज्यसभा सांसद श्रीमती माया नारोलिया, जिला भाजपा अध्यक्ष श्रीमती प्रीति शुक्ला, अध्यक्ष नगर पालिका परिषद इटारसी पंकज चौरे, मंडल अध्यक्ष भाजपा इटारसी राहुल चौरे, वरिष्ठ उद्योगपति कैलाश शर्मा, वरिष्ठ उद्योगपति हेमंत शुक्ला एवं वरिष्ठ व्यवसायी प्रमोद अग्रवाल की गरिमामई उपस्थिति में होगा। संचालन भूपेंद्र विश्वकर्मा करेंगे। पुस्तक आयोजन स्थल पर स्टाल से ही प्राप्त की जा सकती है।

हर शुक्रवार बनखेड़ी की सड़कें बनती हैं जाम का कारण, प्रशासन बना मूक दर्शक

बनखेड़ी, देशबन्धु। बनखेड़ी में हर शुक्रवार को लगने वाला साप्ताहिक हाट बाजार आम जनता के लिए सहूलियत की जगह अब मुसीबत का रूप ले चुका है। नगर परिषद की अनदेखी और पुलिस की निष्क्रियता के चलते नगर के मस्जिद चौराहे पर हर दस-बीस मिनट में जाम की स्थिति बन जाती है। इससे राहगीरों, वाहन चालकों और स्कूली बच्चों को भारी परेशानी का सामनं करना पड़ रहा है। स्थानीय लोगों का कहना है कि प्रशासन को यह भलीभांति ज्ञात है कि शुक्रवार को बाजार में भारी भीड़ होती है, फिर भी न तो यातायात नियंत्रण के लिए कोई पुलिसकर्मी तैनात किया जाता है और न ही नगर परिषद की ओर से दुकानों की कोई समुचित व्यवस्था की जाती है।

अव्यवस्था के मुख्य कारण:- मुख्य चौराहे पर दुकानदारों का अतिक्रमण, बेतरतीब वाहन पार्किंग, ट्रकों व बसों की अनियंत्रित आवाजाही।

इन सबका नतीजा यह होता है कि एक छोटा-सा चौराहा पूरे नगर की ट्रैफिक व्यवस्था को अस्त-व्यस्त कर देता है।

नागरिकों की मांग

नगरवासियों का कहना है कि यदि प्रशासन हर शुक्रवार को मस्जिद चौराहे पर एक पुलिसकर्मी या नगर परिषद का जिम्मेदार कर्मचारी तैनात कर दे, तो व्यवस्था में काफी सुधार आ सकता है लोगों का कहना है कि न तो नगर परिषद दुकानों की व्यवस्था करती है, न ही पुलिस यातायात नियंत्रण करती है। चौराहे पर दुकानदारों का अतिक्रमण, बेतरतीब पार्किंग और ट्रकों की आवाजाही इस समस्या को और बढ़ा देते हैं।

बच्चे को अपमानित करने के बजाए उसके दृष्टिकोण को समझें

बैतूल, देशबन्धु। रिपोर्टिंग करते समय अथवा खबर बनाने के दौरान पत्रकारों और मीडिया को अपराध पीड़ित बच्चों की आवाज को प्राथमिकता के साथ सुनना चाहिए। मीडिया का मिशन बच्चों के सर्वोत्तम हित को साकार करने के लिए होना चाहिए। उक्त उद्बोधन पीएमश्री जयवंती हाक्सर महाविद्यालय के विवेकानंद सभागृह में राष्ट्रीय जनसहयोग एवं महिला विकास मंत्रालय नई दिल्ली द्वारा आयोजित वात्सल मिशन के तहत बच्चों के खिलाफ अपराधों से संबंधित मुद्दों को उजागर करने में मीडिया की भूमिका, क्या करें और क्या ना करें?

भगवान झूलेलाल चालीहा व्रत महोत्सव 22 जुलाई से, 31 अगस्त को होगा समापन

इटारसी, देशबन्धु। इट सिंधी समाज के चालीहा व्रत महोत्सव 22 जुलाई से प्रारंभ होंगे और 40 दिन के कठिन उपासना के बाद 31 अगस्त को समापन होगा। इस दौरान बाहर के समाजी आकर भी इटारसी में व्रत करते हैं। समाज के वरिष्ठ सदस्य गोपाल सिद्धवानी ने बताया कि पूज्य पंचायत सिंधी समाज के तत्वावधान में झूलण सेवा समिति इटारसी द्वारा भगवान श्री झूलेलाल चालीहा व्रत महोत्सव 22 जुलाई मंगलवार से प्रारंभ होगा और 31 अगस्त रविवार को समापन होगा।

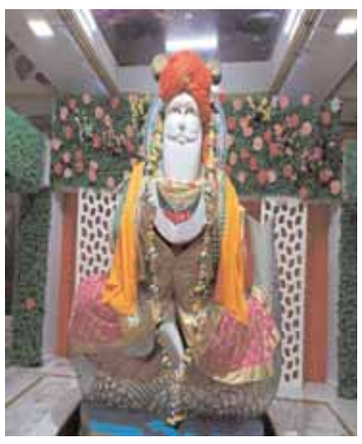

राज्य शिक्षा केन्द्र के निर्देश पर हुई विस्तृत चर्चा

उल्लास नवभारत साक्षरता कार्यशाला का शुभारंभ

संकुल सह समन्वयकों ने दी महत्वपूर्ण जानकारी

बैतूल, देशबन्धु। विकास खंड बैतूल में 20 जून को श्री विनायक स्कूल बैतूल में उल्लास नवभारत साक्षरता कार्यक्रम के तहत कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन डीपीसी जितेन्द्र कुमार भनारिया ने मां सरस्वती की प्रतिमा के सामने दीप प्रज्वलित कर किया। इस कार्यशाला में संकुल सह-समन्वयक, जनशिक्षक, नोडल अधिकारी प्रधान पाठक/शाला प्रभारी शामिल हुए। कार्यशाला में जिले से सहायक परियोजना समन्वयक राजेश तुरिया, जिला सह-समन्वयक कुशलेश धाड़से, बीआरसी बैतूल दुर्गेश रघुवंशी, विनायकम स्कूल के प्राचार्य श्याम साहू, बैतूल विकास खंड के बीएसी नवीन वरवड़े, हेमराज पाटिल और संकुल सह-समन्वयक सेहरा दीपांशु साहू, ओमप्रकाश लिलोरे, संकुल सह समन्वयक जीवन पवार, जितेंद्र मनोहरे, शिव कुमार धुर्वे, भोजराज गायकवाड, राजेश महाते, बृजेश राठौर, नेमीचंद मालवीय, श्रीमती निलिमा शर्मा, पंकज खंडाईत, श्रीमती लक्ष्मी हनोतिया शामिल थे। कार्यशाला बैतूल बीआरसी दुर्गेश रघुवंशी की अध्यक्षता में संचालित की गई। श्रीमती नीलिमा शर्मा विकासखंड सह समन्वयक उल्लास नवभारत साक्षरता कार्यक्रम बैतूल के सानिध्य में तथा कार्यशाला का संचालन नेमीचंद मालवीय द्वारा सफलता पूर्वक किया गया ।

जबलपुर जोन में ओल्ड पेंशन पाने के लिए संघर्ष सप्ताह हस्ताक्षर अभियान का आयोजन किया

भोपाल में डीआरएम दफ्तर का घेराव, इटारसी से पहुंचे रेलकर्मी

इटारसी, देशबन्धु। ओल्ड पेंशन स्कीम को लागू करने की मांग को लेकर रेल कर्मी आंदोलन कर रहे हैं। पश्चिम मध्य रेलवे मजदूर संघ के बैनर तले आज इस मांग को लेकर रेलकर्मियों ने भोपाल में डीआरएम कार्यालय का घेराव किया। इटारसी से इस आंदोलन में बड़ी संख्या में मजदूर संघ के सदस्य रेलकर्मी पहुंचे थे। मुख्य शाखा के अध्यक्ष प्रीतम तिवारी ने बताया कि संघ के महामंत्री अशोक शर्मा एवं मंडल अध्यक्ष राजेश पांडे के मार्गदर्शन एवं बीएल मिश्रा, कमलेश परिहार, नितिन परमार, संजय कटारे, रोमेश चौबे के नेतृत्व में आज भोपाल मंडल रेल कार्यालय का घेराव करने सैकड़ो की संख्या में युवा पहुंचे और ओल्ड पेंशन स्कीम पाने के लिए अपनी मांगे एवं धरना प्रदर्शन किया। इटारसी से भागीरथ मीणा, संजय कैचे के नेतृत्व में सभी मुख्यालय कार्यकारिणी सदस्य, शाखा के अध्यक्ष, सचिव एवं युवा सैकड़ो की संख्या में भोपाल पहुंचे। उल्लेखनीय है कि

16 से 21 जून तक महामंत्री अशोक शर्मा के मार्गदर्शन में जबलपुर जोन में ओल्ड पेंशन पाने के लिए संघर्ष सप्ताह हस्ताक्षर अभियान का आयोजन किया है। हर छोटे-छोटे डिपो में गेट मीटिंग एवं सभाएं की जा रही थीं, आज समापन मंडल कार्यालय में किया। मंडल अध्यक्ष राजेश पांडे ने अपने उद्बोधन में कहा कि यह अधिकारी एनपीएस और यूपीएस थोप रहे हैं, खुद नहीं लेना चाहते हैं और रेलवे कर्मचारियों को लेने के लिए मजबूर कर रहे हैं। विधायक एवं सांसद एक दिन के लिए बन जाते हैं तो ओल्ड पेंशन पाते हैं, वो एनपीएस और यूपीएस क्यों नहीं लेते हैं? प्रीतम तिवारी ने कहा कि मुख्य शाखा के सैकड़ों युवा कार्यकर्ता अपनी छुट्टी लेकर भोपाल मंडल गए थे एवं अपनी मांगें प्रशासन के सामने रखीं। इटारसी के सभी युवाओं में जोश है, जिस दिन ओल्ड पेंशन स्कीम पाने के लिए ट्रेन रोकने के लिए या अन्य किसी भी कार्यक्रम के लिए जरूरत पड़ेगी तो सैकड़ों की संख्या में लोग रोड पर आएंगे।

सितंबर तक चलती रहेगी रीवा से सीएसएमटी के मध्य स्पेशल ट्रेन

इटारसी, देशबन्धु। यात्रियों की मांग के उद्देश्य एवं सुविधा को ध्यान में रखते हुए रेल प्रशासन ने रीवा-छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस-रीवा के बीच साप्ताहिक सुपरफास्ट स्पेशल ट्रेन 13-13 फेरे विस्तार करने का निर्णय लिया गया है।

यह स्पेशल ट्रेन पश्चिम मध्य रेल के रीवा से प्रारम्भ होकर सतना, मैहर, कटनी, जबलपुर, नरसिंहपुर, गाडरवारा, पिपरिया, इटारसी एवं हरदा स्टेशनों से होकर गंतव्य को जाती है। ट्रेन संख्या 02187 रीवा-सीएसएमटी साप्ताहिक (गुरुवार) स्पेशल ट्रेन, जो 26 जून 2025 तक अधिसूचित थी, अब 03 जुलाई 2025 से 25 सितंबर 2025 तक और चलती रहेगी। (13 सेवाएं) ट्रेन संख्या 02188 सीएसएमटी-रीवा साप्ताहिक (शुक्रवार) स्पेशल ट्रेन, जो 27 जून 2025 तक अधिसूचित थी, अब 04 जुलाई 2025 से 26 सितंबर 2025 तक और चलती रहेगी। (13 सेवाएं)। रेलयात्री किसी भी कंप्यूटरीकृत आरक्षण केन्द्र या ऑनलाइन आईआरसीटीसी वेबसाइट से 21 जून 2025 से इस विस्तारित स्पेशल ट्रेन के आरक्षण सुविधा का लाभ उठा सकते हैं।

नर्मदा नियरे

सार-समाचार

विधायक डॉ. दोगने ने किया फायर फाईटर पानी टैंकर का वितरण

हरदा , देशबन्धु। ग्रामीण क्षेत्रों मे पेय जल की समस्या को दृष्टिगत रखते हुए ग्रामीणजनों की मांग पर पुन: हरदा विधायक डॉ. रामकिशोर दोगने ने विधायक निधि से 9 फायर फाईटर पानी टैंकर का वितरण किया । उक्त पानी टैंकर मिनी फायर बिग्रेड का काम करेगें। जिससे ग्रीष्म ऋतु के दौरान ग्रामीण क्षेत्रों में होने वाली आगजनी की घटनाओं को नियंत्रित किया जा सकेगा। विधायक डॉ. दोगने ने अपने निवास पर विकास खंण्ड हरदा की ग्राम झुगरिया, रोलगांव, बम्हनगांव, कोलवां, भीमपुरा, मंझली, कचबैड़ी, हरपालिया, गोगिया को एक सादे समारोह के दौरान सरपंच, सचिव व अन्य ग्रामीणजनों की उपस्थिति में टेंकर प्रदत्त किये।

मंत्री श्रीमती कृष्णा गौर योग दिवस कार्यक्रम में होंगी मुख्य अतिथि

हरदा ,देशबन्धु। प्रदेश की पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक कल्याण विभाग की राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्रीमती कृष्णा गौर 20 जून को रात्रि में हरदा आएंगी तथा अगले दिन 21 जून को सुबह अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रुप में शामिल होंगी। निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार राज्यमंत्री श्रीमती कृष्णा गौर 20 जून को शाम 4 बजे कार द्वारा भोपाल से प्रस्थान कर रात्रि 7 बजे हरदा आएंगी तथा सर्किट हाउस में रात्रि विश्राम करेंगी। राज्यमंत्री श्रीमती गौर 21 जून को सुबह 6 बजे अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में शामिल होगी। कार्यक्रम उपरांत राज्यमंत्री श्रीमती गौर प्रात: 9 बजे हरदा से कार द्वारा भोपाल के लिए प्रस्थान करेंगी।

अवैध रेत भण्डारण पर 1 लाख 57 हजार का अर्थदण्ड अधिरोपित किया

हरदा , देशबन्धु।,कलेक्टर एवं जिला दण्डाधिकारी सिद्धार्थ जैन ने बिना रायल्टी गौण खनिज भण्डारण करने पर कांट्रेक्टर अंकुर चौहान निवासी ब्रिज के पास आशापुर तहसील नया हरसूद जिला खण्डवा पर खनिज नियम 2022 के तहत 78750 रूपये का अर्थदण्ड तथा पर्यावरण क्षतिपूर्ति की राशि 78750 रूपये, इस प्रकार कुल 157500 रूपये की राशि अधिरोपित की है। उल्लेखनीय है कि नायब तहसीलदार खिरकिया द्वारा वर्ष 12 अक्टूबर 2023 कांट्रेक्टर अंकुर चौहान के विरूद्ध रेत के अवैध भण्डारण का प्रकरण दर्ज किया गया था। कलेक्टर श्री जैन ने संबंधित ठेकेदार को अर्थदण्ड की राशि 157500 रूपये तथा प्रशमन शुल्क एक हजार रूपये चालान द्वारा जमा करने के निर्देश दिये है। साथ ही संबंधित कांट्रेक्टर को अपना पक्ष समर्थन के लिये 30 जून के पूर्व न्यायालय में उपस्थित होने के निर्देश दिये गये है। उपस्थित नहीं होने की स्थिति में संबंधित के विरूद्ध एक पक्षीय कार्यवाही की जाएगी।

परिवहन एवं स्कूल शिक्षा मंत्री आज योगाभ्यास कार्यक्रम में शामिल होंगे

नर्मदापुरम,देशबन्धु। प्रदेश के परिवहन एवं स्कूल शिक्षा विभाग मंत्री राव उदय प्रताप सिंह आज नर्मदापुरम जिले के प्रवास पर रहेंगे। मंत्री श्री राव आज प्रात: 6 बजे नर्मदापुरम महाविद्यालय में आयोजित 11वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के कार्यक्रम के अंतर्गत सामूहिक योग के कार्यक्रम में शामिल होंगे। मंत्री श्री राव प्रात: साढ़े 10 बजे नर्मदापुरम से गाडरवारा के लिए प्रस्थान करेंगे।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस आज

शिक्षण संस्थाओं में होंगे सामूहिक योगाभ्यास के कार्यक्रम

हरदा , देशबन्धु। ग्यारहवें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर 21 जून 2025 को प्रदेश की शिक्षण संस्थाओं में सामूहिक योग प्रदर्शन के लिये लोक शिक्षण संचालनालय ने दिशा निर्देश जारी किये है। कलेक्टर सिद्धार्थ जैन ने बताया कि हरदा में जिला स्तरीय कार्यक्रम कृषि उपज मंडी प्रांगण में आयोजित किया गया है उन्होंने अधिकारी कर्मचारियों को प्रात: 5:45 बजे कार्यक्रम स्थल पर उपस्थित रहने के निर्देश दिए हैं। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की इस वर्ष की थीम 'एक पृथ्वी – एक स्वास्थ्य के लिये योग' रखी गई है। सामान्य प्रशासन विभाग द्वारा जारी निर्देशों में कहा गया है कि शिक्षण संस्थाओं में सामूहिक योग प्रदर्शन के लिये आयुष मंत्रालय के कॉमन योग प्रोटोकॉल का पालन किया जायेगा। संपूर्ण प्रदेश में निर्धारित समय सारणी के अनुसार योग कार्यक्रम आयोजित किया जायेगा। जारी समय सारणी अनुसार शिक्षण संस्थाओं में विद्यार्थियों एवं अन्य सहभागी गण प्रात: 6 बजे के पूर्व उपस्थित होंगे। कार्यक्रम में प्रात: 6 से 6:30 बजे तक स्थानीय जनप्रतिनिधिगणों का आगमन व उद्बोधन होगा। इसके बाद प्रात: 6:30 बजे से 6:40 बजे तक भोपाल से मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के उद्बोधन का सीधा प्रसारण होगा। इसके बाद प्रात: 6:40 से 7 बजे तक विशाखापट्टनम से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के उद्बोधन का सीधा प्रसारण होगा तथा 7 से 7:45 तक सामान्य प्रोटोकॉल का योगाभ्यास होगा। मुख्यमंत्री एवं प्रधानमंत्री के उद्बोधन कार्यक्रमों का सीधा प्रसारण दूरदर्शन एवं राष्ट्रीय चौनलों के माध्यम से किया जायेगा। विद्यार्थियों को इस कार्यक्रम का लाइव प्रसारण दिखाने हेतु विद्यालयों में आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित की जाएगी। जारी दिशा निर्देश अनुसार योग के मूल सिद्धांतों और इसके लाभों को बताने के लिये विद्यालयों में कार्यक्रम स्थल पर योग विशेषज्ञों को आमंत्रित कर योग व्याख्यान कराये जायेंगे।

जिला स्तरीय कार्यक्रम आज

नर्मदापुरम, देशबन्धु।। नर्मदापुरम जिले में 11वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर जिला प्रशासन एवं आयुष विभाग नर्मदापुरम द्वारा जिला स्तरीय कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। इस कार्यक्रम की थीम एक पृथ्वी एक स्वास्थ्य के लिए योग है। उक्त कार्यक्रम आज प्रात: 6 से 8 बजे तक प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस, नर्मदा महाविद्यालय, नर्मदापुरम में आयोजित किया जाएगा।

11वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस कार्यक्रम मुख्य अतिथि परिवहन एवं स्कूल शिक्षा मंत्री म.प्र. शासन राव उदय प्रताप सिंह, विशिष्ट अतिथि लोकसभा सांसद नर्मदापुरम नरसिंहपुर दर्शन सिंह चौधरी, राज्यसभा सांसद श्रीमती माया नारोलिया की उपस्थिति में होगा। कार्यक्रम की अध्यक्षता पूर्व विधानसभा अध्यक्ष एवं विधायक नर्मदापुरम डॉ. सीतासरन शर्मा करेंगे। कार्यक्रम में विशेष अतिथि के रूप में विधायक सोहागपुर ठाकुर विजयपाल सिंह, विधायक सिवनीमालवा प्रेमशंकर वर्मा, विधायक पिपरिया ठाकुरदास नागवंशी, जिला अध्यक्ष भाजपा नर्मदापुरम श्रीमती प्रीति शुक्ला एवं अध्यक्ष नगरपालिका परिषद नर्मदापुरम श्रीमती नीतू महेन्द्र यादव भी उपस्थित रहेंगे।

जारी कार्यक्रम अनुसार 11वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस कार्यक्रम प्रात: 6.00 बजे से पूर्व सभी सहभागी गण की उपस्थिति होगी, प्रात: 6.00 बजे अतिथि गण का आगमन और अतिथि गण द्वारा पौधारोपण किया जाएगा। प्रात: 6.05 बजे अतिथि गण का उद्बोधन होगा। प्रात: 6.30 से 7.00 बजे तक मुख्य कार्यक्रम के अतिथियों के उद्बोधन का सीधा प्रसारण किया जाएगा। तत्पश्चात प्रात: 7.00 से 7.45 बजे तक सामान्य योग प्रोटोकॉल का योगाभ्यास किया जाएगा। तथा प्रात: 7.50 बजे आभार एवं कार्यक्रम का समापन होगा।

बुजुर्ग से अज्ञात युवक ने सरेराह कर दी 50 हजार रुपए की लूट

सुहागपुर, देशबन्धु। नगर के रामप्रसाद वार्ड निवासी रिटायर्ड शिक्षक लक्ष्मी नारायण दुबे से एक अज्ञात द्वारा 50000 रुपए लूट लिए गए। पीड़ित शिक्षक के पुत्र वीरेंद्र दुबे ने बताया कि उनके पिता अपनी तनख्वाह में से 50000 निकालने भारतीय स्टेट बैंक गए थे जहां पर दोपहर 1 बजे के लगभग उन्होंने राशि निकाली और पैदल ही घर की ओर जा रहे थे । रास्ते में स्टेशन के पास पोस्ट ऑफिस के पीछे जब वह पहुंचे पीछे से एक युवक ने बुजुर्ग शिक्षक को धक्का दिया और झपट्टा मार कर उनके पास रखे रुपए लूट कर भाग गया। उसके बाद उन्होंने पुलिस थाने जाकर शिकायत दर्ज कराई और अस्पताल ले जाकर घायल बुजुर्ग की एम एल सी कराई गई, उनके पुत्र वीरेंद्र दुबे ने बताया आरोपी बैंक से उनका पीछा करते हुए गया है। भारतीय स्टेट बैंक और उसके आसपास पैसे लेकर भागने और छुड़ाने की घटनाएं कई बार कई वर्षों में एक दर्जन से अधिक घटना हो चुकी है परंतु आज तक कोई भी आरोपी पकड़ा नहीं गया, सीसीटीवी फुटेज में कम उम्र के लड़के लड़कियां दिखाई दिए हैं सूत्रों के अनुसार इस घटना में भी एक संदिग्ध युवक दिखाई दिया है पुलिस मामले की जांच कर रही है देखना क्या है कि आरोपी पकड़ता है पूर्व की घटना अप्रैल में में अधिक हुई है जब किसान अपनी फसल का पैसा निकालने आते है परंतु यह घटना जून के अंत में हुई है दिन दहाड़े हुई इस लूट की घटना से नागरिकों में रोष व्याप्त है। बहरहाल, पुलिस ने मामला दर्ज करते हुए बीएनएस की धारा 304 ए 23 का अपराध दर्ज कर लिया।

सीसीटीवी में कैद हुआ युवक

नपाध्यक्ष ने किया फूलवती जायसवाल स्कूल का निरीक्षण

परिसर में जल भरा देख बुलाई जेसीबी, निकलवाया पानी

नर्मदापुरम, देशबन्धु।। नगरपालिका अध्यक्ष नीतू महेंद्र यादव द्वारा कोठी बाजार स्थित फूलवती जायसवाल स्कूल का निरीक्षण किया। स्कूल परिसर में बारिश का पानी भरा होने पर सफाई कर्मचारियों पर नाराजगी व्यक्त की। साथ ही तत्काल प्रभाव से जेसीबी बुलाकर वहां की नाली साफ कराई। इस दौरान स्वच्छता उपनिरीक्षक संजय लुटारे को सख्त निर्देश दिए गए समस्त शासकीय स्कूल परिसरों को चेक करें तथा ऐसी स्थिति है तो तत्काल प्रभाव से पानी निकासी की व्यवस्था करें। दोबारा ऐसी स्थिति दिखी तो कार्रवाई की जाएगी। निरीक्षण के दौरान राजस्व सभापति निर्मला हंस राय, स्वच्छता शाखा से विशाल शर्मा, स्कूल से बीआरसी आदि मौजूद थे। ध्यान रहे कि नगरपालिका द्वारा नगर के समूचे नाले नालियों का सफाई अभियान चलाया जा रहा है।

नपाध्यक्ष नीतू महेंद्र यादव ने नगर के नागरिकों और व्यापारियों से आग्रह किया है कि बारिश का मौसम में नगर हित में पालिथिन का उपयोग बंद कर दें। पालिथिन नाले नालियों में फंसकर जल निवासी में बाधा उत्पन्न करती है।

मुख्यमंत्री डॉ.यादव ने प्रदेश स्तरीय गौशाला सम्मेलन में गोसेवकों को किया सम्मानित

हरदा , देशबन्धु। मुख्यमंत्री निवास, भोपाल में आयोजित हुए प्रदेश स्तरीय गौशाला सम्मेलन में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने गौ सेवा और पशुधन संरक्षण के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले व्यक्तियों और संस्थाओं को 'आचार्य विद्यासागर जीवदया गौसेवा सम्मान योजना' के तहत सम्मानित किया।इस अवसर पर प्रदेश भाजपा अध्यक्ष बी डी शर्मा एवं पशुपालन मंत्री लखन पटेल भी उपस्थित थे । इस अवसर पर हरदा जिले के तीन प्रमुख पुरस्कार विजेताओं को उनकी अनुकरणीय सेवाओं के लिए सम्मानित किया गया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सभी पुरस्कार विजेताओं को बधाई दी और उनके कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि गौ सेवा हमारी संस्कृति का अभिन्न अंग है और ऐसे प्रयास समाज में पशु कल्याण के प्रति जागरूकता बढ़ाने में महत्वपूर्ण हैं।

उप संचालक पशु चिकित्सा सेवाएं डॉ. एस.के. त्रिपाठी ने बताया कि इस दौरान हरदा जिले के किसान सुजीत शर्मा को वर्ष 2023-24 के लिए व्यक्तिगत पुरस्कार श्रेणी के अंतर्गत प्रथम पुरस्कार एक लाख रुपये प्रदान किये गये। श्री शर्मा को यह सम्मान उनके व्यक्तिगत स्तर पर गौ सेवा के प्रति अदम्य समर्पण के लिए मिला। इसी प्रकार श्री दयोदय पशुधन संरक्षण समिति, बैरागढ़, हरदा को वर्ष 2022-23 के लिए संस्थागत श्रेणी में सांत्वना पुरस्कार पचास हजार रुपये से नवाजा गया। समिति ने पशुधन संरक्षण और गौ सेवा में सराहनीय योगदान दिया है। इसके अलावा सीताराम रामचंद्र गौशाला, हरदा को वर्ष 2023-24 के लिए संस्थागत श्रेणी में सांत्वना पुरस्कार पचास हजार रुपये प्रदान किये गये। गौशाला ने गौवंश के कल्याण और देखरेख में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उप संचालक डॉ. त्रिपाठी ने बताया कि यह सम्मान गौ सेवा के प्रति इन व्यक्तियों और संस्थाओं के अथक प्रयासों और प्रतिबद्धता का परिचायक है।

अतिक्रमण हटाया तो युवक ने खाया जहर

आमला, देशबन्धु।. ग्राम पंचायत डोडावानी में किराना दुकान पर अतिक्रमण की कार्रवाई की गई। प्रशासन ने जेसीबी से अतिक्रमण हटाया। उसके बाद अतिक्रमणकारी ने कीटनाशक खाकर आत्महत्या करने की कोशिश की। अतिक्रमणकारी को उपचार के लिए सिविल अस्पताल में भर्ती किया गया है। जानकारी के अनुसार प्रकाश यादव उम्र 40 वर्ष पिता टूटा यादव ग्राम पंचायत डोडवानी ने जहर खाया है। प्रकाश यादव के बड़े भाई का कहना है कि मेरे भाई को कोई नोटिस जारी नहीं किया गया था प्रकाश यादव के बड़े भाई ने आरोप लगाया है कि मेरे भाई को कोई नोटिस जारी नहीं किया गया था और किराने की दुकान तोड़ने के लिए पूरा नायब तहसीलदार पटवारी सुभाष वागद्रे पुलिस विभाग और उपसरपंच सरपंच सचिन की मिली भगत से दुकान का अतिक्रमण हटाया गया। जिससे मेरे भाई ने जहर खा लिया। मेरे भाई के साथ में अगर कोई अनहोनी होती है तो उनके

जवाबदारी सरपंच कृष्णा पंदराम उप सरपंच हरीश बीसद्रे और ग्राम पंचायत सचिव और कुछ गांव के लोग भी शामिल थे।

भ्रष्टाचार का आरोप : प्रकाश यादव के छोटे भाई का कहना है कि ग्राम पंचायत डोडावानी में लगभग 200 एकड़ जमीन पर लोगों का कब्जा है। जो पटवारी सुभाष वागद्रे की मिली भगत से भ्रष्टाचार को अंजाम दिया जा रहा था। मेरे भाई को कोई नोटिस जारी किया ही नहीं गया था। इससे साफ होता है कि प्रशासन की मिलीभगत से भ्रष्टाचार किया जा रहा है। इस मामले में जांच कर कार्रवाई की मांग की गई है। प्रकाश यादव के परिवार ने कार्रवाई की मांग की है।

सोपास करेगा जिले की प्रतिभाओं का सम्मान

नर्मदापुरम, देशबन्धु। समिति का प्राइवेट स्कूल डायरेक्टर्स मध्य प्रदेश के नर्मदा पुरम जिले में जिले के 10वीं 12वीं के टॉपर बच्चों का सम्मान कार्यक्रम 26 जून को रखा गया है जानकारी देते हुए जिला अध्यक्ष आलोक राजपूत ने बताया कार्यक्रम में प्रदेश के मेरिट में आए हाई स्कूल हायर सेकेंडरी के साथ स्टेट बोर्ड और सीबीएसई बोर्ड के हाई स्कूल हायर सेकेंडरी के 10-10 टाप विद्यार्थियों के साथ नर्मदा पुरम ब्लॉक के प्रत्येक विद्यालय के दसवीं के टॉपर एवं 12वीं के 75त्न से अधिक अंक प्राप्त लैपटॉप प्राप्ति वाले विद्यार्थियों का सम्मान गरिमामय कार्यक्रम में मध्य प्रदेश शासन के शिक्षा मंत्री राव उदय प्रताप सिंह के मुख्य आतिथ्य में सांसद दर्शन सिंह चौधरी के साथ सभी विधायक की उपस्थिति में होगा कार्यक्रम की अध्यक्षता पूर्व विधानसभा अध्यक्ष माननीय डॉक्टर सीता शरण शर्मा करेंगे। आज ग्रीन सिटी गार्डन में कार्यक्रम की रूपरेखा निर्धारण करने के लिए सोपास जिले की कोर टीम की एक महत्वपूर्ण बैठक हुई जिसमें पूरे कार्यक्रम की रूपरेखा एवं जिम्मेदारियां का निर्धारण किया गया, जानकारी देते हुए प्रदेश संगठन मंत्री रवि शंकर राजपूत ने बताया की बैठक में प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य प्रशांत जैन संभागीय संयोजक देवी सिंह राजपूत जिला कार्यकारी अध्यक्ष लोचन प्रजापति जिला कोषाध्यक्ष मोहनलाल गौर प्रदेश कार्यालय मंत्री कमलेश कुशवाहा जिला कार्यकारिणी सदस्य संदीप तिवारी एवं जफर सिद्दीकी ब्लॉक अध्यक्ष रिजवान हैदर पिपरिया के ब्लॉक अध्यक्ष प्रीतेश भार्गव नर्मदापुरम ग्रामीण ब्लॉक अध्यक्ष नितिन गौर के साथ विभिन्न ब्लॉक से डॉ हरगोविंद शुक्ला ,विजय सेठ ,आशुतोष गुप्ता ,प्रकाश चौरे ,मुकेश सोना ,घनश्याम साहू ,अजय चौकसे ,अनुज दीवान, शरद गौर ,यशवंत सिंह, मुकेश यादव, घनश्याम साहू ,चिंटू चौरे ,राहुल जोशी, मो फाजिल एवं बड़ी संख्या में जिले के संचालक उपस्थित हुए। सभी ने एकमत से कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए संकल्प लिया कार्यक्रम को करियर काउंसलिंग एवं बच्चों के पुरस्कार में सेज यूनिवर्सिटी सहयोग करेगी से यूनिवर्सिटी की तरफ से राहुल मालवी उपस्थित हुए उन्होंने जानकारी दी कि कार्यक्रम के उपरांत सभी के लिए भोजन व्यवस्था का भी भी रखी गई है इसलिए अधिक से अधिक संख्या में पूरे जिले से 12वीं के बच्चे काउंसलिंग के लिए पिता उनके परीक्षा फलों के साथ उपस्थित हूं और शिक्षा मंत्री से बच्चों को आशीर्वाद ग्रहण करवाई अंत में ब्लॉक अध्यक्ष रिजवान हैदर द्वारा आज की बैठक की सफलता एवं सभी की उपस्थिति के लिए आभार प्रदर्शित किया।

भगवान की हुई प्राण प्रतिष्ठा, मंदिर का हुआ लोकार्पण, धूमधाम से वेदी पर विराजमान हुए भगवान पारसनाथ

पंचकल्याणक महोत्सव का हुआ समापन, नगर में निकली भव्य शोभायात्रा

हरदा , देशबन्धु।। टिमरनी नगर में चल रहे जैन समाज के पाषाण से भगवान बनाने का महोत्सव श्रीमज्जिनेन्द्र पंचकल्याणक महोत्सव का शुक्रवार को भगवान के मोक्ष प्राप्ति के साथ हर्षोल्लास से समापन हो गया । प्रातकाल शुभबेला में भगवान को मोक्ष प्राप्त होने के पश्चात मुनिश्री निर्णयसागर महाराज के सान्निध्य में प्रतिष्ठाचार्य बाल ब्रह्मचारी वाणी भूषण विनय भैय्या बंडा ने मोक्ष कल्याणक के बाद भी धार्मिक क्रियाओं को संपन्न करवाया । मुनिश्री निर्णयसागर महाराज ने भगवान जी की प्रतिमाओं को सूर्य मंत्र देकर प्रतिष्ठा की, जिस पर उपस्थित श्रावकों में हर्ष व्याप्त हो गया और पूरा परिसर भगवान की जय जयकारा से गुंजायमान हो गया । इस अवसर पर मोक्षकल्याणक की मांगलिक क्रियाएं हुईं। सुबह ज्ञान कल्याणक पूजन और शांति हवन हुआ। भगवान आदिनाथ को निर्वाण प्राप्ति हुई। अग्नि कुमार देवों का आगमन हुआ। नख-केश विसर्जन, सिद्ध गुणारोपण विधि, सिद्ध पूजन और मोक्ष कल्याणक पूजन के साथ विश्व शांति महायज्ञ हुआ।

पंचकल्याणक समिति के अध्यक्ष सुरेन्द्र जैन एवं कोषाध्यक्ष राजीव जैन ने बताया कि दोपहर में गजरथ शोभायात्रा निकाली गई। इसमें भगवान के माता-पिता, सौधर्मेंद्र, कुबेर, विधिनायक और समस्त इंद्र रथों पर सवार थे। श्रीजी की प्रतिमाओं को नगर में भ्रमण कराते हुए नवनिर्मित पाषाण के जिनालय में ले जाकर मार्बल की वेदि पर विराजमान किया गया। श्रीजी की शोभायात्रा टिमरनी नगर के लिए ऐतिहासिक बन गई, शोभायात्रा में गजराज, रथ, बग्गी, पालकी के सिलवानि से आये जैन नवयुवक संघ का दिव्य बैंड ओर अखाड़ा चल रहा था ।

शोभायात्रा में शामिल मुनिश्री के नगर की समस्त समाजों द्वारा चरण प्रक्षालन कर एवं भगवान की आरती उतार कर हर्ष व्यक्त किया । सात दिन चले श्रीमज्जिनेन्द्र पंचकल्याणक महोत्सव में हरदा जिले के साथ ही प्रदेश भर के जैन धर्मावलम्बी शामिल हुए ओर आयोजन के साक्षी बने।

धर्मसभा को संबोधित करते हुए मुनि निर्णयसागर महाराज ने मोक्ष क्या होता है इसपर प्रकाश डालते हुए कहा कि जैन धर्म की मान्यता दुनिया के सभी सिद्धांतों से अलग है। जैन धर्म का मानना है कि अनादि काल से आत्मा और कर्मों का सहयोग रहता है, जो आत्मा को संसार में दुखी करती है। इस दुख के कारण उसे जन्म, मरण की प्राप्ति होती है, जो संसार के सबसे बड़े दुख कहलाते हैं। जब तक जन्म मरण का चक्कर चलता रहेगा, तब तक तो दुखों से मुक्ति प्राप्त नहीं होगी, जन्म व मरण को देने वाले होते हैं कर्म। कर्मों के कारण संसारी प्राणी दुख भोगता है और त्याग, तपस्या करके इन कर्मों का आत्मा से विच्छेद किया जाता है। जब कर्म और आत्मा एक दूसरे से एकदम अलग हो जाते हैं, तो ऐसी दशा को आत्मा का मोक्ष माना जाता है। उन्होंने कहा कि जैन धर्म की शान को बढ़ाने में अगर हमारे प्राण भी चले जाएं, तो हमें पीछे नहीं हटना चाहिए। बाल ब्रह्मचारी विनय भैय्या ने कहा कि इसी तरह से जैन धर्म की भक्ति में लगे रहना और अपनी आत्मा के कल्याण के पद पर बढ़ते रहना।

विश्व शांति महायज्ञ क्यों किया जाता है

उन्होंने बताया कि जब हम कोई धार्मिक अनुष्ठान करते हैं, भगवान की भक्ति करते हैं अथवा कोई भी कार्य करते हैं, तो उसमें गलतियां होना त्रुटियां होना स्वाभाविक है। इन त्रुटियों की क्षमा याचना करने के लिए और विश्व के प्रत्येक प्राणी का कल्याण हो ऐसी भावना से ओत-प्रोत होकर ही विश्व शांति महायज्ञ किया जाता है। विज्ञान के अनुसार हमारे आसपास बहुत सी नकारात्मक ऊर्जा उत्पन्न होती है और इस ऊर्जा को हवन, मंत्रों के माध्यम से नष्ट करने की प्रक्रिया का नाम है विश्व शांति महायज्ञ है।

ईव्हीएम-व्हीव्हीपीएटी वेयरहाउस का त्रैमासिक निरीक्षण 23 को

नर्मदापुरम,देशबन्धु। कलेक्टर मीना द्वारा 23 जून को प्रात:11 बजे जिला कार्यालय तवा भवन परिसर स्थित ईव्हीएम-व्हीव्हीपीएटी वेयरहाउस का त्रैमासिक निरीक्षण वेयरहाउस खोला जाकर आंतरिक निरीक्षण किया जाएगा।

जाहिर सूचना

मैं मिलिन्द आवले पिता रुपदेव आवले जाति मेहर उम्र 40 साल निवासी खड़की तहसील प्रभात पट्टन जिला बैतूल म.प्र.का निवासी हूं।

यह कि मिलिद MILIND एवं मिलिन्द आवले MILIND AVLE यह दो नाम के एक ही व्यक्ति का नाम है इसलिए मुझे **मिलिन्द आवले MILIND AVLE** नाम से जाना जाता है।

मुलताई
दिनांक 19.06.2025 शपथकर्ता

प्रगत संगणन विकास केंद्र
CENTRE FOR DEVELOPMENT OF ADVANCED COMPUTING
इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय, भारत सरकार

सी-डैक, इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय (एम.ई.आई.टी.वाई.) की एक प्रमुख वैज्ञानिक संस्था है, जो राष्ट्रीय महत्व के विभिन्न अनुसंधान व विकास कार्यों के संपादन में लगी हुई है।

सी-डैक सीधी भर्ती / प्रतिनियुक्ति / समावेषण के आधार पर समूह ए तकनीकी पदों के लिए आवेदन आमंत्रित करता है:

पद	पदों की संख्या	प्रारंभिक पोस्टिंग	वार्षिक सीटीसी
कार्यकारी निदेशक	२ (नियमित)	पुणे व हैदराबाद	लगभग रु. 47 लाख प्रति वर्ष

अधिक विवरण और पात्रता शर्तों के लिए, कृपया हमारी वेबसाइट https://www.cdac.in पर जाएं

ऑनलाइन आवेदन प्राप्त होने की अंतिम तिथि - रोजगार समाचार में प्रकाशन की तिथि से ३०वां दिन

वि. सं. CORP/GR.A/06/2025 निदेशक (मा.सं.वि)

राष्ट्रीय विकास के लिए प्रौद्योगिकी उन्नति

cbc06132/12/0012/2526

अभिमत

इस विज्ञान परियोजना के तहत फोटो, वीडियो और किताबें अपलोड कीं। यह 'कबाड़ से जुगाड़' वीडियो सिर्फ 2-मिनट के हैं. यह अनेकों भारतीय भाषाओँ में डब हुए हैं. जिसको दुनिया भर में देखा जाता है। अब तक लाखों बच्चों ने उनके वीडियो देखे हैं. हर रोज़ उनकी वेबसाइट से करीब दस हज़ार किताबें मुफ्त में डाउनलोड होती हैं। इससे लगता है कि हमारे बहुत से लोगों की अच्छा साहित्य पढ़ने में रूचि है। और उन तक ऐसी शिक्षाप्रद किताबें पहुंचना जरूरी है।

कबाड़ से जुगाड़ ही उनकी पहचान है

जाने माने टॉयमेकर अरविंद गुप्ता सिर्फ बेकार चीजों से खिलौने बनाकर विज्ञान ही नहीं सिखाते हैं, बल्कि वे देश-दुनिया के बाल साहित्य का हिन्दी में अनुवाद करते हैं, उन्हें उनकी वेबसाइट पर अपलोड कर मुफ्त में उपलब्ध कराते हैं। ऐसा वे कई सालों से कर रहे हैं। हिन्दी पाठकों के लिए उनका उपहार भी मान सकते हैं। आज इस कॉलम में अरविंद गुप्ता के काम के बारे में चर्चा करना चाहूंगा, जिससे उनके कामों का महत्व जाना जा सके।

मैं अरविंद गुप्ता को बरसों से जानता हूं। मैं न केवल उनसे मिलता रहा हूं, बल्कि उनके जिंदगी के प्रमुख पड़ावों को भी देखता रहा हूं। पहली बार, मेरी मुलाकात उनसे किशोर भारती में हुई थी। यह स्वयंसेवी संस्था, मध्यप्रदेश में शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत थी। इस संस्था ने होशंगाबाद विज्ञान शिक्षण कार्यक्रम की शुरूआत की थी, जिसके तहत माध्यमिक कक्षाओं (6 वीं- 8 वीं) तक बाल विज्ञान का पाठ्यक्रम विकसित किया गया था, जो मध्यप्रदेश के स्कूलों में सालों तक चला। इसके तहत बच्चे प्रयोग करके विज्ञान सीखते थे। यह गतिविधि आधारित था।

अरविंद गुप्ता, कानपुर, आईआईटी से निकले हैं। पेशे से इंजीनियर हैं, पर उनका मन वहां नहीं लगा। कुछ सार्थक काम करने की तलाश में उन्होंने कई काम किए। लेकिन उन्हें सबसे अच्छा काम लगा, विज्ञान को लोकप्रिय बनाना, और उसका प्रचार-प्रसार करना। इसके लिए उन्होंने कबाड़ यानि बेकार चीजों से विज्ञान सिखाने की राह पकड़ी, जो उनका जीवन का मिशन बन गया।

किशोर भारती में उन्होंने कई नवाचार के उदाहरण पेश किए। उन्होंने बाल विज्ञान के कुछ अध्याय विकसित किए थे। मुझे याद आ रहा है उन्होंने खेल-खेल में विज्ञान सीखने सिखाने का तरीका खोज निकाला था। माचिस की तीलियों से गणित सीखने और मोमबत्ती की लौ से गर्म करके साधारण बटन को उल्टे जोड़कर घिरनी बनाना। मजेदार खेल व मशीन जैसे अध्याय बनाने में मदद की थी।

किशोर भारती में उन दिनों सीखने-सिखाने व नये विचारों के आदान-प्रदान का बहुत खुला माहौल था। यहां शिक्षा व विज्ञान जगत की बड़ी हस्तियों का आना जाना लगा रहता था। प्रोफेसर यशपाल से लेकर शिक्षाविद् कृष्ण कुमार जैसे लोग यहां न केवल आए, बल्कि कई कई दिन आकर रहे। शिक्षक प्रशिक्षणों में भाग लिया। प्रसिद्ध वैज्ञानिक अनिल सद्गोपाल द्वारा स्थापित किशोर भारती शिक्षा में नवाचार के लिए जानी जाती रही है। ग्रामीण विकास, शिक्षा व स्वास्थ्य के क्षेत्र में भी संस्था के कार्य उल्लेखनीय हैं।

किशोर भारती में उन दिनों सीखने-सिखाने व नये विचारों के आदान-प्रदान का बहुत खुला माहौल था। यहां शिक्षा व विज्ञान जगत की बड़ी हस्तियों का आना जाना लगा रहता था। प्रोफेसर यशपाल से लेकर शिक्षाविद् कृष्ण कुमार जैसे लोग यहां न केवल आए, बल्कि कई कई दिन आकर रहे। शिक्षक प्रशिक्षणों में भाग लिया। प्रसिद्ध वैज्ञानिक अनिल सद्गोपाल द्वारा स्थापित किशोर भारती शिक्षा में नवाचार के लिए जानी जाती रही है।

यहां एक बहुत ही समृद्ध पुस्तकालय था, जहां पहली बार मेरा किताबों की दुनिया से परिचय हुआ था। यहां आकर उन्हें उलटना-पलटना, चित्र देखना, किताबों के बीच बैठना, यह सब बहुत अद्भुत अनुभव था। यहां नए विचारों की हवा बह रही थी। संस्था का परिसर पेड़-पौधों हरा-भरा, और मनोरम था। यहां के वातावरण में गहरी सांस लेना ही ऊर्जा व उम्मीद से भर देता था।

अरविंद गुप्ता ने यहां आकर बहुत ही सस्ती चीजों से विज्ञान सिखाने के प्रयोगों पर ध्यान दिया। उन्होंने माचिस की तीलियों व साइकिल के बाल्व ट्यूब से त्रिभुज, चतुर्भुज जैसी कई आकृतियां बनाईं, जिन्हें बच्चे खुद बना सकते थे और इनके पीछे छिपे गणित के सिद्धांतों को समझ सकते थे। इसी प्रकार, बटन से घिरनी में चक्के व लीवर के सिद्धांत को समझा जा सकता है।

अरविंद गुप्ता, जहां भी रहे, उनकी नजर सस्ते व बेकार सामानों से विज्ञान व गणित सिखाने की रही है। इसी कड़ी में उन्होंने अविभाजित मध्यप्रदेश(अब छत्तीसगढ़) के दल्ली राजहरा शहर में लोहे की खदानों में चलने वाले ट्रिपर ट्रक का मॉडल माचिस से बनाया और बाद में उनकी किताब में शामिल किया। उन्होंने कुछ समय मशहूर मजदूर नेता शंकर गुहा नियोगी के साथ भी काम किया है।

हाल ही दिवंगत प्रसिद्ध खगोलशास्त्री जयंत नार्लीकर द्वारा स्थापित इंटर यूनिवर्सिटी सेंटर फॉर एस्ट्रोनॉमी एंड एस्ट्रोफिजिक्स (आईयूसीएए) के अंतर्गत विज्ञान केन्द्र में भी उन्होंने काम किया। इसके तहत् उन्होंने रोज ही नए नए मॉडल बनाए। इसके बाद उन्होंने खुद की वेबसाइट शुरू की (arvindguptatoys.com)। इस विज्ञान परियोजना के तहत फोटो, वीडियो और किताबें अपलोड कीं। यह 'कबाड़ से जुगाड़' वीडियो सिर्फ 2-मिनट के हैं. यह अनेकों भारतीय भाषाओँ में डब हुए हैं. जिसको दुनिया भर में देखा जाता है। अब तक लाखों बच्चों ने उनके वीडियो देखे हैं. हर रोज़ उनकी वेबसाइट से करीब दस हज़ार किताबें मुफ्त में डाउनलोड होती हैं। इससे लगता है कि हमारे बहुत से लोगों की अच्छा साहित्य पढ़ने में रूचि है। और उन तक ऐसी शिक्षाप्रद किताबें पहुंचना जरूरी है।

इस वेबसाइट पर देश विदेश के बाल साहित्य उपलब्ध है, जो जानकारीपरक, सामान्य ज्ञान से भरपूर और प्रेरणादायक है। इन किताबों में लगभग 700 सचित्र प्रेरक हस्तियों के जीवन चरित्र हैं, जिनके कामों से बदलाव भी आया है। इसके साथ वे खुद अच्छे बाल साहित्य की किताबों का अनुवाद लगभग रोज ही करते हैं और वेबसाइट पर अपलोड करते हैं।

उन्होंने 1992 से लेकर भारत ज्ञान विज्ञान समिति, नई दिल्ली के साथ काम किया और 100 बाल जनवाचन की छोटी-छोटी पुस्तकें प्रकाशित की. यह पुस्तकें शांति (फर्डीनांड की कहानी) परमाणु युद्ध विरोधी (सडाको और कागज़ के पक्षी, तीन हाथी) पर्यावरण (जिसने उम्मीद के बीज बोए, दानी पेड़), दिव्यांग स्पेशल बच्चे (व्हीलचेयर ही मेरे पैर हैं), शिक्षा (नीलबाग के डेविड, खुशियों का स्कूल) इत्यादि। इसके साथ ही, 100 में से 40 किताबें बाई-लिंगुअल यानि हिंदी-अंग्रेजी दोनों भाषाओं में थीं। यह किताबें खूब बिकीं - करीब 20 लाख प्रतियों से ज़्यादा।

अरविन्द गुप्ता ने नेशनल बुक ट्रस्ट के सलाहकार के रूप में भी काम किया और गिजुभाई की दिवास्वप्न, तोत्तो चान जैसी उत्कृष्ट किताबें भी उनके ही प्रयासों से प्रकाशित हुईं। यह पुस्तकें अब कई भाषाओं में अनूदित हो चुकी हैं। मसलन, नील की समरहिल, सिल्विया ऐशटन वार्नर की टीचर, बहुरूपी गाँधी जैसी किताबों की लम्बी फेरहिस्त हैं, जिन्हें उनकी वेबसाइट पर देखा जा सकता है।

अरविंद गुप्ता ने अपने आप को सिर्फ वेबसाइट व किताबों तक ही सीमित नहीं रखा है, बल्कि वे देश-दुनिया के 3000 से अधिक स्कूल-कॉलेजों में गए हैं। वहां के छात्रों व शिक्षकों से मिले हैं। कई चर्चाओं में शामिल रहे हैं और व्याख्यान दिए हैं। वे कहते हैं कि उन्हें ख़राब स्कूली मैनेजमेंट, ख़राब प्रिंसिपल, ख़राब टीचर अक्सर मिले हैं, पर आज तक कोई खराब बच्चा नहीं मिला। सभी बच्चों में प्रतिभाएं होती हैं, लेकिन उन्हें मौका देने की जरूरत है। इन प्रतिभाओं को गढ़ने का काम अच्छा साहित्य ही कर सकता है। यही उनकी कोशिश है।

इन किताबों, फिल्मो और वीडियो से ऐसा ही प्रयास किया जा रहा है। लेकिन यह सीमित है, इस दिशा में और भी बहुत कुछ किया जा सकता है। छात्र, शिक्षक, समाज, सरकार सभी को इस दिशा में काम करने की जरूरत है।

कुल मिलाकर, अरविंद गुप्ता का काम कई मायनों में उल्लेखनीय व प्रेरणादायक है। भारत सरकार ने उन्हें उनके कामों के लिए पद्मश्री से सम्मानित भी किया है। उन्हें कई अवार्ड भी मिले हैं। लेकिन इन सबसे अप्रभावित वे आज भी मिशन भाव से कई घंटे इस काम में लगे हैं। विशेषकर, जब भी तब वे कुछ सालों से अस्वस्थ हैं। उनके काम न केवल सराहनीय हैं, बल्कि अनुकरणीय भी है।

बीता सप्ताह

14 जून
- अहमदाबाद में एयर इंडिया फ्लाइट एफ आई-171 हादसे का ब्लैक बॉक्स इमारत पर मिला।
- शराब घोटाले में ईडी ने बड़ी कार्रवाई करते हुए छत्तीसगढ़ में सुकमा का कांग्रेस भवन अटेच किया।
- मानसरोवर झील की यात्रा का पहला जत्था जवाहरलाल नेहरू भवन से रवाना किया गया।
- सिराजगंज में रवींद्रनाथ टैगोर के पैतृक घर में तोड़फोड़ पर बांग्लादेश सरकार ने की कार्रवाई।

15 जून
- अहमदाबाद में विमान हादसे पर जांच कमेटी गठित की गई। केन्द्रीय गृह सचिव के नेतृत्व में गठित समिति 3 माह में रिपोर्ट देगी।
- इजराइली हमले में 138 ईरानियों की मौत हो गई।
- फार्मा कंपनी सन फामार्यास्युटिकल इंडस्ट्रीज लिमिटेड और उसकी सहायक कंपनियों ने कीर्ति गणोरकर को प्रबंध निदेशक नियुक्त किया है।
- दक्षिण अफ्रीका ने पहली बार वर्ल्ड चैम्पियन का खिताब जीता।

16 जून
- उत्तराखंड केदारनाथ में गौरीकुंड के पास हेलीकाप्टर क्रेश होने से सात लोगों की मौत हो गई।
- अहमदाबाद विमान हादसा में पूर्व सीएम विजय रूपाणी के शव की पहचान हुई। आज 16 जून को अंतिम संस्कार हुआ।
- पीएम मोदी तीन देशों की विदेश यात्रा पर आज साइपस पहुंचे। साइपस के राष्ट्रपति निकोस क्रिस्टोडौलीडेस ने एयरपोर्ट पर स्वागत किया।
- अमेरिका के सभी 50 प्रांतो में ट्रंप की आव्रजन नीति के खिलाफ प्रदर्शन शुरू हुआ।

17 जून
- पीएम मोदी को मिला साइप्रस का सर्वोच्च नागरिक सम्मान।
- राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण की रिपोर्ट के अनुसार भारत में हर महीने औसतन 17 बाघों की मौत हो रही है।
- गृह मंत्रालय भारत सरकार ने आगामी जनगणना कराने के लिए अधिसूचना जारी की।
- ब्रिटेन की खुफिया एजेंसी (सीक्रेट इंटेलिजेंस सर्विस) एमआई-6 के 116 साल के इतिहास में पहली बार महिला प्रमुख (ब्लेज मेट्रेवेली) नियुक्त हुई।

18 जून
- एक दिन में एयर इंडिया की सात उड़ाने रद्द की गई।
- सुप्रीम कोर्ट ने अभिनेता कमल हसन की मुख्य भूमिका वाली फिल्म ठग लाइफ के प्रदर्शन पर कर्नाटक द्वारा लगाए प्रतिबंध से नाराज हुए और सरकार से 24 घंटे के भीतर मांगा जवाब।
- जी-7 समिट में 7 देशों ने कहा कि इजरायल को आत्मरक्षा का अधिकार है।
- वैज्ञानिकों ने पूर्वोत्तर भारत में खेजा पत्ते का 2.4 करोड़ वर्ष पुराना जीवाश्म।

19 जून
- छग सरकार ने एक अहम फैसला लिया कि प्रदेश में शहीद के परिजनों को दी जाएगी सरकारी नौकरी।
- छग के सुकमा के मारेडपल्ली मुठभेड़ में कुख्यात तीन नक्सली मारे गए।
- मोदी-ट्रंप की फोन पर हुई बात में पीएम मोदी ने कहा कि भारत किसी मध्यस्थता को नहीं मानता।
- ईरान के सुप्रीम लीडर अयातुल्ला खामेनेई ने ऐलान किया कि ईरान सरेंडर नहीं करेगा।

20 जून
- ईरान को लेकर रुस ने अमेरिका को चेतावनी दी कि अमेरिका ने दखल दिया तो गंभीर नतीजे भुगतने होंगे।
- ऑपरेशन सिंदुर के तहत ईरान में फंसे 110 भारतीयों को लेकर पहुंचा विमान।
- ट्रंप सरकार ने अमेरिका में फिर से सशर्त स्टूडेंट वीजा शुरू की।
- चार राज्यों के पांच विधानसभा सीटों के लिए 19 जून को मतदान हुआ। केरल, पं. बंगाल, गुजरात और पंजाब में।

आरएसएस की घातक विचारधारा के खिलाफ एकजुट संघर्ष सबसे महत्वपूर्ण काम

■ पी. सुधीर

25 जून, 1975 की आधी रात को आंतरिक आपातकाल की घोषणा के साथ शुरू हुई घटनाओं के अपमानजनक क्रम को याद करना थोड़ा असामान्य लग सकता है।

हालांकि, हमें ज्ञान के उन अमर शब्दों की याद आती है: 'जिन लोगों में इतिहास के सबक भूलने की प्रवृत्ति होती है, वे उन्हें दोहराने के लिए अभिशप्त होते हैं।' ये शब्द हमें भारतीय लोकतंत्र के इतिहास के उस काले अध्याय को फिर से देखने के लिए मजबूर करते हैं।

1960 के दशक के उत्तरार्ध में कांग्रेस पार्टी के सत्ता पर एकाधिकार को झटका लगा था, जिसमें विपक्षी दलों ने कई राज्यों में जीत हासिल की थी। जवाब में श्रीमती इंदिरा गांधी ने गरीबी हटाओ, बैंकों का राष्ट्रीयकरण और प्रिवी पर्स के उन्मूलन जैसे प्रगतिशील नारे लगाकर खुद को फिर से स्थापित किया। पारंपरिक राजनीतिक व्यवहार से हटकर उन्होंने राज्य स्तर के मजबूत नेताओं को दरकिनार करते हुए सत्ता को अपने हाथों में केंद्रित किया और सीधे जमीनी स्तर पर जनता से अपील की।

श्रीमती गांधी के ऐसे कदमों का उन्हें कुछ लाभ हुआ। हालांकि, बांग्लादेश मुक्ति संघर्ष के समर्थन में भारत के हस्तक्षेप ने उनके राजनीतिक आधिपत्य को वास्तव में मजबूत किया। अंततः एक स्वतंत्र बांग्लादेश की स्थापना और पाकिस्तान की निर्णायक हार ने उनके कद को काफी हद तक बढ़ा दिया। सोवियत संघ की उपस्थिति ने पाकिस्तान के सैन्य शासन को बचाने के उद्देश्य से संभावित अमेरिकी हस्तक्षेप को रोकने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

पीछे देखने पर, 1975 का आपातकाल, आज हम जिस पूर्ण-विकसित अधिनायकवाद का अनुभव कर रहे हैं, उसकी तुलना में लगभग अनुभवहीन अभ्यास लगता है। वर्तमान शासन को हटाना कठिन लग सकता है, परन्तु 1970 के दशक में आपातकाल के खिलाफ लड़ने के अनुभव से आत्मविश्वास बढ़ना चाहिए। आरएसएस की घातक साम्प्रदायिक विचारधारा का विरोध करने और लोकतंत्र को पुनः प्राप्त करने की इच्छाशक्ति।

इसने श्रीमती गांधी के कद को फिर से बढ़ा दिया जिसने1971 के आम चुनावों में उनकी जीत सुनिश्चित की। फिर भी, यह समग्र तस्वीर सीपीआई (एम) को नहीं रोक सकी, जो पश्चिम बंगाल विधानसभा में सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उभरी। लेकिन, इसे आगे बढ़ने नहीं दिया गया। 1972 के विधानसभा चुनावों में पूरी तरह से धांधली की गयी थी, जिसने लगभग आधे दशक तक अर्ध-फासीवादी दमन का मार्ग प्रशस्त किया। सत्तावाद का यह दौर 25 जून, 1975 की मध्यरात्रि को आपातकाल की घोषणा के साथ सहज रूप से जुड़ गया।

आपातकाल के दौरान, इंदिरा गांधी के राजनीतिक विरोधियों को जेल में डाल दिया गया था और प्रेस पर सेंसरशिप लगा दी गयी थी। उनके शासन में 10,000 से अधिक राजनीतिक विरोधियों, पत्रकारों और कार्यकर्ताओं को जेल में डाल दिया गया था। इस बीच, देश थोड़े ही समय पहले हुए पाकिस्तान के साथ युद्ध, सूखे और 1973 के वैश्विक तेल संकट से उपजी आर्थिक चुनौतियों की एक श्रृंखला से जूझ रहा था। बढ़ती बेरोजगारी और मुद्रास्फीति ने जनता के असंतोष और राजनीतिक विरोध को और बढ़ा दिया। इन बढ़ते दबावों के साथ-साथ श्रीमती गांधी की व्यक्तिगत असुरक्षा और कानूनी झटकों की भावना- विशेष रूप से उनकी लोकसभा सदस्यता खोने का खतरा- ने आपातकाल लगाने के निर्णय में योगदान दिया।

संक्षेप में, 1975 का आपातकाल राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक कारकों के संयोजन के कारण घोषित किया गया था। सरकार ने संविधान के अनुच्छेद 352 का इस्तेमाल किया, जो युद्ध, बाहरी आक्रमण या आंतरिक अशांति की स्थिति में आपातकाल की घोषणा की अनुमति देता है। आधिकारिक रूप से इसके औचित्य में राष्ट्रीय सुरक्षा और सार्वजनिक व्यवस्था के लिए खतरों का हवाला दिया गया, जिसके कारण मौलिक अधिकारों का निलंबन और कार्यपालिका में सत्ता का संकेन्द्रण हुआ।

आपातकाल की घोषणा के अनुमोदन के लिए वैधानिक प्रस्ताव पर बहस के दौरान, लोकसभा में सीपीआई (एम) समूह के नेता ए के गोपालन ने आपातकाल की ओर ले जाने वाली राजनीतिक गतिशीलता को उजागर करते हुए 21 जुलाई, 1975 को कहा: 'पिछले तीन वर्षों में अधिनायकवादी और एक-पक्षीय तानाशाही की प्रवृत्ति के बढ़ने के बारे में हमारी पार्टी द्वारा दी गयी चेतावनी नये आपातकाल की अचानक घोषणा के साथ सच साबित हुई है।' उन्होंने आगे कहा कि सत्तारूढ़ पार्टी द्वारा खुद को और अपने नेता को गहराते व्यक्तिगत और राजनीतिक संकट से निकालने का यह अचानक कदम ताकत का नहीं, बल्कि कमजोरी का संकेत है। इसे विपक्षी आवाजों और जनांदोलनों को कुचलने के लिए बनाया गया था। उन्होंने इस झूठे आख्यान को भी उजागर किया कि यह आपातकाल चरम दक्षिणपंथी और वामपंथी दुस्साहसवादियों के खिलाफ था।

इसके कारण जो अपरिहार्य था हुआ और इंदिरा गांधी के साथ कांग्रेस राजनीतिक हार से बच नहीं सकी। अठारह महीने का आपातकाल समकालीन भारतीय इतिहास में एक गंभीर विचलन और लोकतंत्र के घिनौने विघटन के रूप में दर्ज किया गया है। 1977 के लोकसभा चुनावों के बाद विपक्षी राजनीतिक ताकतों के एक व्यापक गठबंधन ने लोकतंत्र की बहाली सुनिश्चित की।

नरेंद्र मोदी 25 जून, 1975 को लगाये गये आपातकाल के दौर को याद करते हुए इसे भारत के 'संविधान पर एक काला धब्बा' बताते रहे हैं। उन्होंने घोषणा की है, 'आपातकाल के बाद से ये 50 साल हमें अपने संविधान और लोकतंत्र की रक्षा गर्व के साथ करने की याद दिलाते हैं। देशवासियों को यह संकल्प लेना चाहिए कि ऐसा अपमान फिर कभी नहीं होने दिया जायेगा। हम एक जीवंत लोकतंत्र सुनिश्चित करने और भारतीय संविधान द्वारा उल्लिखित आम आदमी के सपनों को पूरा करने के लिए खुद को प्रतिबद्ध करते हैं।' हालांकि, यह दिखावा तेजी से एक बड़े धोखे में बदल रहा है - आरएसएस-भाजपा द्वारा भारतीय लोकतंत्र पर अपने सबसे घृणित हमले को छिपाने का एक प्रयास हो रहा है, जैसा कि पिछले 11 वर्षों के नरेन्द्र मोदी का कार्यकाल में सामने आया है।

पचास साल बाद पीछे मुड़कर देखें तो आपातकाल को भारत की लोकतांत्रिक व्यवस्था पर पहला बड़ा हमला माना जा सकता है - जिसने नागरिक स्वतंत्रता और लोकतांत्रिक अधिकारों को गंभीर रूप से सीमित कर दिया। लेकिन, जैसा कि कई लोग करते हैं, 1975 के आपातकाल और वर्तमान स्थिति के बीच सीधी तुलना करना एक गलती है। मोदी के शासन में पिछले दशक को अक्सर 'अघोषित आपातकाल' के रूप में संदर्भित किया जाता है, लेकिन ऐसी तुलना कई मामलों में गलत है।

साम्राज्यवाद के पक्ष में राजनीतिक ताकतों के बदलते सहसंबंध के बीच, अति-दक्षिणपंथी वैश्विक पुनरुत्थान की पृष्ठभूमि में वर्तमान परिदृश्य उभरा है। इस चरण ने वित्तीय पूंजी संचालित वैश्विक अर्थव्यवस्थाओं के युग की शुरुआत की है, जो तीव्र असमानता, बड़े पैमाने पर बेरोजगारी और भारी कॉर्पोरेट प्रभुत्व से चिह्नित है। इसके साथ ही पहचान-आधारित ध्रुवीकरण और एक निरंतर घृणा अभियान के अभूतपूर्व स्तर हैं, जो आर्थिक और सामाजिक दोनों क्षेत्रों में साथी नागरिकों को 'अन्य' बना रहे हैं।

इस प्रकार, लोकतंत्र और संवैधानिक सिद्धांतों पर वर्तमान हमला कहीं अधिक घातक है। इसने संस्थागत अधिनायकवाद को जन्म दिया है - या जिसे कुछ पर्यवेक्षक 'चुनावी निरंकुशता' कहते हैं।

भारतीय संदर्भ में, इस अधिनायकवादी बदलाव का नेतृत्व आरएसएस ने किया है, जिसने साम्प्रदायिक हिंदुत्व की जहरीली विचारधारा को बढ़ावा दिया है, जो भारत के मूल विचार को मौलिक रूप से बदलने का प्रयास करता है। भारत का यह विचार- उपनिवेशवाद विरोधी संघर्ष से पैदा हुआ -जो एक लोकतांत्रिक,धर्मनिरपेक्ष, सामाजिक रूप से न्यायपूर्ण और संघीय गणराज्य में निहित था। इसलिए वर्तमान हमला अधिक व्यापक और दमघोंटू है, जिसका उद्देश्य भारतीय नागरिकता के मूलभूत सिद्धांतों को नष्ट करना है।

पीछे देखने पर, 1975 का आपातकाल, आज हम जिस पूर्ण-विकसित अधिनायकवाद का अनुभव कर रहे हैं, उसकी तुलना में लगभग अनुभवहीन अभ्यास लगता है। वर्तमान शासन को हटाना कठिन लग सकता है, परन्तु 1970 के दशक में आपातकाल के खिलाफ लड़ने के अनुभव से आत्मविश्वास बढ़ना चाहिए। आरएसएस की घातक साम्प्रदायिक विचारधारा का विरोध करने और लोकतंत्र को पुनः प्राप्त करने की इच्छाशक्ति के साथ एकजुट लोग आज भी चुनौती का सामना कर सकते हैं और उससे पार पा सकते हैं।

छोटे बैंकों के डूबने की भी फ़िक्र करनी जरूरी है

भारतीय रिजर्व बैंक की पूर्ण स्वामित्व वाली एक सहायक कंपनी है जिसे डिपॉजिट इंश्योरेंस एंड क्रेडिट गारंटी कॉरपोरेशन (डीआईसीजीसी) कहा जाता है। यह कंपनी रिजर्व बैंक विनियमित बैंकों में किसी बैंक के पतन की स्थिति में बचतकर्ताओं की सुरक्षा के लिए प्रति ग्राहक अधिकतम 5 लाख रुपये तक सभी जमा राशियों का बीमा करती है। अब नवीनतम बैंक पतन पर विचार करें। यह एक छोटा बैंक है जिसने बैंकिंग प्रणाली में कुछ सबसे गरीब और कमजोर जमाकर्ताओं को चोट पहुंचाई है। यह देखते हुए कि बैंक छोटा है, इसका नेटवर्क सीमित है और जमाकर्ताओं का कोई प्रभाव नहीं है इसलिए इसकी कोई चर्चा नहीं है। यह न्यू इंडिया कोऑपरेटिव बैंक एक शहरी सहकारी बैंक है जिसका मुख्यालय मुंबई में है। यह बैंक 13 फरवरी, 2025 को दीवालिया हो गया। इसके जमाकर्ताओं में ऑटो व टैक्सी ड्राइवर, छोटे बचतकर्ता, सब्जी विक्रेता, छोटे स्टोर के मालिक जैसे लोग शामिल हैं। अब उनके व्यवसाय मंझधार में हैं।

यह एक बहु-राज्य अनुसूचित बैंक है जिसकी महाराष्ट्र और गुजरात में करीब 22 शाखाएं और कुल 6,000 जमाकर्ता हैं। बड़ी बैंकिंग प्रणाली का अर्थव्यवस्था में तेजी से प्रभाव बढ़ रहा है पर उसमें इन छोटे जमाकर्ताओं की कोई आवाज नहीं है।

जगदीश रत्तनानी

न्यू इंडिया जैसे सहकारी बैंक का पतन विशेष रूप से दर्दनाक है क्योंकि इसका इतिहास संगठित श्रमिकों से जुड़ा है। इसके संस्थापक तेजतर्रार समाजवादी, ट्रेड यूनियन नेता स्वर्गीय जॉर्ज फर्नांडीस (1930-2019) हैं जिनका जीवन भारतीय अर्थव्यवस्था के जमीनी स्तर पर लोगों के अधिकारों के लिए लड़ने के लिए समर्पित था।

छोटे जमाकर्ता बैंक के बाहर कतार में खड़े थे, पुलिस उनको नियंत्रित कर रही थी। इनमें कई वरिष्ठ नागरिक थे। सभी को आश्वासन दिया जा रहा था कि उनका पैसा सुरक्षित है और मई 2025 तक दूसरे खाते में भुगतान किया जाएगा। इनके फॉर्म भरे गए और जमा बीमा के लिए दावों को भेजा गया लेकिन तीन महीने बाद 13 मई 2025 को उन्हें पैसे निकालने से रोक दिया गया। बाद में प्रति जमाकर्ता अधिकतम 25,000 रुपये निकालने की अनुमति दी गई। डीआईसीजीसी की ओर से एक पंक्ति की सूचना आई कि 'डीआईसीजीसी ने न्यू इंडिया को-ऑपरेटिव बैंक लिमिटेड के जमाकर्ताओं को भुगतान करने के लिए उत्तरदायी होने की तारीख को 90 दिनों की अवधि यानी 12 अगस्त, 2025 तक के लिए बढ़ा दिया है।' सूचना में उन परिस्थितियों के बारे में कोई अन्य संदर्भ, स्पष्टीकरण या विवरण नहीं था जिनके तहत जमाकर्ताओं को तीन और महीनों तक इंतजार करने के लिए कहा गया है।

एक तरफ भारतीय बैंकिंग प्रणाली को वित्तीय रूप से अधिक समावेशी कहा जाता है जबकि दूसरी ओर कुछ सबसे गरीब जमाकर्ता अपने जीवन की बचत खोने के अंदेशे में खुद को अंधेरे में पाते हैं जिसे वे समझ नहीं सकते हैं। आरबीआई के डिप्टी गवर्नर एम. राजेश्वर राव ने पिछले पखवाड़े ही मुंबई में एक वित्तीय शिखर सम्मेलन में कहा था कि 'आरबीआई का वित्तीय समावेशन सूचकांक, जो पूरे देश में वित्तीय समावेशन की सीमा को दर्शाता है, मार्च 2023 में 60.1 से बढ़कर मार्च 2024 में 64.2 हो गया है जो वर्ष-दर-वर्ष 6.82 प्रतिशत की वृद्धि दर्शाता है।'

यह एक बड़ी तस्वीर की कहानी है जिसका शीर्षक तो अच्छा है लेकिन जब यह एक छोटे से पतन की छोटी तस्वीर में तब्दील हो जाता है जिसने अपने साथ आम नागरिकों की किस्मत और जीवन भर की कमाई ले ली है, जिसमें लोग जिंदा रहने के लिए संघर्ष करते हैं तो यह एक डरावनी कहानी में बदल जाती है। भले ही हम विकास और समावेश की एक बड़ी तस्वीर की कहानी का जश्न मना रहे हों लेकिन सरकारी कार्रवाई में ढिलाई, जमाकर्ताओं को जमा बीमा के भुगतान करने की अस्पष्ट धीमी गति और विस्तारित समय अवधि व बैंक में आपराधिक जांच के आलोक में उभर रहे भ्रष्टाचार के चौंकाने वाले खाते एक ऐसे भारत की कहानी बताते हैं जिसने अपने संचालन की परियोजना के मूल तत्वों और व्यवहारिक पहलुओं पर ध्यान केंद्रित नहीं किया ताकि आगे बढ़ने से पहले सब कुछ सुनिश्चित किया जा सके। पतन के बारे में उल्लेखनीय बात यह है कि बैंक अप्रत्याशित रूप से पूरी तरह से गायब हो गया है जैसे कि कुछ भी नहीं हुआ है। सिस्टम में सबसे कमजोर लोगों पर लगभग किसी का ध्यान नहीं गया। जिन्होंने बैंक पर रोजमर्रा की सेवा के लिए घरेलू संस्थान के रूप में भरोसा किया उनके लिए यह एक विनाशकारी प्रभाव है। इस मामले में 12,000 पन्नों की चार्जशीट दायर की गई है लेकिन यह अभी भी अपने पैसे का इंतजार कर रहे जमाकर्ताओं को बहुत कम सांत्वना देता है। पुलिस ने बताया कि कुछ आरोपी देश छोड़कर भाग गए हैं।

न्यू इंडिया जैसे सहकारी बैंक का पतन विशेष रूप से दर्दनाक है क्योंकि इसका इतिहास संगठित श्रमिकों से जुड़ा है। इसके संस्थापक तेजतर्रार समाजवादी, ट्रेड यूनियन नेता स्वर्गीय जॉर्ज फर्नांडीस (1930-2019) हैं जिनका जीवन भारतीय अर्थव्यवस्था के जमीनी स्तर पर लोगों के अधिकारों के लिए लड़ने के लिए समर्पित था। जब एक टैक्सी ड्राइवर को लाइसेंस-नियंत्रण-राज वाले दिनों में 'नियमित' बैंकों द्वारा ऋण देने से इनकार कर दिया गया तो फर्नांडिस ने टैक्सी ड्राइवरों को बैंक बनाने के लिए एकजुट किया। बड़े और कट्टर बैंकों ने जिन्हें छोड़ दिया गया था, इस बैंक ने यूनियन श्रमिकों, ऑटो चालकों और छोटे व्यवसायियों का स्वागत किया। नए, उदारीकृत भारत में यूनियनों को लंबे समय से भंग कर दिया गया है या कम से कम वे अपने दांत खो चुके हैं। जिस बैंक की स्थापना श्रमिकों की रीढ़ के रूप में की गई थी उसे अब अंदरूनी लोगों के एक समूह द्वारा लूट लिया गया है। आरोपियों में जॉर्ज फर्नांडिस के सहयोगी संस्थापक रंजीत भानु के परिवार के सदस्य भी शामिल हैं।

हालांकि सहकारी बैंकों में राजनेताओं, स्थानीय क्षेत्र के प्रभाव और आधुनिक प्रणालियों को धीमी गति से अपनाने के कारण सुशासन की कमी संभव हो सकती है लेकिन आरबीआई अपने पर्यवेक्षी कार्यों में विफल होने की जिम्मेदारी से बच नहीं सकता है। इन बैंकों पर स्पष्ट रूप से अलग ध्यान देने की आवश्यकता है क्योंकि वे छोटे हैं, वे अंदरुनी इलाकों में वित्तीय समावेशन का काम करते हैं और वे उन कुछ सबसे कमजोर व सबसे गरीब लोगों की जमा रकम पर चलते हैं जिन्होंने बैंकिंग प्रणाली पर भरोसा किया है। हाल के दिनों में बैंकों के दीवालिया होने की एक श्रृंखला देखी गई है जिनमें से न्यू इंडिया नवीनतम है। यह बात संरचनात्मक और शासन के मुद्दों को इंगित करती है जिन्हें आरबीआई प्रभावी ढंग से संबोधित करने में असमर्थ या अनिच्छुक रहा है।

इस साल मार्च में वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने राज्यसभा को बताया था कि पिछले तीन साल में 40 शहरी सहकारी बैंकों के लाइसेंस रद्द किए गए हैं। मंत्री ने आरबीआई के हवाले से कहा कि उसने पिछले तीन वर्षों में उधारकर्ताओं और उधारदाताओं के प्रति अपनी प्रतिबद्धताओं को पूरा करने में विफल रहने वाले संस्थानों में जमा और अग्रिम की राशि का बैंक-वार विवरण नहीं रखा है। इसके साथ ही आरबीआई द्वारा उन पर कोई कार्रवाई भी नहीं की गई है। बैंक विफलताओं की सूची का एक अनुलग्नक डीआईसीजीसी से आया है। इसने पिछले तीन वर्षों में 43 'बैंक विफलताओं' को सूचीबद्ध किया, उनमें से सभी सहकारी बैंक थे।

करीब पांच साल पहले एसबीआई ने निजी क्षेत्र के चौथे सबसे बड़े बैंक 'यस बैंक' को बचाया था। लोगों का विचार था कि यह संस्थान इतना बड़ा है कि वह विफल नहीं हो सकता क्योंकि वह लापरवाही या गलत कामों न करने के खिलाफ निहित गारंटी देता है। यह सच है कि अर्थव्यवस्था पर असाधारण विफलताओं से पड़ने वाले प्रभावों का जोखिम होता है, लेकिन न्यू इंडिया के मामले की तरह की अप्रत्याशित विफलताएं एक अलग तरह का नुकसान पहुंचाती हैं- वे लगभग अनदेखे, अनसुने लेकिन कम विघटनकारी नहीं होते। वे बैंकिंग प्रणाली और इसके पूरे नियामक ढांचे में आम नागरिक के विश्वास को खत्म करते हैं।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं। सिंडिकेट: द बिलियन प्रेस)

खेल जगत

ब्रिस्बेन हीट के लिए खेलेंगी जेमिमाह रॉड्रिग्स

नई दिल्ली। भारतीय टीम की स्टार बल्लेबाज जेमिमाह रॉड्रिग्स महिला बिग बैश लीग (डब्ल्यूबीबीएल) 2025 में हिट ब्रिस्बेन के लिए खेलेंगी। डब्ल्यूबीबीएल के गुरुवार को हुए ड्राफ्ट के दौरान रॉड्रिग्स को मेलबर्न स्टार्स ने अपनी पहली पसंद के रूप में चुना था, लेकिन ब्रिस्बेन हीट ने उन्हें रिटेन कर अपनी टीम में बनाये रखा। पिछले वर्ष हीट के लिए खेलते हुए रॉड्रिग्स ने 10 पारियों में 33 की औसत और 139 के स्ट्राइक रेट से एक अर्धशतक सहित कुल 267 रन बनाए थे। रॉड्रिग्स ने रिटेन पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए सोशल मीडिया मंच इंस्टाग्राम पर लिखा, मैं अपने परिवार के साथ वापस जुड़ गई हूं और टीम से जुड़ने के लिए और इंतजार नहीं कर सकती। यह रॉड्रिग्स का चौथा डब्ल्यूबीबीएल सत्र होगा। इससे पहले वह 2021-22 में रेनगेड्स और 2022-23 में स्टार्स की ओर से खेल चुकी हैं।

यशस्वी व केएल राहुल की मजबूत शुरुआत के बाद भारत ने दो विकेट गंवा लाभ गंवाया

इंग्लैंड ने लंच से पहले दो ओवर में दो विकेट खो की वापसी

■ सत्येन्द्र पाल सिंह

नई दिल्ली, 20 जून (देशबन्धु)। यशस्वी जायसवाल और केएल राहुल की सलामी जोड़ी ने इंग्लैंड द्वारा टॉस जीत कर पहले बल्लेबाजी की दावत दिए जाने पर एजबेस्टन, लीडस में पहले क्रिकेट टेस्ट में भारत ने संभल कर आगाज कर 91 रन जोड़ने के बाद लंच से पहले दो ओवर में दो विकेट गंवा पहली पारी में दो विकेट खोकर 92 रन बना बढ़िया आगाज का लाभ कुछ हद तक गंवा दिया। भारत का इंग्लैंड के खिलाफ पांच टेस्ट की तेंदुलकर एंडरसन ट्रॉफी और यह नई वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप 2025 -27 साइकिल का पहला टेस्ट है। तब यशस्वी जायसवाल 74 गेंद खेल कर आठ चौकों की मदद से 42 रन बना कर क्रीज पर टिके थे। केएल राहुल यदि लंच से इंग्लैंड ने पहले तेज गेंदबाज ब्रायडन कार्स की गेंद को ड्राइव करने से बचते तो भारत लंच तक बिना कोई विकेट खोए लंच तक मैदान से लौटता। पांच महीने के बार अपना पहला टेस्ट मैच खेल रही भारतीय क्रिकेट टीम को इंग्लैंड के कप्तान बेन स्टोक्स द्वारा टॉस जीत कर पहले बल्लेबाजी की दावत दिए जाने पर यशस्वी जायसवाल और केएल राहुल की जोड़ी ने जिस सकारात्मक अंदाज में बल्लेबाजी कर अपनी टीम को जैसी मजबूत शुरुआत दी उसके लिए इन दोनों की जरूर तारीफ की जानी चाहिए। यशस्वी जायसवाल ने इंग्लैंड की धरती पर अपना

पहला टेस्ट मैच खेलते हुए कुछ गेंदों पर परास्त होने के बावजूद सकारात्मक अंदाज दिखाया और ढीली गेंदों पर प्रहार कर अपने और भारतीय टीम के लिए केएल राहुल के साथ रन जोड़े। यशस्वी व केएल राहुल की सलामी जोड़ी ने भारत की पहली पारी का आगाज कर 15ओवर में पहले घंटे मे 52 रन जोड़े। भारत ने लंच से छह मिनट पहले पारी के 25 वें ओवर की अंतिम पूर्व गेंद पर केएल राहुल (42 रन, 78 गेंद, आठ चौके) के रूप में पहला विकेट 91 रन खोया। केएल राहुल ने कार्स की देर से मूव होती गेंद को ड्राइव करने की कोशिश की लेकिन गेंद उनके बल्ले का बाहरी किनारा लेकर पहली स्लिप में उनका कैच लपक आउट कर पैवेलियन लौटाया।

भारत के लिए दोबारा टेस्ट क्रिकेट खेलने की भूख ने मुझे आगे बढ़ाया : नायर

लीड्स। भारतीय टीम में वापसी करने वाले करुण नायर शुक्रवार से इंग्लैंड के खिलाफ शुरू हो रही पांच मैचों की टेस्ट सीरीज में भारत के लिए अच्छा प्रदर्शन करने को बेताब हैं। आठ साल के अंतराल के बाद भारतीय टेस्ट टीम में वापसी करते हुए, नायर ने खुलासा किया कि देश के लिए फिर से खेलने के उनके दृढ़ निश्चय ने उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। बीसीसीआई की ओर से शेयर किए गए वीडियो में नायर ने कहा कि जब मैं उठा तो मेरा पहला विचार यह था कि मैं टेस्ट क्रिकेट खेलना चाहता हूं, मैं फिर से भारत के लिए खेलना चाहता हूं। शायद यही बात मुझे आगे बढ़ने और भूख बनाए रखने में मदद करती रही। यह हर दिन प्रशिक्षण के लिए जाने और हर दिन अभ्यास करने के लिए प्रेरित करती रही। उस विश्वास को कभी न खोना और उस लक्ष्य को प्राप्त करना कुछ ऐसा था जिसने मेरी मदद की। इस जर्सी को पहनकर और अपने देश का प्रतिनिधित्व करके सम्मानित महसूस कर रहा हूं। उन्होंने कहा कि जब मैंने पहली बार सभी को देखा, तब मुझे वास्तव में लगा कि मैं आखिरकार टीम में हूं। तब तक यह मेरे लिए एक तरह से इंतजार था।

अहमदाबाद विमान हादसे के मृतकों को श्रद्धांजलि काली पट्टी बांध कर मैदान में उतरे खिलाड़ी

लीड्स, 20 जून (एजेंसियां)। अहमदाबाद में हुए विमान हादसे में मारे गए लोगों के सम्मान में हेडिंग्ले में एंडरसन-तेंदुलकर ट्रॉफी के पहले टेस्ट के पहले दिन भारत और इंग्लैंड टेस्ट टीम के खिलाड़ी काली पट्टी बांधकर मैदान में उतरे। दोनों टीम के बीच सीरीज का पहला मुकाबला शुरू होने से पहले खिलाड़ियों ने स्टेडियम में मौन भी रखा। दोनों टीमों ने पिछले सप्ताह अहमदाबाद में एयर इंडिया विमान हादसे में मारे गए लोगों की याद में टेस्ट मैच के पहले दिन काली पट्टियां बांधी।

ईसीबी ने कहा कि दोनों देशों के राष्ट्रगान से पहले एक मिनट का मौन रखा गया। हमारी संवेदनाएं पिछले सप्ताह अहमदाबाद में हुई भयानक घटनाओं से प्रभावित सभी लोगों के साथ हैं। विमान हादसे में 200 से अधिक लोगों की मौत हुई। इसमें भारतीयों के साथ ब्रिटिश नागरिक थे।

भारतीय टेस्ट टीम के उपकप्तान ऋषभ पंत ने सीरीज से पहले प्रेस कांफ्रेंस में बताया था कि अहमदाबाद विमान हादसे के कारण माहौल गमगीन हो गया है।

एंडरसन-तेंदुलकर ट्रॉफी

अहमदाबाद विमान हादसे के कारण माहौल गमगीन हो गया है। इस सीरीज में खिलाड़ी देश को फिर से खुश करने का तरीका ढूंढेंगे : ऋषभ पंत, उपकप्तान,

इस सीरीज में खिलाड़ी देश को फिर से खुश करने का तरीका ढूंढेंगे। उन्होंने कहा, ''विमान हादसे में जो कुछ हुआ, मुझे लगता है कि पूरा भारत इससे निराश है। लेकिन हमारी तरफ से एकमात्र बात यह है कि हम उनके साथ हैं और हम देशवासियों को फिर से कैसे खुश कर सकते हैं। हम इस पर काम जारी रखेंगे। उन्होंने कहा कि आप भारत को हर समय खुश रखना चाहते हैं, लेकिन एक क्रिकेटर के तौर पर यह हर समय संभव नहीं है। लेकिन मैं अपनी तरफ से यह वादा कर सकता हूं कि हम अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करेंगे और अपना 200 प्रतिशत देंगे। बता दें कि भारत-इंग्लैंड टेस्ट सीरीज के पहले मुकाबले में मेजबान इंग्लैंड ने टॉस जीतकर भारत को बल्लेबाजी के लिए मैदान पर बुलाया है। इस टेस्ट के साथ दोनों टीमों के लिए विश्व टेस्ट चैंपियनशिप के नए चक्र की भी शुरुआत हो चुकी है।

ड्रॉ की तरफ बढ़ रहा श्रीलंका-बांग्लादेश गॉल टेस्ट

गॉल, 20 जून (एजेंसियां)। श्रीलंका और बांग्लादेश के बीच गॉल में खेला जा रहा टेस्ट चौथे दिन की समाप्ति के बाद ड्रॉ की तरफ बढ़ता दिख रहा है। स्टंप्स के समय बांग्लादेश ने दूसरी पारी में तीन विकेट के नुकसान पर 177 रन बनाकर कुल बढ़त 187 रन की कर ली थी। कप्तान नजमूल हसन शांतो 56 और मुशफिकुर रहीम 22 रन पर नाबाद हैं। बांग्लादेश को दूसरी पारी में पहला झटका सिर्फ 24 के स्कोर पर लगा जब अनामुल हक 4 रन बनाकर आउट हो गए। लेकिन, शादमान इस्लाम ने एक छोड़ संभालकर रखा। टीम का स्कोर जब 128 था, तब वह 76 रन बनाकर तीसरे विकेट के रूप में आउट हुए। मोमिनुल हक 14 रन बनाकर दूसरे विकेट के रूप में आउट हुए थे। नजमुल हसन शांतो 56 और मुशफिकुर रहीम 22 रन पर नाबाद हैं। दोनों चौथे विकेट के लिए अब तक नाबाद 49 रन जोड़ चुके हैं। इन दोनों बल्लेबाजों ने पिछली पारी में भी शतक लगाए थे। शांतो ने 148 और रहीम ने 163

■ कप्तान नजमूल हसन शांतो 56 और मुशफिकुर रहीम 22 रन पर नाबाद हैं।

रन की पारी खेली थी। गॉल टेस्ट के पांचवें दिन अगर श्रीलंकाई स्पिनर्स का जादू चला और बांग्लादेश ने दिन के शुरुआती घंटे में विकेट गंवाए तो यह मैच रोमांचक हो सकता है और नतीजे की अपेक्षा की जा सकती है, अन्यथा टेस्ट ड्रॉ की तरफ बढ़ रहा है। श्रीलंका ने अपनी पहली पारी में 485 रन बनाए थे और बांग्लादेश से 10 रन से पिछड़ गई थी। श्रीलंका के लिए पाथुम निसांका ने 187, कामिंदु मेंडिस ने 87 और दिनेश चांदीमल ने 54 रन की पारी खेली थी। बांग्लादेश के लिए नईम हसन ने पांच विकेट लिए थे, जबकि हसन महमूद ने तीन विकेट चटकाए। बांग्लादेश ने अपनी पहली पारी में 495 रन बनाए थे।

कैरेबियन टेस्ट सीरीज में नंबर चार पर बल्लेबाजी कर सकते हैं जोश इंग्लिश : एडम

मेलबर्न, 20 जून (एजेंसियां)। ऑस्ट्रेलिया के पूर्व बल्लेबाज एडम वोग्स ने जोश इंग्लिश को आगामी कैरेबियन टेस्ट सीरीज में नंबर चार पर बल्लेबाजी के लिए समर्थन दिया है। वेस्टर्न ऑस्ट्रेलिया के कोच वोग्स का मानना है कि विकेटकीपर-बल्लेबाज टेस्ट स्तर पर शीर्ष चार में शानदार प्रदर्शन कर सकता है, भले ही उनका प्रथम श्रेणी क्रिकेट में इस स्थान पर अनुभव कम हो।

क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया द्वारा मार्नस लाबुशेन को टीम से बाहर करने के ऐलान के बाद इंग्लिश को वेस्टइंडीज के खिलाफ बारबाडोस में होने वाले पहले टेस्ट के लिए शामिल किया गया है। चयनकर्ताओं ने यह भी पुष्टि की है कि स्टीव स्मिथ चोट के कारण बाहर रहेंगे। इंग्लिश और सैम कोंस्टस को सीधे रिप्लेसमेंट के रूप में शामिल किया गया है। हालांकि, प्लेइंग इलेवन और बल्लेबाजी क्रम अभी तय नहीं है। सैम कोंस्टस के उस्मान ख्वाजा के साथ ओपनिंग करने की उम्मीद है, क्योंकि चयनकर्ता वेस्टइंडीज दौरे और एशेज के

लिए एक स्थिर सलामी जोड़ी बनाना चाहते हैं, जो 12 टेस्ट मैचों में पांच अलग-अलग संयोजनों के साथ खेला जाएगा। स्मिथ के ग्रेनाडा में होने वाले दूसरे टेस्ट में वापस आने की उम्मीद है। इसलिए संभावना है कि कैमरून ग्रीन हाल ही में विश्व टेस्ट चैंपियनशिप फाइनल में विफल होने के बावजूद तीसरे नंबर पर ही रहेंगे। इससे इंग्लिश को नंबर 4 पर जगह मिल सकती है, ताकि स्मिथ की वापसी पर ज्यादा बदलाव न करना पड़े। ट्रेविस हेड पांचवें नंबर पर मजबूती से टिके हुए हैं। ईएसपीएनक्रिकइन्फो ने वोग्स के हवाले से कहा कि विकेटकीपर होने के कारण आमतौर पर नीचे बल्लेबाजी करनी पड़ती है। हमने कुछ साल पहले जोश को तीसरे नंबर पर बल्लेबाजी और विकेटकीपिंग के लिए आजमाया था, जो हमेशा मुश्किल होता है। उन्होंने कहा कि हमने ऐसा इसलिए किया, क्योंकि हमें लगा कि तकनीकी रूप से वह इस भूमिका को निभाने में सक्षम हैं। मुझे लगता है कि बिना विकेटकीपिंग के बोझ के, वह इस भूमिका को भर सकते हैं और अगर आप एशेज सीजन के दौरान टेस्ट टीम की संरचना की बात करें, तो मुझे लगता है कि ये तीन टेस्ट कई खिलाड़ियों के लिए और खास तौर पर जोश के लिए इस भूमिका में अपनी दावेदारी पेश करने का शानदार मौका हैं। 30 साल की उम्र में इंग्लिश इस साल सभी प्रारूपों में अच्छा प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ियों में से एक हैं। उन्होंने श्रीलंका में अपने टेस्ट डेब्यू पर नंबर पांच पर बल्लेबाजी करते हुए शतक बनाया था, यह उस पोजीशन पर उनका पहला शतक था। नंबर तीन और नंबर चार पर उनका अनुभव और भी कम है। 2019 में वेस्टर्न ऑस्ट्रेलिया के लिए नंबर तीन पर छह पारियों में उनका औसत 12.66 रहा और नंबर चार पर उन्होंने सिर्फ एक बार 2015 में 44 रन बनाए।

सार संक्षेप

क्रिकेट पर सट्टेबाजी कर रहे दो आरोपी गिरफ्तार

भीलवाड़ा। राजस्थान में भीलवाड़ा जिले के सदर थाना क्षेत्र में पुलिस ने लाखों रुपए के ऑनलाइन सट्टेबाजी के कारोबार का भंडाफोड़ करते हुए दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। पुलिस सूत्रों ने शुक्रवार को बताया कि गुरुवार को रात में ईरास 100 फुट रोड पर तमिलनाडु क्रिकेट मैच पर सट्टा लगाते हुए विनोद जाट को गिरफ्तार किया। जांच के बाद तीन और नाम सामने आए जिनमें मनीष, फजल और दीपक के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की गई है। एक अन्य कार्रवाई के तहत पुलिस ने ईरास रोड पर गोपी सिंधी को ऑनलाइन सट्टे के आरोप में पकड़ा है। गोपी ने यह काम आजाद नगर स्थित एक कारोबारी के लिए करना बताया है। पुलिस इन मामलों की जांच कर रही है।

बुब्लिक ने सिनर को हराकर हाले ओपन में किया उलटफेर

बर्लिन। कजाकिस्तान के टेनिस खिलाड़ी अलेक्जेंडर बुब्लिक ने हाले ओपन में बड़ा उलटफेर करते हुए इटली के दिग्गज टेनिस खिलाड़ी जैनिक सिनर को हराकर टूर्नामेंट अगले दौर में जगह बना ली है। गत चैंपियन सिनर गुरुवार को कजाकिस्तान के बुब्लिक से 3-6, 6-3, 6-4 से हार गए। अगस्त 2023 के बाद रैंकिंग के हिसाब से सिनर की यह बहुत बड़ी हार है। अगस्त 2024 के बाद से यह पहली बार है जब सिनर दुनिया के दूसरे नंबर के खिलाड़ी कार्लोस अल्कराज के अलावा किसी अन्य खिलाड़ी से हारे हैं। फ्रेंच ओपन चैंपियन कोको गॉफ को भी ग्रास-कोर्ट सीजन के अपने पहले मैच में आश्चर्यजनक हार का सामना करना पड़ा, बर्लिन ओपन में उन्हें चीन की वांग जिन्यू से 6-3, 6-3 से हार का सामना करना पड़ा। दुनिया की 48वें नंबर की खिलाड़ी वांग ने रोलांड गैरोस में जीत के 12 दिन बाद गॉफ को हराकर उनके सात मैचों की जीत का सिलसिला खत्म कर दिया। बर्लिन में खेले जा रहे हाले ओपन में ही दुनिया की नंबर एक खिलाड़ी एरिना सबालेंका ने दो दिनों तक चले मैच में स्विस रेबेका मासरोवा को 6-2, 7-6 (8-6) से हराया।

चोटिल स्मिथ, लाबुशेन बाहर, कोंस्टास और इंग्लिस की हुई पहले टेस्ट मैच में वापसी

सिडनी, 20 जून (एजेंसियां)। वेस्टइंडीज के खिलाफ अगले सप्ताह से शुरु होने वाले पहले टेस्ट मैच के लिए जहां ऑस्ट्रेलिया की टीम में सैम कोंस्टास और जॉश इंग्लिस की वापसी हुई है वहीं चोटिल बल्लेबाज स्टीव स्मिथ और मार्नस लाबुशेन वेस्टइंडीज के खिलाफ बारबाडोस में होने वाले पहले टेस्ट मैच से बाहर रखा गया है। ऑस्ट्रेलियाई चयन समिति ने बुधवार से शुरु होने वाले पहले टेस्ट से लगभग एक सप्ताह पहले सैम कोंस्टास और जॉश इंग्लिस की टीम में वापसी की घोषणा की है। स्मिथ को विश्व टेस्ट चैंपियनशिप (डब्ल्यूटीसी) के फाइनल में स्लिप पर क्षेत्ररक्षण के दौरान चोट लगी थी। समिति के अध्यक्ष जॉर्ज बेली ने शुक्रवार सुबह जारी एक बयान में कहा कि अपने सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने पर लाबुशेन इस टीम का एक बहुत ही महत्वपूर्ण सदस्य हो सकता है। उसे पता है कि उसका प्रदर्शन उस स्तर पर नहीं रहा है जिसकी हम या वह उम्मीद करते हैं। हम उसके खेल के उन क्षेत्रों पर उसके साथ काम करना जारी रखेंगे। उन्होंने कहा कि हमने स्टीव और लाबुशेन की जगह जोश और सैम को मौका देने का फैसला किया है। हम उन्हें अपने नवोदित टेस्ट करियर को आगे बढ़ाने का मौका मिलने पर उत्साहित हैं।

सीपीएल 2025 से पहले ट्रिनबागो नाइट राइडर्स ने ब्रावो को मुख्य कोच नियुक्त किया

त्रिनिदाद एंड टोबैगो, 20 जून (एजेंसियां)। ट्रिनबागो नाइट राइडर्स (टीकेआर) ने कैरेबियन प्रीमियर लीग (सीपीएल) 2025 के आगामी सीजन के लिए वेस्टइंडीज के पूर्व ऑलराउंडर ड्वेन ब्रावो को अपना नया हेड कोच नियुक्त किया है। ब्रावो के नेतृत्व में टीकेआर 17 अगस्त से ऐतिहासिक 5वें सीपीएल खिताब की तलाश में अपनी यात्रा शुरू करेगी। फ्रेंचाइजी ने एक बयान में कहा कि मैच जिताने वाले प्रदर्शनों और चैंपियनशिप क्षणों से भरे एक शानदार खेल करियर के बाद, ब्रावो अब एक नई भूमिका में बागडोर संभालेंगे, और डगआउट से नाइट्स की अगली पीढ़ी को प्रेरित और प्रशिक्षित करने के लिए तैयार हैं।ब्रावो ने 2013 से 2024 के बीच सीपीएल में 107 मैच

■ ब्रावो के नेतृत्व में टीकेआर 17 अगस्त से ऐतिहासिक 5वें सीपीएल खिताब की तलाश में अपनी यात्रा शुरू करेगी

खेले। उन्होंने 11 में से नौ सीजन में टीकेआर का प्रतिनिधित्व किया और पांच बार खिताब अपने नाम किया। जिसमें 2021 भी शामिल है, जब उन्होंने सेंट किट्स एंड नेविस पैट्रियट्स का नेतृत्व किया था। 129 सीपीएल विकेट और 1,155 रन के साथ, ब्रावो सीपीएल इतिहास के सबसे सफल क्रिकेटरों में से एक हैं। ब्रावो ने कहा कि टीकेआर का मुख्य कोच बनने का अवसर मिलना मेरे लिए सम्मान की बात है, यह एक ऐसी टीम है जो मेरे दिल के बहुत करीब है।

पंजाब, हरियाणा ने महिला वर्ग में, महाराष्ट्र और ओडिशा ने जीते पुरुष वर्ग के मुकाबले

चेन्नई, 19 जून (एजेंसियां)। प्रथम हॉकी इंडिया मास्टर्स कप 2025 के दूसरे दिन महिला वर्ग में पंजाब और हरियाणा ने अपने-अपने मैच जीते, जबकि पुरुष वर्ग में महाराष्ट्र और ओडिशा ने जीत दर्ज की। आज यहां खेले गये पहले मुकाबले में पंजाब ने महिला वर्ग में ओडिशा को 3-1 से हराया। पंजाब के लिए संगीता मिंज ने (तीसरे) मिनट, कैप्टन अमनदीप कौर ने (पांचवें) मिनट और नीति ने (26वें) मिनट में गोल किए, जबकि रंजीता बेक ने (50वें) हॉकी एसोसिएशन ऑफ ओडिशा के लिए एकमात्र सांत्वना गोल ही कर सकीं। दूसरे मैच में हरियाणा ने महिला वर्ग में तमिलनाडु को 8-4 से हराया। तमिलनाडु के लिए सुरेश रसना बाबू ने (दूसरे, 20वें) मिनट में गोल किए, जबकि क्रिस्टी एलेना एडवर्ड ने (40वें) और सौम्या ने (56वें) मिनट में एक-एक गोल किया। दूसरी ओर, चिंगशुबाम संगाई इबेमहाल ने (तीसरे, 10वें, 13वें) मिनट और सोनिका यादव ने (32वें, 49वें, 51वें) मिनट में गोलकर हैट्रिक बनाकर मैच को अपने प्रतिद्वंद्वी से दूर कर दिया। सुमन लता चुम्बक ने (26वें) और नीतू कुमारी (44वें) मिनट में एक-एक गोल करके टूर्नामेंट में पहली जीत सुनिश्चित की। पुरुष वर्ग में महाराष्ट्र ने मणिपुर को 7-1 से हराया। कप्तान धनंजय महादिक ने (34वें, 36वें) मिनट में दो गोल करके शीर्ष गोल स्कोरर रहे।

टिम पेन को ऑस्ट्रेलिया 'ए' पुरुष टीम का हेड कोच नियुक्त किया गया

मेलबर्न, 20 जून (एजेंसियां)। ऑस्ट्रेलिया के पूर्व टेस्ट कप्तान टिम पेन को बड़ी जिम्मेदारी दी गई है। उन्हें श्रीलंका के खिलाफ होने वाली सीरीज के लिए ऑस्ट्रेलिया ए पुरुष टीम का मुख्य कोच नियुक्त किया गया है। इस सीरीज की शुरुआत 4 जुलाई से डार्विन में श्रीलंका ए के खिलाफ सीरीज से होगी। डार्विन में श्रीलंका ए के खिलाफ सीरीज के लिए ऑस्ट्रेलिया ए के कोचिंग समूह में टिम पेन के साथ राष्ट्रीय तेज गेंदबाजी कोच एडम ग्रिफिथ, ऑस्ट्रेलियाई महिला टीम के सहायक कोच स्कॉट प्रेस्टिज, और नॉर्दर्न टेरिटरी क्रिकेट के पाथवे और डेवलपमेंट कोच ट्रेंट कीप शामिल होंगे। राष्ट्रीय टीमों के सीए कार्यकारी महाप्रबंधक बेन ओलिवर ने टिम पेन के ऑस्ट्रेलिया ए के मुख्य कोच के रूप में नियुक्ति पर प्रसन्नता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि टिम पिछले दो वर्षों से राष्ट्रीय कार्यक्रमों में सक्रिय रूप से योगदान दे रहे हैं और अब इस भूमिका में भविष्य के ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेटरों को निखारने के लिए अपने पैशन और आधुनिक कोचिंग अनुभव का उपयोग करेंगे। टिम का समृद्ध खेल और कोचिंग अनुभव उभरते खिलाड़ियों को अगले स्तर तक ले जाने में महत्वपूर्ण होगा। पेन ने 2009 और 2021 के बीच राष्ट्रीय टीम का प्रतिनिधित्व किया था। वह

पिछले दो वर्षों से राष्ट्रीय कार्यक्रमों में सक्रिय रूप से योगदान दे रहे हैं और अब इस भूमिका में भविष्य के ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेटरों को निखारने के लिए अपने पैशन और आधुनिक कोचिंग अनुभव का उपयोग करेंगे : टिम टिम पेन

ऑस्ट्रेलिया ए और एडिलेड स्ट्राइकर्स के लिए अपनी कोचिंग प्रतिबद्धताओं के अलावा आगामी सत्र में ऑस्ट्रेलियाई महिला टीम को कोचिंग सहायता प्रदान करना जारी रखेंगे। उन्होंने पिछले दो वर्षों के दौरान ऑस्ट्रेलियाई महिला टीम और ऑस्ट्रेलिया ए पुरुष कार्यक्रम के साथ सहायक क्षमता में काम किया है और गत दिसंबर में भारत के खिलाफ पीएम इलेवन को कोचिंग दी थी। इस बीच, गैर-अनुबंधित बाएं हाथ के स्पिनर जेडेन जेह को भी डार्विन में श्रीलंका के खिलाफ मल्टी-फॉर्मेट सीरीज के लिए ऑस्ट्रेलिया ए की टीम में शामिल किया गया है। जेह ने पिछले सीजन में एसीटी के खिलाफ अपने पहले सेकंड इलेवन मैच में 27 रन देकर पांच विकेट लिए थे। उसके बाद जंक्शन ओवल में हुए मैच में ग्लेन मैक्सवेल को बाउंड्री पर कैच आउट कराया था। उन्होंने साउथ ब्रिसबेन के लिए प्रीमियर क्रिकेट में 27 विकेट लिए हैं और 465 रन बनाए हैं। श्रीलंका ए सीरीज के लिए ऑस्ट्रेलिया ए टीम कुछ इस प्रकार है: सैम इलियट, मैट गिलकेस, ब्राइस जैक्सन, जेडेन जेह, कैम्पबेल केलावे, नाथन मैकस्वीनी, जैक निस्बेट, मिच पेरी, कर्टिस पैटरसन, ओलिवर पीक, जोश फिलिप, मैट रेनशॉ, जेसन संघा, लियाम स्कॉट, बिली स्टैनलेक, हेनरी थोर्नटन, जेक वेदरल्ड

जिंबाब्वे टेस्ट सीरीज बावुमा बाहर, केशव महाराज करेंगे कप्तानी

जोहान्सबर्ग, 20 जून (एजेंसियां।) हाल ही में साउथ अफ्रीका को अपनी कप्तानी में विश्व टेस्ट चैंपियनशिप का खिताब दिलाने वाले टेंबा बावुमा जिंबाब्वे के खिलाफ होने वाली दो टेस्ट मैचों की सीरीज से बाहर हो गए हैं। उनकी जगह स्पिन गेंदबाज केशव महाराज कप्तानी करेंगे। टेंबा बावुमा बाएं टखने में खिंचाव की वजह से जिंबाब्वे के खिलाफ टेस्ट सीरीज से बाहर हुए हैं। यह इंजरी उन्हें विश्व टेस्ट चैंपियनशिप के दौरान ही हुई थी, हालांकि तब उन्होंने इंजरी के साथ बैटिंग की थी और दूसरी पारी में 66 रन बनाकर टीम को चैंपियन बनाने में बड़ी भूमिका निभाई थी। क्रिकेट साउथ अफ्रीका ने सोशल मीडिया

■ टेंबा बावुमा बाएं टखने में खिंचाव की वजह से जिंबाब्वे के खिलाफ टेस्ट सीरीज से बाहर हुए है

प्लेटफॉर्म एक्स पर एक पोस्ट में लिखा, कि दक्षिण अफ्रीका क्रिकेट टीम के कप्तान टेंबा बावुमा बाएं पैर में हैमस्ट्रिंग खिंचाव के कारण जिम्बाब्वे के खिलाफ आगामी दो मैचों की टेस्ट श्रृंखला से बाहर हो गए हैं। बावुमा को लॉर्ड्स क्रिकेट ग्राउंड पर ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ आईसीसी विश्व टेस्ट चैंपियनशिप फाइनल के तीसरे दिन दक्षिण अफ्रीका की दूसरी पारी के दौरान बल्लेबाजी करते समय चोट लगी थी। चोट की गंभीरता का आंकलन करने के लिए उनका स्कैन किया जाएगा। उनकी अनुपस्थिति में केशव महाराज टीम की कप्तानी करेंगे। यह दो साल से कम समय में बावुमा की तीसरी हैमस्ट्रिंग इंजरी है। इससे पहले 2023 वनडे विश्व कप के दौरान चोट लगी थी। इंजरी के साथ वह ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ सेमीफाइनल खेले थे। भारत के खिलाफ बॉक्सिंग डे टेस्ट के दौरान भी उन्हें चोट लगी थी।

सार समाचार

विधायक ने वरिष्ठों का किया सम्मान

आष्टा, देशबन्धु। विधायक गोपालसिंह इंजीनियर ने नगर के वरिष्ठ नेताओं, कार्यकर्ताओ के निवास पर पहुच कर सौजन्य भेंट कर भाजपा के कार्यकर्ताओं एवं उनके परिजनों से मुलाकात कर उनके निवास पर सभी उपस्तिथ वरिष्ठ जनों से मुलाकात की । एवं कार्यकर्ताओ के साथ चर्चा कर वार्डो में चल रही पार्टी के कार्यक्रमो की जानकारी ली एवं आज शनिवार को अंतराष्ट्रीय योग दिवस पर कार्यक्रमो में सहभागिता की अपील की । विधायक नगर के वार्ड क्रमांक 1,2 के अलीपुर क्षेत्र के वरिष्ठ नेता, समाजसेवी मनोहरलाल पंड्या, मनोहर लाल पंड्या, राधारमण पंड्या, सिध्दनाथसिंह मालवीय, दिलीप वर्मा, मनोहरलाल वर्मा, मनोहर श्रीवास्तव, सुरेश धारवा का विधायक गोपाल सिंह इंजीनियर ने साफा बांध कर रामनामी दुपट्टे पहना कर स्वागत सम्मान किया । इस अवसर पर भाजपा के नेता सुशील संचेती, धनरुपमल जैन, अनमोल गेहलोत, मनोहर श्रीवास्तव, सूरज मेवाडा,रवि पंड्या, रमेश मेवाडा, गिरीश पंड्या, रमेश जैन आदि साथ थे ।

बूंदाबांदी ने बढ़ाई उमस कर रही लोगों को बेहाल

किसानों ने बुवाई के लिए तैयारियां की तेज, पर बारिश का इंतजार

गंजबासौदा, देशबन्धु। जून के महीने में शहर और ग्रामीण इलाकों में मानसून की पहली झलक देखने को मिली, जब गुरुवार एवं शुक्रवार को सुबह से ही बादलों के जमावड़े के साथ रुक-रुक कर हल्की बारिश होती रही। इस बारिश से किसानों में खरीफ फसल, खासकर उड़द एवं सोयाबीन की बुवाई की उम्मीद जगी है। हालांकि, किसान अभी भी अच्छी बारिश का इंतजार कर रहे हैं ताकि बुवाई शुरू कर सकें। गत दिवस हल्की बारिश से शहर की सड़कों पर जलभराव भी देखने को मिला। जून में कई बार बारिश हुई है, लेकिन यह छिटपुट रही है, कहीं बारिश हो रही है तो कहीं सूखा पड़ा है, जिससे गर्मी कम नहीं हो रही है।

ग्रामीण अंचल के किसानों को पर्याप्त बारिश के साथ बुवाई का बेसब्री से इंतजार है। गत दिवस कुछ क्षेत्रों में अच्छी बारिश हुई है, जिससे किसान बुवाई की तैयारी में जुट गए हैं। फूफैर के किसान संतोष शिल्पकार ने बताया कि बताया कि उनके उकायदा क्षेत्र में पर्याप्त बारिश हुई है, जिससे वे बुवाई कर सकते हैं। वहीं, राजेश कुमार का कहना है कि शहर और आसपास के इलाकों में इतनी बारिश नहीं हुई है कि बुवाई की जा सके और वे अभी भी पर्याप्त बारिश का इंतजार कर रहे हैं। बारिश को लेकर प्रशासन की तैयारियां दिखाई नहीं दे रही हैं, जिससे इस बार भी शहर में जलभराव की आशंका बनी हुई है। गुरूवार-शुक्रवार को क्षेत्र सहित ग्रामीण अंचलों में हुई हल्की बारिश से उमस के साथ गर्मी बढ़ गई है। सुबह हल्के बादलों के साथ बारिश हुई और दिन में तेज धूप के साथ उमस पड़ने लगी। जिससे लोगों को जन-जीवन अस्त व्यस्त-सा रहा। वहीं बिजली विभाग के द्वारा दिन में कई बार बिजली कटौती की जा रही है।

कांग्रेस नेत्री ने मुख्यमंत्री के नाम दिया तहसीलदार को ज्ञापन

टीकमगढ़, देशबन्धु। कांग्रेस की प्रदेश स्तरीय नेत्री श्रीमती किरण अहिरवार ने अन्य कांग्रेसियों एवं जतारा विधानसभा क्षेत्र की जनता जनार्दन के साथ एक ज्ञापन तहसीलदार जतारा को मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नाम दिया है जिसमें श्रीमती अहिरवार ने जतारा क्षेत्र में बिजली की भीषण समस्याओं का उल्लेख किया है।

श्रीमती अहिरवार ने कहा है कि जतारा क्षेत्र के करीब 20 ऐसे गांव हैं जहां महीनों से ट्रांसफार्मर खराब पड़े हुए है जहां लोग बिजली के लिए परेशान हो रहे हैं। बिजली उपलब्ध न होने से ग्रामीण नल जल योजना से वंचित हो रहे हैं वहीं स्वास्थ्य केदो पर लगाए गए एटीएम बूथ भी प्रभावित हो रहे हैं।

श्रीमती अहिरवार ने मध्य प्रदेश शासन पर यह आरोप भी लगाया कि अटल ज्योति योजना और मुख्यमंत्री ग्राम बिजली संबल योजना आदि का सरकार चाहे जितना गुणगान करें लेकिन धरातल पर ग्रामीणों की क्या हालत है यह तो समझ से परे है श्रीमती अहिरवार ने कहा कि ग्रामीण बिजली के लिए परेशान हो रहे हैं और सरकार ध्यान नहीं दे रही है उन्होंने प्रदेश के मुखिया से ऐसी भीषण समस्या से निजाद दिलाने की मांग की है और ज्ञापन मुख्यमंत्री के नाम दिया है प्रेस को भी व्हाट्सएप के माध्यम से श्रीमती अहिरवार ने प्रेस विज्ञप्ति जारी करते हुए तमाम यह जानकारी दी है।

पूर्व पार्षद अजीज अंसारी का निधन

आष्टा, देशबन्धु। नब्बे के दशक में स्थानीय राजनीति में मुखरता से सक्रिय रहे पूर्व पार्षद अजीज अंसारी का गुरुवार को निधन हो गया। वे प्रखर वक्ता होने के साथ सफल राजनीतिक निर्णयों में माहिर थे । समाजसेवा में भी वे उतनी ही तत्परता से सक्रिय रहते थे जीवन के अंतिम दिनों में वे अस्पताल में मरीजों की देखभाल और मार्गदर्शन में सक्रिय रहते थे। उनके निधन पर श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए पूर्व नपाध्यक्ष कैलाश परमार ने बताया कि दिवंगत नेता साहसी और सूझबूझ से भरे थे।

वे कांग्रेस की पिछली पीढ़ी के नेता थे वे जिला सहकारी संघ के भी अध्यक्ष रहे। हमारे साथ भी एक बुजुर्ग लेकिन सक्रिय पार्षद के रूप में उन्होंने नगरपालिका परिषद में काम किया था। उनका निधन कांग्रेस की अपूरणीय क्षति है। अजीज अंसारी के निधन की खबर से चाहने वालों में शोक की लहर फैल गई। पूर्व नपाध्यक्ष कैलाश परमार, वरिष्ठ पार्षद हिफजुर्रहमान भैया मियां, जिला कांग्रेस उपाध्यक्ष प्रदीप प्रगति, पूर्व पार्षद इदरीस मंसूरी, वरिष्ठ समाजसेवी नोशे खान, रसीद नेताजी, अतीक बारी, अजमतउल्लाह, हारून खां, मुश्ताक पहलवान, लइक खान सहित सैंकड़ों लोगों ने उनकी अंतिम यात्रा में शामिल होकर श्रद्धांजलि अर्पित की। साथ ही नरेंद्र कुशवाह केमिस्ट, अजीत जैन, संजय जैन आदि ने भी शोक संतप्त परिवार के प्रति संवेदना व्यक्त करते हुए दिवंगत नेता को श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

मृतक के घर पहुंचे विधायक ने दी श्रद्धांजली

बिजली गिरने से मौत, 4 लाख की आर्थिक सहायता देगी सरकार

आष्टा, देशबन्धु । विगत दिवस ग्राम शंभूखेड़ी में आकाशीय बिजली गिरने के कारण ग्राम शंभूखेड़ी निवासी कैलाश नारायण मेवाड़ा का दु:खद निधन हो गया था, एवं ग्राम के दो लोग आकाशीय बिजली की चपेट में आने से घायल हो गये थे । विधायक गोपालसिंह इंजीनियर ग्राम शंभूखेड़ी पहुचें एवं असमय दुखद निधन होने पर मृतक कैलाश नारायण मेवाडा के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर श्रद्धांजलि दी एवं शोकाकुल परिजनों के साथ बैठकर शोक संवेदना व्यक्त की । विधायक ने परिजनों से उस दिन घटी घटना की जानकारी ली एवं बताया की जल्द ही मृतक के परिजनों को 4 लाख की आर्थिक सहायता परिजन के खाते में पहुचेगी । साथ ही घटना दिन को आकाशीय बिजली की चपेट में आने से घायल हुए केदारनाथ एवं ज्ञानसिंह के स्वास्थ की जानकारी ली एवं उनके शीघ्र स्वस्थ होने की कामना की ।

हजयात्रा कर लौटे हाजी राईन का सब्जी मंडी अध्यक्ष कुशवाहा ने किया स्वागत

आष्टा, देशबन्धु। 45 दिवसीय हज यात्रा में नगर के प्रमुख सब्जी व्यापारी असलम राईन ने अपने नगर के लिए सुख समृद्धि एवं देश में भाई चारे बने रहने की ईश्वर से प्रार्थना की। हाजी असलम राईन की हज यात्रा के बाद सकुशल लौटने पर सब्जी मंडी अध्यक्ष तथा पूर्व पार्षद नरेंद्र कुशवाहा ने पुष्प माला एवं मिठाई खिलाकर स्वागत किया। इस अवसर पर सब्जी मंडी संरक्षक बाबुलाल कुशवाहा, हंसराज कुशवाहा, मनोज कुशवाहा, सुशील कुशवाहा, गबू कुशवाहा, मोहनलाल कुशवाहा, जफर राईन, जुबेर राईन, शुभम कुशवाहा, भय्यू भाई, विष्णु कुशवाहा, अकरम राईन, हेमंत बागवान, अभिषेक बागवान, देवकरण कुशवाहा, शंकर कुशवाहा,बाबुलाल कुशवाहा, पप्पु कुशवाहा, आदि ने भी असलम राईन को बधाई देते हुए उनका स्वागत किया ।

सागर आईजी ने थाने का निरीक्षण कर किया वृक्षारोपण

टीकमगढ़, देशबन्धु। पुलिस महानिरीक्षक सागर जोन डॉ हिमानी खन्ना ने टीकमगढ़ जिले के भ्रमण के दौरान पुलिस अधीक्षक मनोहर सिंह मंडलोई के साथ थाना देहात का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान पुलिस महानिरीक्षक द्वारा थाना परिसर, मालखाने, रिकॉर्ड रूम, जरायम, रजिस्टर, थाने पर रखे बलवा ड्रिल सामग्री जैसे बॉडीगार्ड, हेलमेट, जाली, लाठी आदि को भी चेक किया, थाने में हिस्ट्री सीट, सीसीटीएनएस प्रणाली, माइक्रोबीट प्रणाली का निरीक्षण किया गया।

पुलिस महानिरीक्षक डॉ. हिमानी खन्ना ने पुलिस अधीक्षक और देहात थाना स्टाफ के साथ थाना परिसर में 'वृक्षारोपण' किया एवं सभी उपस्थित पुलिस स्टाफ को वृक्षारोपण करने के लिए प्रेरित किया गया। इस अवसर पर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक सीताराम, एसडीओपी टीकमगढ़ राहुल कटरे, एसडीओपी जतारा अभिषेक गौतम, रक्षित निरीक्षक कनक सिंह चौहान, रक्षित निरीक्षक कैलाश पटेल, थाना प्रभारी देहात निरीक्षक चंद्रजीत यादव सहित थाना /चौकी प्रभारी एवं पुलिस स्टाफ उपस्थित रहा।

अभिभाषक संघ के चुनाव संपन्न, सेठी बने अध्यक्ष व भारती उपाध्यक्ष

भैरूंदा, देशबन्धु। अभिभाषक संघ नसरूल्लागंज (भैरूंदा) जिला सीहोर में वर्ष 2025 के लिए निर्वाचन प्रकिया संपन्न हुई। जिसमें निर्वाचन अधिकारी नीरज यादव एडवोकेट, सहायक निर्वाचन अधिकारी रविन्द्र योगी एडवोकेट, रितेश ठाकुर एडवोकेट, संतोष यादव एडवोकेट, अभिनव दुबें एडवोकेट, जितेन्द्र सिंह जाट एडवोकेट एवं पिंकी पटेल एडवोकेट द्वारा निर्वाचन प्रक्रिया संपन्न करवाई गई, ।अभिभाषक संघ निर्वाचन वर्ष 2025 में कोषाध्यक्ष पद पर महेन्द्र महेश्वरी एडवोकेट, ग्रंथापाल पद पर विनय सिंह राजपूत एडवोकेट एवं कार्यकारिणी सदस्य पद के लिए धूमसिंह पंवार एडवोकेट, हितेश अग्रवाल एडवोकेट एवं अनिल कुमार शर्मा एडवोकेट निर्विरोध निर्वाचित हुए । अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, सचिव, सहसचिव पद पर मतदान संपन्न हुआ। अध्यक्ष पद पर राजेश सेठी एडवोकेट को 55 वोट, मनोहर पंवार एडवोकेट 39 वोट एवं नोटा 2 वोट राजेश सेठी एडवोकेट अध्यक्ष पद के लिए 16 वोटों विजयी रहे। उपाध्यक्ष पद पर धर्मेन्द्र भारती एडवोकेट 59 वोट एवं लक्ष्मणसिंह पंवार एडवोकेट 35 वोट, नोट 2 वोट, धर्मेन्द्र भारती एडवोकेट 24 वोट से विजयी रहे। सचिव पद पर मार्तण्ड सिंह चौहान एडवोकेट 49 वोट, महेन्द सिंह सोलंकी एडवोकेट 46 वोट नोटा 01 वोट, मार्तण्डसिंह चौहान एडवोकेट 03 वोट से विजयी रहे।

सहसचिव पद पर उमाशंकर गौर एडवोकेट 78 वोट, ललित योगी एडवोकेट 17 वोट, नोटा 01 वोट उमाशंकर गौर एडवोकेट 61 वोट से विजयी रहे। निर्वाचन कार्यालय द्वारा एवं बार एसोसियेशन के सभी सदस्यों ने सभी निर्वाचितों और निर्विरोध सदस्यों का फूल-माला से स्वागत कर शुभकामनाऐं व बधाई दी।

पूर्व बीआरसी कपिल तिवारी का हृदयाघात से निधन, शिक्षक संगठनों में शोक

गंजबासौदा, देशबन्धु। गुरूवार की देर रात शहर के लिए एक बुरी खबर लेकर आई। नगर के मिलनसार शिक्षक एवं पूर्व बीआरसी कपिल तिवारी का हृदयघात से निधन हो गया। गुरूवार की रात्रि 9 बजे उनके निधन का समाचार मिलते ही पूरे शिक्षक संगठनों सहित शहर में शोक की लहर छा गई और उनके शुभचिंतक एवं मित्र उनके निवास पर पहुंचे और परिवार को सांत्वना दी। स्व. कपिल अपने सरल स्वभाव और हसमुख मिजाज को लेकर जाने जाते थे। शुक्रवार को गमहीन माहौल में पारासरी विश्राम घाट पर उनकी अंत्येष्ठी की गई। जिसमें हजारों की संख्या में शहर के गणमान्य नागरिकों ने शामिल होकर उन्हे श्रद्धाजंलि अर्पित की। उन्होंने बीआरसी पद पर रहते हुए शासकीय स्कूलों में शिक्षा के बुनियादी ढांचे को ठीक कर शिक्षा के स्तर को बढ़ाया था और वर्तमान में ग्राम नंदूपुरा के शासकीय स्कूल में अपनी शिक्षक के तौर पर सेवाएं दे रहे थे। गुरूवार की रात करीब 9 बजे वह घर पर थे और अचानक उन्हे सीने में दर्द हुआ। परिजन जब तक कुछ समझ पाते और उन्हें तत्काल निजी अस्पताल ले जाया गया लेकिन रास्ते में ही उनका निधन हो गया। उनके निधन पर समाजसेवी एवं शिक्षक संस्थाओं ने शोक व्यक्त किया है।

पुलिस ने 2 गुमशुदा महिला और युवक को किया दस्तयाब

टीकमगढ़, देशबन्धु। पुलिस अधीक्षक मनोहर सिंह मंडलोई के निर्देशन में थाना व चौकी क्षेत्रों के गुम इंसानों की दस्तयाबी के लिए जिला स्तर पर विशेष अभियान चलाया जा रहा है। इस अभियान के तहत थाना दिगौड़ा प्रभारी उप निरीक्षक संदीप सोनी के नेतृत्व में गठित पुलिस टीमों ने गत दिवस थाना दिगौड़ा अंतर्गत गुमशुदा दो महिलाओं व एक युवक को संभावित स्थानों से साइबर सेल और मुखबिर की सहायता से सकुशल दस्तयाब कर परिजनों के सुपुर्द किया।

पुलिस के मुताबिक थाना क्षेत्र के अंतर्गत ग्राम बर्माताल से 15 जून की शाम को 21 वर्षीय युवक दीपेश राय परिजनों को बिना बताए लापता हो गया था। पुलिस टीम ने दीपेश को दस्तयाब कर परिजनों के सुपुर्द किया है। दीपेश ने पुलिस को बताया कि वह अपने परिजनों से नाराज होकर मथुरा बिंद्रावन चला गया था। वहीं थाना क्षेत्र के एक गांव से 16 जून की शाम को 38 वर्षीय महिला अपने मायके से दिगौड़ा का कहकर आई थी, जो लापता हो गई थी। पुलिस टीम ने महिला को कोंच उत्तरप्रदेश के कुँवरपुरा गांव से दस्तयाब किया है। महिला ने पुलिस को बताया कि उसका पति से पारिवारिक विवाद हो गया था जिससे वह परिजनों को बिना बताए अपनी रिश्तेदारी कुँवरपुरा कोंच चली गई थी।

आशा, जागृति एवं संवाद इकाईयों की बैठकें आयोजित

टीकमगढ़, देशबन्धु। प्रधान जिला न्यायाधीश एवं अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण श्रीमती प्रवीणा व्यास की अध्यक्षता में 20 जून 2025 को विश्राम कक्ष में नालसा के विशेष साथी अभियान, डान, आशा, जागृति एवं संवाद इकाईयों के अंतर्गत बैठकों सह ओरिएंटेशन कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

कार्यक्रमों में प्रधान जिला न्यायाधीश श्रीमती प्रवीणा व्यास एवं सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण टीकमगढ़ श्रीमती सुनीता गोयल के माध्यम से नालसा द्वारा संचालित साथी अभियान के साथ नशा मुक्ति के संबंध में गठित डान इकाई, जागरूकता हेतु गठित जागृति इकाई, बाल विवह निषेध के संबंध में गठित इकाई एवं अनुसूचित जनजाति के उत्थान एवं योजनाओं के लाभ सुनिश्चित किए जाने हेतु गठित संवाद इकाई की जानकारी दी साथी अभियान के अंतर्गत जरूरतमंद एवं निराश्रित बच्चों को चिन्हित कर आधार कार्ड बनवाने एवं लोक कल्याणकारी योजनाओं का लाभ सुनिश्चित करने में सभी से अपेक्षित सहयोग प्रदान किए जाने का आहवान किया गया एवं साथी अभियान के अंतर्गत किये जाने वाले सर्वे एवं अभियान की प्रगति की समीक्षा की गई।

न्याय जागरूकता के लिए जमीनी स्तर पर सूचना एवं पारदर्शिता पहल जागृति योजना के संबंध में ओरिएण्टेशन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर टीकमगढ़ कलेक्टर विवेक श्रोत्रिय, कलेक्टर निवाड़ी व्ही.सी. के माध्यम से लोकेश कुमार जांगिड़, पुलिस अधीक्षक टीकमगढ़ मनोहर सिंह मंडलोई, पुलिस अधीक्षक निवाड़ी रायसिंह नरवरिया, मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट प्रियंक दुबे, न्यायाधीश राकेश जाटव, जिला कार्यक्रम अधिकारी महिला एवं बाल विकास विभाग उदल सिंह, मुख्य नगर पालिका अधिकारी टीकमगढ़ ओमपाल सिंह भदौरिया सहित नालसा के विशेष साथी अभियान, डान, आशा जागृति एवं संवाद इकाईयों के सदस्यगण आदि उपस्थित रहे।

वाहन चालक हर रोज कर रहे लोगों की जान के साथ खिलवाड़

बीमा लाईसेंस, परमिट नहीं फिर भी दौड़ रहे सड़कों पर वाहन

आष्टा, देशबन्धु। पुलिस द्वारा लगातार वाहन चालकों को यातायात का पाठ पढ़ाया जाता है। समय-समय पर जुर्माने के रूप में चालानी कार्रवाई की जाती है, लेकिन उसके बाद भी लापरवाह वाहन चालक स्वयं की जान को खतरे में डालते हुए अन्य वाहन में बैठी सवारियों को भी मौत के मुंह में धकेलने का प्रयास किया जाता है। नगर से ग्रामीण क्षेत्र एवं हाईवे रोड पर चलने वाले छोटे वाहन सवारियों को भेड़-बकरियों की तरह बैठाते तो है ही, वाहन में पीछे लटकाने से भी नहीं चूकते है। क्षमता से दोगुनी सवारियों को लाया व ले जाया जाता है। हद तो जब हो गई तो इन वाहन वाहन चालकों के पास न वाहन का बीमा होता है न कागज। और तो और चालक के पास लाईसंस तक नहीं होता है उसके बावजूद भी बिना रोक-टोक के चंद रूपयों के लालच में लोगों की जान के साथ खुले आम खिलवाड़ किया जा रहा है।

यातायात पुलिस की उदासीनता भी सामने आती है, जिसका खामियाजा आम नागरिकों को उठाना पड़ता है। ईश्वर न करे अगर कोई दुर्घटना घट जाए तो लोगों को किसी प्रकार की राहत तक नहीं मिलती है। आज हालत यह है कि आष्टा से सीहोर और भोपाल जाने वाले क्रूज, तूफान, मारूती वेन आदि वाहन चलाते हैं, जिनमें से अधिकांश वाहन चालकों के पास न परमिट है न बीमा फिर भी बेधड़क वाहनों को तेज गति से दौड़ाया जाता है। यही हालत अधिकांश बसों की है। चालक बस में क्षमता से दौगूनी सवारी बिठाने के साथ खड़ी भी की जाती है। चालक सवारी बैठाने के चक्कर में समय पर पहूंचने को लेकर वाहन को अधिक गति से दौड़ाते हैं। ऐसे हाल आष्टा से जावर, सोनकच्छ जाने वाले वाहनों की है। इसी प्रकार नगर से ग्रामीण क्षेत्र में आने जाने वाले वाहन चालकों ने तो सारी हदें पार कर दी है। वाहन के अंदर सवारी बैठाने के बाद सवारी को गेट पर लटकाते है, यहां तक की छत पर बैठाने से भी नहीं चूकते हैं। समय पर नहीं रोका गया तो कभी भी बड़ी दुर्घटना से इंकार नहीं किया जा सकता। सभी वाहन आरटीओ के अंतर्गत आते हैं लेकिन विभाग में बैठे जवाबदार अधिकारी ने महिनों से कोई कार्यवाही नहीं करने के कारण लापरवाह वाहन चालकों को हौंसले बुलंद हैं।

इनका कहना है

- रोज ही यातायात नियमों का पालन नहीं करने वाले वाहन चालकों के खिलाफ कार्यवाही की जा रही है। दस वाहन चालकों के खिलाफ चालानी कार्रवाई करते हुए उनसे 5 हजार रुपये का राजस्व वसूला गया। वाहन चेकिंग की यह कार्रवाई लगातार जारी रहेगी।

- ललित कुमार गुप्ता चौकी प्रभारी

ताप्ती तीरे

सार-समाचार

वॉलीबॉल क्लबों की बैठक आज, खेल विकास पर होगा गहराई से मंथन

बैतूल, देशबन्धु। जिले के वॉलीबॉल खिलाड़ियों का द्वितीय गेट टू गेदर आज 21 जून को शाम 5 बजे आयोजित किया जा रहा है। यह आयोजन भोगीतेड़ा स्थित किलेदार वेयरहाउस, बडोरा आठनेर रोड बैतूल में किया जाएगा। आयोजन की जानकारी देते हुए वॉलीबॉल कोच इंद्रसेन ठाकुर ने बताया कि इस कार्यक्रम में जिले के शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के समस्त क्लब संचालकों, निर्णायकों, खिलाड़ियों एवं वरिष्ठ खिलाडियों को विशेष रूप से आमंत्रित किया गया है। इस अवसर पर खिलाडियों के अनुभव साझा करने, खेल संसाधनों की स्थिति पर चर्चा करने और भविष्य की रणनीतियों पर निर्णय लेने की योजना बनाई गई है। जिले के अलग-अलग क्लबों से खिलाड़ी, प्रशिक्षक और खेलप्रेमी इस बैठक में शामिल होकर अपने सुझाव देंगे, ताकि बैतूल जिले की वालीबाल प्रतिभाओं को बेहतर मंच मिल सके। कार्यक्रम का समापन सामूहिक सहमति से तैयार किए गए निर्णयों के साथ होगा।

हरित योग दिवस पर आयुष विभाग ने किया पौधारोपण, दिलाया संकल्प

बैतूल, देशबन्धु। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की तैयारी जिला आयुष विभाग द्वारा जोर-शोर से की जा रही है। इसी कड़ी में शासकीय आयुर्वेद जिला चिकित्सालय बैतूल में हरित योग दिवस मनाया गया। इस अवसर पर पर्यावरण संरक्षण और योग को जोड़ते हुए पौधारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। पौधारोपण कार्यक्रम में नगर पालिका परिषद बैतूल के उपाध्यक्ष महेश राठौर, विवेकानंद वार्ड के पार्षद आनंद प्रजापति, इंदिरा वार्ड के पार्षद रघुनाथ राने और शंकर वार्ड के पार्षद बब्लू मालवी विशेष रूप से उपस्थित रहे। उनके साथ जिला आयुष अधिकारी डॉक्टर योगेश चौकीकर, आरएमओ डॉक्टर रीना चौकीकर एवं समस्त आयुष स्टाफ ने मिलकर पौधारोपण किया।

गर्मी की छुट्टियों के बाद स्कूलों में अब फिर से लौट आई है रौनक

बैतूल, देशबन्धु। ग्रीष्मकालीन लम्बी छुट्टियों के बाद जिले के सभी शासकीय और अशासकीय स्कूलों में फिर से रौनक लौट आई। स्कूल चलें हम थीम के अंतर्गत नन्हे-मुन्ने बच्चे अपनी यूनिफॉर्म पहनकर, पीठ पर बस्ता टांगकर उत्साह के साथ घरों से स्कूल के लिए निकल पड़े। बैतूल जिले में वर्तमान में मध्यप्रदेश शासन के स्कूल शिक्षा विभाग के अंतर्गत 1927 प्राथमिक और 876 मिडिल स्कूल संचालित हैं। इन स्कूलों में कक्षा पहली से आठवीं तक एक लाख से अधिक विद्यार्थी पंजीकृत हैं।

पिता जी की याद में किया पौधारोपण ताकि आने वाली पीढ़ी हो लाभांवित

आमला, देशबन्धु। खानापुर रोड पर पर श्री चंद्रशेखर सोनी धनश्री ज्वेलर्स ने अपने पिता स्व. श्री मंगलप्रसाद सोनी की स्मृति में पौधरोपण किया। उनके द्वारा लगाए गए आम के पौधे को बड़ा होते तक उसकी समुचित देखभाल का संकल्प भी लिया गया। एक संयुक्त बयान में दिलीप डोंगरे ,किशोर गुगनानी,चंद्रशेखर सोनी ने कहा कि इस रोड के दोनों तरफ पंक्तिबद्ध पेड़ होंगे, जिससे लोगों को हरियाली का लाभ मिलेगा। जल स्तर बढ़ेगा,तापमान कम होगा,नकारात्मक शक्तियां परास्त होंगी,दुर्घटनाएं नहीं होंगी और पक्षियों को उनका नैसर्गिक आशियाना भी मिलेगा,यह सपना मूर्त रूप ले इस पर हमें निरंतर प्रयास करते रहना है। इस अवसर पर चंद्रशेखर सोनी के साथ किशोर गुगनानी , राजेश सोनी,आशीष सोनी,संतोष बाबू अतुलकर,दिलीप डोंगरे, चंद्रकांत सोनी,ओमकार रावत नर्सरी वाले कनौजिया ,कमलेश सोनी उपस्थित थे।

कमाल है, गंभीर बीमारी को लोग हल्के में ले रहे हैं...

जेनेटिक ब्लड डिसऑर्डर सिकल सेल को लेकर हुई जागरूकता कार्यशाला

भीमपुर, देशबन्धु। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र भीमपुर में 19 जून को विश्व सिकल सेल जागरूकता दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर स्वास्थ्य केंद्र परिसर में विशेष कार्यशाला आयोजित की गई, जिसमें लोगों को इस गंभीर जेनेटिक बीमारी के प्रति जागरूक किया गया। कार्यशाला में खंड चिकित्सा अधिकारी डॉ दीपक निगवाल, चिकित्सा अधिकारी डॉ मोहम्मद आमिर, बीईई श्रीमती सी पद्माकर, बीपीएम तिवारी मोरले, बीसीएम श्रीमती पी.बावसे सहित अन्य स्वास्थ्यकर्मी उपस्थित रहे।

ऐसे समझें बीमारी की गंभीरता

डॉ दीपक निगवाल ने सिकल सेल एनीमिया के बारे में विस्तार से जानकारी देते हुए बताया कि यह एक वंशानुगत रक्त विकार है, जो माता-पिता से बच्चों में जीन के माध्यम से पहुंचता है। यह रोग शरीर की लाल रक्त कोशिकाओं को प्रभावित करता है। सामान्य तौर पर गोल आकार की आरबीसी, सिकल सेल रोग में दरांती के आकार की हो जाती हैं, जिससे उनका जीवनकाल कम हो जाता है और शरीर उन्हें तेजी से प्रतिस्थापित नहीं कर पाता। इसी कारण से रोगी को एनीमिया की समस्या हो जाती है। उन्होंने बताया कि इस रोग के प्रमुख लक्षणों में लगातार थकान महसूस होना, शरीर में दर्द रहना, सांस लेने में कठिनाई, पीलिया और बार-बार संक्रमण होना शामिल है। इस बीमारी का सबसे कारगर इलाज अस्थि मज्जा प्रत्यारोपण (स्टेम सेल ट्रांसप्लांट) है, लेकिन यह एक जटिल प्रक्रिया है जिसमें कई जोखिम शामिल रहते हैं। अन्य उपचारों में हाइड्रोक्सीयूरिया दवा, दर्द प्रबंधन, नियमित रक्त आधान और अन्य सहायक चिकित्सा पद्धतियों को शामिल किया जाता है। कार्यक्रम के अंतर्गत स्वास्थ्य केंद्र में संभावित सिकल सेल रोगियों का परीक्षण भी किया गया। इस दौरान कुल 46 लोगों की जांच की गई। डॉ निगवाल ने कहा कि समय पर पहचान और उचित प्रबंधन से इस बीमारी के प्रभाव को काफी हद तक कम किया जा सकता है।

न सर्वे के समय सूचना दी, न ही दिया मुआवजा...भोले किसानों के साथ हो रहा अन्याय

नियम कानून दरकिनार, खेतों में हाईटेंशन लाइन

बैतूल, देशबन्धु। जिले की जनता की सरलता का फायदा उठाकर कई बाहरी कंपनियों द्वारा अक्सर ही जिले में नियम कानून का उल्लंघन करते हुए कार्य किए जाते हैं। ऐसा ही एक मामला शाहपुर ब्लॉक से सामने आया है। यहां मेघा इंजीनियरिंग लिमिटेड की मध्यप्रदेश पॉवर ट्रांसमिशन पैकेज- 1 लिमिटेड द्वारा 220 केवी सतपुड़ा से इटारसी लीलो ट्रांसमिशन लाइन का निर्माण कार्य किया जा रहा है। इस कार्य हेतु किए गए सर्वे में ना तो प्रभावित होने वाले किसानों को शामिल किया गया और ना ही अब तक प्रभावित किसानों को मुआवजा ही दिया गया है। बावजूद इसके मध्य प्रदेश पावर ट्रांसमिशन पैकेज- 1 द्वारा किसानों के खेतों में धड़ल्ले से हाइटेंशन लाइन के फाउंडेशन खड़े कर दिए गए हैं। कुछ किसानों ने इस मामले में कानून सम्मत कार्य करने हेतु लिखित में आपत्ति व्यक्त की तो ठेका कंपनी द्वारा ऐसे किसानों के विरुद्ध कार्य में बाधा डालने की झूठी शिकायतें करते हुए उन्हें धमकाया जा रहा है। किसानों का कहना है कि कंपनी ने न तो अधिग्रहण की प्रक्रिया पूरी की है और न ही किसी तरह का मुआवज़ा निर्धारित किया गया है। इसके बावजूद ठेका कंपनी मेघा इंजीनियरिंग लिमिटेड द्वारा खेत में पोल के फाउंडेशन और तार डालने का कार्य प्रारंभ कर दिया गया है। बताया जाता है कि कंपनी किसानों पर भारतीय टेलीग्राफ अधिनियम 1885 (टेली कम्युनिकेशन एक्ट 2023) की धारा 10 व 16 (1) का हवाला देते हुए बार-बार प्रशासन के माध्यम से दबाव बना रही है जबकि जानकारों का कहना है कि ठेका कंपनी स्वयं ही भारतीय टेलीग्राफ एक्ट कि उक्त धाराओं का उल्लंघन कर रही है।

क्या कहता है कानून

भारतीय टेलीग्राफ अधिनियम, 1885 की धारा 10 और 16 के अनुसार बिजली कंपनियां लाइन बिछा सकती हैं, परंतु इसके लिए पहले भूमि स्वामी को सूचना देना, आपत्ति लेने का अवसर देना और नुकसान के बदले मुआवज़ा देना अनिवार्य है। इनमें से कोई भी प्रक्रिया कम्पनी ने निर्धारित समय पर नहीं की । अपितु जब किसानों ने आपत्ति लेना शुरू किया उसके बाद औपचारिकता के लिए उन्हें सूचना पत्र दिए गए। लेकिन इसके पहले ही रूट सर्वे फाइनल हो चुका था और किसानों के लिए कोई विकल्प नहीं बचा था। पावर ग्रिड कारपोरेशन ऑफ़ इंडिया लिमिटेड की राइट ऑफ वे नीति भारत सरकार (2016) के अनुसार सर्वे की प्रक्रिया पारदर्शी और रिकॉर्डेड होनी चाहिए। लेकिन यहां ऐसा भी नहीं हुआ है और जिन किसानों के खेत से लाइन निकालनी है उन्हें ही सर्वे के बारे में समय पर पता ही नहीं चला। फल स्वरुप आज किसानों की उपजाऊ भूमि दांव पर लगी हुई है।

किसानों का कहना है

मुझे सर्वे के पूर्व नोटिस नहीं मिला था। जब कंपनी के कर्मचारी मेरे खेत पर आए तो मैंने 30 जून 2024 को कलेक्टर और एमपीपीटीसीएल को शिकायत की। इसके बाद 30 जुलाई को कंपनी ने मुझे मुझे पहली बार लिखित में सूचना दी जिसमे भी कई झूठ लिखे गए । लेकिन जब सर्वे रूट पहले ही फाइनल हो चुका हो तो यह सूचना औपचारिकता मात्र ही है।

विशाल बत्रा, कृषक, सिलपटी

कंपनी ने 2023 में बरबतपुर रेलवे स्टेशन के पीछे सब स्टेशन बनाने के लिए जमीन खरीदी। इसके आधार पर ही लीलो लाइन का चुपचाप सर्वे कर लिया । जबकि होना यह चाहिए था कि लाइन का सर्वे पहले होता और सब स्टेशन उस सर्वे के हिसाब से बनता। लेकिन कंपनी ने खरीदी हुई जमीन का उपयोग करने के लिए अपनी सुविधा अनुसार काम किया है और किसानो की उपजाऊ जमीन को खराब करने का काम कर रहे हैं, जिसका मुआवजा भी नहीं दिया गया है।

अर्जुन चौरे, कृषक सिलपटी

हिसाब किताब कुछ नहीं, वेयरहाउस में छिपाकर रखी थी 39 पेटी अवैध शराब, मारा छापा

2 लाख 85 हजार की देशी-विदेशी शराब जब्त, आरोपी फरार

बैतूल, देशबन्धु। आबकारी विभाग द्वारा शराब माफियाओं के खिलाफ लगातार ताबड़तोड़ कार्रवाई की जा रही है। जिले में अवैध शराब के भंडारण और बिक्री पर रोक लगाने के लिए विशेष अभियान चलाया जा रहा है। इसी कड़ी में विभाग ने एक बार फिर बड़ी कार्रवाई को अंजाम दिया है। अपना ढाबा के पीछे बने वेयरहाउस पर छापेमारी कर बड़ी मात्रा में शराब जब्त की गई है। यह कार्यवाही जिला आबकारी अधिकारी अंशुमान सिंह चढार के मार्गदर्शन में तथा कलेक्टर नरेंद्र कुमार सूर्यवंशी के निर्देश पर की गई। विभाग को सूचना प्राप्त हुई थी कि ग्राम अनकावाड़ी स्थित अपना ढाबा के पीछे बने एक वेयरहाउस में अवैध रूप से शराब छिपाकर रखी गई है। सूचना को गंभीरता से लेते हुए आबकारी विभाग की टीम ने मौके पर दबिश दी।

दबिश के दौरान पता चला कि यह वेयरहाउस दीपक पटने के नाम पर है, जो मौके से फरार हो गया। तलाशी में वेयरहाउस से देशी और विदेशी मदिरा की कुल 39 पेटियां बरामद की गईं। इन पेटियों में कुल 366.24 लीटर शराब भरी हुई थी, जिसकी बाजार में अनुमानित कीमत 2 लाख 85 हजार 540 रुपये बताई जा रही है। जब विभाग ने वेयरहाउस में मौजूद व्यक्तियों से शराब के संबंध में दस्तावेज मांगे, तो कोई वैध हिसाब-किताब प्रस्तुत नहीं किया जा सका।

इस पर विभाग ने फरार आरोपी दीपक पटने के खिलाफ मध्यप्रदेश आबकारी अधिनियम 1915 की धारा 34(1)(ए) एवं 34(2) के तहत अपराध क्रमांक 76/25 दर्ज किया है। कार्यवाही के दौरान आबकारी उप निरीक्षक राजेश वट्टी, आबकारी आरक्षक सत्येंद्र सिकरवार, अक्षय हुरडे तथा नगर सैनिक राहुल गोस्वामी की अहम भूमिका रही। पूरी टीम ने सतर्कता से काम करते हुए बिना किसी रुकावट के कार्रवाई को सफलतापूर्वक अंजाम दिया।अवैध शराब की इस बड़ी खेप की जब्ती से यह स्पष्ट है कि जिले में अभी भी अवैध शराब का कारोबार सक्रिय है। हालांकि आबकारी विभाग के लगातार प्रयासों से ऐसे मामलों में कमी लाने की कोशिश की जा रही है। विभाग ने इस मामले में फरार आरोपी की तलाश तेज कर दी है और आगे भी इस तरह की कार्यवाहियों की चेतावनी दी है।

7 करोड़ के कार्यों का लोकार्पण, भूमिपूजन के बाद लोगों में दिखी विकास की ललक

आठनेर/बैतूल, देशबन्धु। आठनेर नगर परिषद क्षेत्र में शुक्रवार को लगभग 7 करोड़ रुपये लागत के विभिन्न विकास कार्यों का भूमि पूजन एवं लोकार्पण क्षेत्रीय विधायक हेमंत खंडेलवाल और भाजपा जिलाध्यक्ष सुधाकर पवार द्वारा किया गया। इस मौके पर निर्माणाधीन पार्क में पौधारोपण भी किया गया। विधायक हेमंत खंडेलवाल ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि आठनेर क्षेत्र में विकास कार्यों में कोई कसर नहीं छोड़ी जाएगी। विधायक निधि से नगर को ऑडिटोरियम सहित कई सौगातें दी गई हैं। इस अवसर पर मुख्यमंत्री शहरी संरचना विकास योजना के अंतर्गत चतुर्थ चरण में सीसी रोड चौड़ीकरण, डिवाइडर निर्माण, अमृत 2.0 जलपरी योजना, कायाकल्प योजना, स्वच्छ भारत मिशन योजना, शॉपिंग कॉम्प्लेक्स निर्माण तथा विभिन्न वार्डों में डामरीकरण कार्यों का भूमि पूजन किया गया। इसके साथ ही अमृत परियोजना के अंतर्गत नगर में 24 घंटे जल प्रदाय सुनिश्चित करने के लिए 33 केवी विद्युत कनेक्शन का भी लोकार्पण किया गया। कार्यक्रम में भाजपा जिला अध्यक्ष सुधाकर पवार ने कहा कि आठनेर के विकास की दिशा में यह कदम ऐतिहासिक है। नगर परिषद अध्यक्ष सुषमा मनोज जगताप ने कहा कि विधायक खंडेलवाल के नेतृत्व में नगर विकास की गति को नई दिशा मिली है। नगर परिषद उपाध्यक्ष विनय जीतपुरे ने सभी का आभार प्रकट किया। इस अवसर पर भाजपा मंडल अध्यक्ष गोवर्धन राने, कृष्णा गायकी, पार्षद प्रियंका राठौर, रीता झोड़, विभा जगताप, उमेश बारस्कर, अजय पोटफोड़े, किरण सावरकर, फारूक काजी आदि मौजूद रहे।

मालीखेड़ा में आदिवासियों के घर जेसीबी से गिराए

एडिशनल एसपी और अजाक थाना प्रभारी को सौंपा ज्ञापन, कार्रवाई की मांग

बैतूल, देशबन्धु। श्रमिक आदिवासी संगठन के सैकड़ों सदस्यों ने शुक्रवार को जिला मुख्यालय पर एकजुट होकर रैली निकाली और एडिशनल एसपी एवं अजाक थाना प्रभारी को ज्ञापन सौंपा। संगठन ने सुप्रीम कोर्ट के आदेश के पालन की मांग करते हुए कहा कि आदेश के बावजूद अब तक जांच नहीं हुई, जिससे आदिवासियों पर वन विभाग और पुलिस का अत्याचार जारी है। ज्ञापन में संगठन के सदस्यों रमेश काकोडिया, संतोष कलमे, श्रीराम, संतोष, राजकुमार, दिनेश, सुभाष, विनोद, शिवलाल, परसराम आदि ने बताया कि सुप्रीम कोर्ट ने हरदा, बैतूल और खंडवा के शिकायत निवारण प्राधिकरण को श्रमिक आदिवासी संगठन द्वारा हाईकोर्ट में दायर रिट पिटीशन में उठाए गए सभी मुद्दों की जांच करने का आदेश दिया था। हरदा प्राधिकरण ने 31 मार्च 2017 को अपनी रिपोर्ट भी सौंप दी थी, लेकिन बैतूल प्राधिकरण ने आज तक कोई जांच नहीं की है। संगठन ने बताया कि इस निष्क्रियता के चलते वन विभाग की ज्यादती एक बार फिर तेज हो गई है। 17 जून को भौरा रेंज के ग्राम मालीखेड़ा, पंचायत टोकरी में वनकर्मियों ने आदिवासी समुदाय के घरों और खेतों को गैरकानूनी तरीके से उजाड़ा। महिलाओं और पुरुषों के साथ मारपीट और गाली गलौज की गई। 19 जून को एक बार फिर बारिश के बीच जेसीबी मशीन से आदिवासियों के घर गिराए गए। जब ग्रामीणों ने वीडियो रिकॉर्डिंग की कोशिश की, तो वन कर्मियों ने वह वीडियो डिलीट करवा दिया। संगठन ने कहा कि ग्राम मालीखेड़ा हमारे पुरखों का गांव है और पिछले 25 से 30 वर्षों से हम लोग यहां रह रहे हैं, खेती कर रहे हैं। 2007 में भी वन विभाग द्वारा ऐसे ही अत्याचार किए गए थे, जिसे हमने उठाया था। इसके बाद सुप्रीम कोर्ट ने 2016 में स्पष्ट आदेश दिया कि सभी मुद्दों की जांच की जाए, लेकिन 9 वर्ष बीत जाने के बावजूद आज तक कोई कार्यवाही नहीं हुई। ज्ञापन में यह भी बताया गया कि 26 नवंबर 2024 को ही बैतूल शिकायत निवारण प्राधिकरण को लिखित शिकायत दी गई थी कि वन विभाग मालीखेड़ा गांव को दोबारा उखाड़ने की धमकी दे रहा है, फिर भी कोई रोकथाम नहीं की गई, जिससे यह हालिया घटना हुई।

पौधारोपण कर महिलाओं ने दी राहुल गांधी को जन्मदिन की शुभकामनाएं

बैतूल, देशबन्धु। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता राहुल गांधी के जन्मदिन पर महिला कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने पार्षद नंदिनी तिवारी के नेतृत्व में जय प्रकाश वार्ड में पौधारोपण अभियान चलाया। इस अवसर पर महिलाओं ने पौधे लगाकर राहुल गांधी के स्वास्थ्य, सफल, दीर्घायु और मंगलमय जीवन की कामना की। इस कार्यक्रम में बड़ी संख्या में महिला कार्यकर्ता उपस्थित रहीं। पौधारोपण में प्रेरणा शर्मा, पार्षद नंदिनी तिवारी, अनीता मसतकर, कांति मिश्रा, मीना जेधे, आंचल मासोदकर, वैशाली तोमर, रोशनी राठौर, गीता साबले, पूजा अतुलकर, कविता राठौर, देवी कुंभारे, कांति मिश्रा, लक्ष्मी आहाके और सोमती बारस्कर शामिल रहीं। महिलाओं ने बताया कि राहुल गांधी युवाओं और आम जनता की आवाज़ हैं। उनके जन्मदिन को इस बार पौधारोपण कर मनाने का उद्देश्य पर्यावरण के प्रति जागरूकता फैलाना और समाज को हरियाली की ओर प्रेरित करना है।

कलेक्टर कार्यालय में हुई जिला परामर्श दात्री समिति की बैठक, शिक्षकों की प्रमुख समस्या को दी आवाज, बोले: मांगें शीघ्र पूरी हों

उठा अनुकंपा नियुक्ति और वेतन भुगतान का मुद्दा

बैतूल, देशबन्धु। जिला कलेक्टर कार्यालय में 20 जून को जिला परामर्श दात्री समिति की बैठक हुई। अध्यक्षता अपर कलेक्टर राजीव रंजन श्रीवास्तव ने की। अनुसूचित जाति जनजाति अधिकारी कर्मचारी संगठन अजाक्स के जिला अध्यक्ष छत्रपाल सिंह मर्सकोले ने बैठक में कई बिंदुओं पर प्रशासन का ध्यान आकर्षित किया। उन्होंने तृतीय और चतुर्थ श्रेणी के पदों पर अनुकंपा नियुक्ति की प्रक्रिया में तेजी लाने की बात कही। साथ ही, नवनियुक्त कर्मचारियों को दिए जा रहे न्यूनतम वेतन की व्यवस्था समाप्त कर पूर्ण वेतन दिए जाने की मांग रखी।

मर्सकोले ने बताया कि कई सेवानिवृत्त अधिकारी और कर्मचारी विगत पांच वर्षों से अपने लंबित प्रकरणों को लेकर कार्यालयों के चक्कर काट रहे हैं, लेकिन अब तक उनका निराकरण नहीं हो सका है, जिससे उन्हें गंभीर आर्थिक संकट झेलना पड़ रहा है। उन्होंने प्रशासन से इन प्रकरणों का तत्काल समाधान करने की मांग की। बैठक में जनजातीय कार्य विभाग बैतूल के छात्रावास और आश्रमों में पदस्थ अंशकालीन और दैनिक वेतनभोगी कर्मचारियों की वेतन समस्या भी प्रमुख मुद्दा रही। बताया गया कि इन कर्मचारियों को पिछले छह माह से मानदेय नहीं मिला है, जिससे वे आर्थिक संकट में हैं। पूर्व में उन्होंने वेतन को लेकर धरना-प्रदर्शन भी किया था, फिर भी समय पर भुगतान नहीं किया जा रहा है। बैठक में मांग की गई कि इन कर्मचारियों को तत्काल वेतन भुगतान किया जाए और महंगाई दर के अनुरूप मानदेय बढ़ाया जाए। अजाक्स अध्यक्ष ने यह भी मांग रखी कि अनुकंपा नियुक्ति के अंतर्गत कार्यरत तृतीय और चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों को पदोन्नति के बाद सीपीसीटी परीक्षा से शासन स्तर पर छूट दी जाए। बैठक में प्राथमिक शिक्षकों की समस्याएं भी सामने आईं। बताया गया कि विकासखंड शिक्षा अधिकारी द्वारा कई शिक्षकों के क्रमोन्नति के एरियर का भुगतान रोका जा रहा है, जिसे तत्काल जारी किया जाए। साथ ही, 12 एवं 24 वर्ष की सेवा पूर्ण कर चुके शिक्षकों को क्रमोन्नति का लाभ अब तक नहीं मिला है, इस पर भी जिलाधिकारी से शीघ्र निर्णय लेने की मांग की गई। बैठक में विभिन्न संगठनों के पदाधिकारियों ने अपनी-अपनी मांगें रखीं। इनमें प्रमुख रूप से छत्रपाल सिंह मर्सकोले अजाक्स जिलाध्यक्ष, दिलीप गीते जिला अध्यक्ष शिक्षक संघ, सचिन राय जिलाध्यक्ष राज्य कर्मचारी संघ, एम.एल. चिल्हाटे जिला अध्यक्ष सहायक पशु चिकित्सा विभाग, सोहन राठौर अध्यक्ष मध्यप्रदेश कर्मचारी कांग्रेस संघ, संजय व्यास मध्यप्रदेश कर्मचारी संघ सहित अन्य संगठनों के प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

[अर्थ जगत]

सर्वाधिक बढने वाले शेयर

भारती एयरटेल	3.27 प्रतिशत
महिंद्रा एंड महिंद्रा	2.93 प्रतिशत
पावरग्रिड	2.38 प्रतिशत
रिलायंस	2.16 प्रतिशत
नेस्ले इंडिया	1.97 प्रतिशत

सर्वाधिक घटने वाले शेयर

श्री एम इंडिया	1.36 प्रतिशत
आदित्य बिड़ला रे	1.24 प्रतिशत
अडानी पावर	0.90 प्रतिशत
अडानी टोटल गैस	0.79 प्रतिशत
एसीसी	0.08 प्रतिशत

सर्राफा

सोना (प्रति दस ग्राम)स्टैंडर्ड	98,691
बिटुर	88,730
गिन्नी (प्रति आठ ग्राम)	39,795
चांदी (प्रति किलो) टंच हाजिर	1,06,775
वायदा	70,857
चांदी सिक्का लिवाली	900
बिकवाली	880

मुद्रा विनिमय

मुद्रा	क्रय	विक्रय
अमेरिकी डॉलर	77.85	90.26
पौड स्टर्लिंग	105.22	122.04
यूरो	88.88	103.09
चीन युआन	8.4	13.63

अनाज

देसी गेहूँ एमपी	2400-3000
गेहूं दडा	3100-3200
आटा	2800-2900
मैदा	2900-2950
चोकर	2000-2100

मोटा आनाज

बाजरा	1300-1305
मक्का	1350-1500
ज्वार	3100-3200
जौ	1430-1440
काबुली चना	3500-4000

शुगर

चीनी एस	4280-4380
चीनी एम	4500-4600
मिल डिलीवरी	3620-3720
गुड़	4400-4500

दाल-दलहन

चना	5700-5900
दाल चना	6700-6800
मसूर काली	7500-7600
उड़द दाल	9200-9300
मूंग दाल	9500-9600
अरहर दाल	8600-8700

पेट्रोल और डीजल की कीमतें अपरिवर्तित

नई दिल्ली। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कच्चे तेल की कीमतों में तेजी जारी रहने के बावजूद घरेलू स्तर पर पेट्रोल और डीजल के दाम अपरिवर्तित रहे, जिससे दिल्ली में पेट्रोल 94.72 रुपए प्रति लीटर तथा डीजल 87.62 रुपए प्रति लीटर पर पड़े रहे। तेल विपणन करने वाली प्रमुख कंपनी हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कार्पोरेशन की वेबसाइट पर जारी दरों के अनुसार, देश में आज पेट्रोल और डीजल की कीमतों में कोई बदलाव नहीं हुआ है। दिल्ली में इनकी कीमतों के यथावत रहने के साथ ही मुंबई में पेट्रोल 104.21 रुपए प्रति लीटर पर और डीजल 92.15 रुपए प्रति लीटर पर रहा।

इजरायल-ईरान संघर्ष से देश के चावल निर्यातकों को हो रहा नुकसान

नई दिल्ली, 20 जून (एजेंसियां)। इजरायल-ईरान संघर्ष का देश के चावल निर्यात पर काफी असर पड़ा है और ईरान जाने वाले चावल की शिपमेंट करीब रुक गई है। चावल निर्यातकों ने शुक्रवार को यह जानकारी दी।

चावल निर्यातक नरेंद्र मिगलानी ने कहा कि ईरान और इजरायल के बीच चल रहे युद्ध का असर भारत के चावल निर्यातकों पर पड़ा है। संघर्ष के कारण ईरान के रास्ते जाने वाले चावल का निर्यात बंद हो गया है, जिससे हरियाणा, पंजाब, दिल्ली व यूपी से निर्यात होने वाला करीब 1 लाख मीट्रिक टन चावल बंदरगाहों पर ही रुक गया है। उन्होंने आगे कहा कि भारत, ईरान को सबसे ज्यादा बासमती चावल का निर्यात करता है। उसके बाद सऊदी अरब और तीसरे नंबर पर इराक को चावल निर्यात करता है।

मिगलानी ने आगे बताया कि युद्ध के कारण निर्यात होने वाले चावल की कीमतों में करीब 1200 प्रति क्विंटल की गिरावट आ गई है। निर्यातकों की सबसे बड़ी चिंता ईरान में फंसे उनके चावल के पैसे और पोर्ट लैंड पर खड़े उनके चावल कंटेनर को लेकर है, क्योंकि ईरान में निर्यात होने वाले चावल का कोई इंश्योरेंस नहीं होता, जिस कारण अब निर्यातकों को

- ईरान को सबसे ज्यादा बासमती चावल का निर्यात करता है भारत
- करीब एक लाख मीट्रिक टन चावल बंदरगाहों पर ही रुका

करोड़ों रुपए के चावल खराब होने का डर सता रहा है। दूसरी ओर ईरान जाने वाले चावल के निर्यात के लिए परमिट सिर्फ चार महीने के लिए बनता है, जिसमें तय समय सीमा के अंदर निर्यातकों को चावल की डिलीवरी देनी होती है। यदि तय समय पर चावल नहीं पहुंचता तो परमिट कैंसिल हो जाता है। इससे निर्यातकों को नुकसान होता है।

हाल ही में जारी क्रिसिल की रिपोर्ट में कहा गया कि इजरायल और ईरान के साथ भारत का सीधा व्यापार कुल व्यापार का 1 प्रतिशत से भी कम है। ईरान को भारत का मुख्य निर्यात बासमती चावल है, इजरायल के साथ व्यापार

मध्य पूर्व में तनाव का भारतीय कंपनियों पर छोटी अवधि में होगा सीमित असर

नई दिल्ली। मध्य पूर्व में तनाव का अधिकांश भारतीय कंपनियों पर प्रभाव निकट भविष्य में सीमित रहने की उम्मीद है, क्योंकि कम पूंजीगत व्यय और कंपनियों की बैलेंस शीट की मजबूती संभावित कमजोरियों से सुरक्षा प्रदान करेगी। शुक्रवार को जारी क्रिसिल की रिपोर्ट में यह जानकारी दी गई। रिपोर्ट में बताया गया कि अगर यह विवाद लंबा चलता है तो कच्चे तेल की कीमतें बढ़ेगी और इससे महंगाई में इजाफा होगा। रिपोर्ट में कहा गया कि अभी तक मध्य पूर्व में जारी अनिश्चितताओं का भारतीय उद्योगों के वैश्विक व्यापार पर कोई खास असर नहीं पड़ा है। हालांकि, अगर स्थिति बिगड़ती है, तो बासमती चावल जैसे कुछ क्षेत्रों पर इसका ज्यादा असर पड़ सकता है और इस पर निगरानी की जरूरत होगी, जबकि उर्वरक और हीरे जैसे अन्य क्षेत्रों पर भी इसका कुछ असर पड़ सकता है। रिपोर्ट के मुताबिक, मध्य पूर्व क्षेत्र में अनिश्चितताओं ने वैश्विक कच्चे तेल के बाजारों को प्रभावित किया है, पिछले एक सप्ताह में ब्रेंट क्रूड 73-76 डॉलर प्रति बैरल (बीबीएल) की सीमा में बना हुआ है। वहीं, अप्रैल-मई 2025 के दौरान ब्रेंट क्रूड की औसत कीमत 65 डॉलर प्रति बैरल के ऊपर थी। अगर कच्चे तेल की कीमतें लंबी अवधि तक ऊंची बनी रहती हैं, तो इससे भारत कंपनियों के मुनाफे पर असर पड़ सकता है। इसके अलावा, रिपोर्ट में कहा गया है कि लंबे समय तक अनिश्चितताओं के परिणामस्वरूप निर्यात/आयात आधारित क्षेत्रों के लिए हवाई/समुद्री माल ढुलाई लागत और बीमा प्रीमियम में वृद्धि हो सकती है।

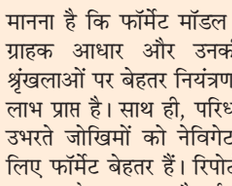

अधिक विविधतापूर्ण है और इसमें उर्वरक, हीरे और बिजली के उपकरण शामिल हैं।

रिपोर्ट में आगे कहा गया कि वित्त वर्ष 2025 में भारत के बासमती चावल निर्यात में ईरान और इजरायल का योगदान लगभग 14 प्रतिशत है।

केंद्र ने सोना युक्त कीमती मिश्र धातुओं के आयात पर लगाया प्रतिबंध

नई दिल्ली, 20 जून (एजेंसियां)। वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के संगठन विदेश व्यापार महानिदेशालय (डीजीएफटी) ने वजन के हिसाब से 1 प्रतिशत से अधिक सोने वाले पैलेडियम, रोडियम और इरिडियम के मिश्रधातुओं के आयात पर प्रतिबंध लगा दिया है। वाणिज्य मंत्रालय के एक बयान के अनुसार, यह उपाय प्लेटिनम के आयात पर मौजूदा प्रतिबंध का विस्तार करता है।

बयान में कहा गया है कि इसमें अब 4 अंकों के स्तर पर संपूर्ण कस्टम्स टैरिफ हेडिंग (सीटीएच) 7110 शामिल है, जिससे कीमती धातुओं और उनके मिश्र धातुओं को नियंत्रित करने वाली आयात नीति में एकरूपता सुनिश्चित होती है। बयान में आगे कहा गया है कि यह नीति 1 प्रतिशत से कम सोने वाले मिश्र धातुओं के मुफ्त आयात की अनुमति देकर व्यापार को सुविधाजनक बनाती है, जिससे इलेक्ट्रॉनिक्स, ऑटो कंपोनेंट और स्पेशल केमिकल इंडस्ट्री सहित औद्योगिक और विनिर्माण क्षेत्रों के लिए बिना किसी व्यवधान के इनपुट की निरंतर उपलब्धता सुनिश्चित होती है। यह कैलिब्रेटेड दृष्टिकोण व्यापार सुविधा को नियामक निगरानी की आवश्यकता के साथ संतुलित करता है।

इसके अलावा, डीजीएफटी ने सीटीएच 2843 के अंतर्गत आने वाले कोलाइडल मेटल और कंपाउंड के आयात को प्रतिबंधित करने के लिए एक अधिसूचना जारी की है।

कैमिकल कंपाउंड की आड़ में सोने के आयात को विनियमित करने के लिए यह आवश्यक था। डीजीएफटी ने कहा कि इलेक्ट्रॉनिक्स, इलेक्ट्रिकल और स्पेशल केमिकल इंडस्ट्री सहित औद्योगिक और विनिर्माण क्षेत्रों के लिए आयात प्राधिकरण के विरुद्ध आयात की अनुमति दी जाएगी, जिससे वास्तविक उपयोग के लिए बिना किसी व्यवधान के घरेलू उद्योग की आवश्यकता को पूरा किया जा सके।

मई में आठ मुख्य उद्योगों ने दर्ज की 0.7 प्रतिशत की वृद्धि

नई दिल्ली, 20 जून (एजेंसियां)। मई में आठ मुख्य उद्योगों (आईसीआई) के संयुक्त सूचकांक में पिछले साल के इसी महीने की तुलना में 0.7 प्रतिशत का इजाफा हुआ है। यह जानकारी वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय की ओर से शुक्रवार को जारी किए गए डेटा से मिली। सीमेंट, स्टील, कोयला और रिफाइनरी उत्पादों के उत्पादन में पिछले महीने सकारात्मक वृद्धि दर्ज की गई।

मंत्रालय ने कहा कि फरवरी, मार्च और अप्रैल के लिए आठ कोर उद्योगों के सूचकांक की अंतिम वृद्धि दर क्रमश: 3.4, 4.5 और एक प्रतिशत रही है। वित्त वर्ष 2025-26 के अप्रैल से मई के दौरान आईसीआई की संचयी

- सीमेंट व स्टील रहे सबसे आगे

वृद्धि दर पिछले वर्ष की इसी अवधि की तुलना में 0.8 प्रतिशत (अनंतिम) है।

मंत्रालय के आंकड़ों के अनुसार, मई 2025 में कोयला उत्पादन में पिछले साल की समान अवधि के मुकाबले 2.8 प्रतिशत की वृद्धि हुई। वित्त वर्ष 2025-26 के अप्रैल से मई के दौरान इसका संचयी सूचकांक पिछले वर्ष की इसी अवधि की तुलना में 3.1 प्रतिशत बढ़ा है।

भारतीय परिधान क्षेत्र में वर्ष 24-29 के दौरान 11 प्रतिशत की वृद्धि का अनुमान : एचएसबीसी

नई दिल्ली, 20 जून (एजेंसियां)। भारतीय परिधान क्षेत्र में वित्त वर्ष 2024-29 के दौरान 11 प्रतिशत के सीएजीआर से वृद्धि होने का अनुमान है। एचएसबीसी ग्लोबल इन्वेस्टमेंट रिसर्च के अनुसार, भारत के परिधान क्षेत्र में वित्त वर्ष 2020-24 के दौरान 11 प्रतिशत की सीएजीआर की वृद्धि हुई है, जो नॉमिनल जीडीपी और निजी अंतिम उपभोग व्यय (पीएफसीई) वृद्धि के अनुरूप है।

बढ़ती पहुंच और सामर्थ्य के कारण ब्रांडेड सेगमेंट में वित्त वर्ष 2012-24 के दौरान 16 प्रतिशत सीएजीआर देखी गई है। आगे बढ़ते हुए, विभिन्न परिधान सब-सेगमेंट में, गैर-औपचारिक परिधानों में सक्रिय परिधान (वित्त वर्ष 2024-29 में 25 प्रतिशत सीएजीआर

- ई-कॉमर्स, विदेशी ब्रांडों व बदलते फैशन से बाधित एक प्रतिस्पर्धी बाजार बना हुआ है परिधान

कोरोना के बाद के कैजुअल वियर के चलन से प्रेरित है) और संगठित मूल्य खुदरा (वित्त वर्ष 24-29 में 16 प्रतिशत सीएजीआर, असंगठित से बदलाव का सबसे बड़ा लाभार्थी) के साथ उच्च वृद्धि की उम्मीद है। रिपोर्ट में कहा गया है कि परिधान हालांकि ई-कॉमर्स, विदेशी ब्रांडों और बदलते फैशन साइकल से बाधित एक प्रतिस्पर्धी बाजार बना हुआ है।

रिपोर्ट में कहा गया है कि हमारा मानना है कि फॉर्मेट मॉडल को इसके ग्राहक आधार और उनकी आपूर्ति श्रृंखलाओं पर बेहतर नियंत्रण के कारण लाभ प्राप्त है। साथ ही, परिधान क्षेत्र में उभरते जोखिमों को नेविगेट करने के लिए फॉर्मेट बेहतर हैं। रिपोर्ट में रिटेल अवसर के आकार और ई-कॉमर्स से सीमित व्यवधान को देखते हुए वैल्यू फैशन फॉर्मेट को प्राथमिकता दी गई है।

इस बीच, भारत का कपड़ा और परिधान निर्यात पिछले वर्ष के इसी महीने की तुलना में अप्रैल 2025 में 7.45 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज करता है।

सार संक्षेप

मोंट्रा इलेक्ट्रिक ने लांच किया तिपहिया वाहन 'सुपर कार्गो'

नई दिल्ली। मुरुगप्पा ग्रुप के स्वच्छ मोबिलिटी ब्रांड मोंट्रा इलेक्ट्रिक ने सुपर कार्गो इलेक्ट्रिक थ्री-व्हीलर (तिपहिया वाहन) लॉन्च करने की घोषणा की जिसकी दिल्ली में शुरुआती एक्स शोरूम कीमत 4.37 लाख रुपए है। टीआई क्लीन मोबिलिटी प्राइवेट लिमिटेड के प्रबंध निदेशक जलज गुप्ता ने सुपर कार्गो को यहां लांच किया। नया सुपर कार्गो आकर्षक मूल्य प्रस्ताव के साथ अंतिम-मील (लास्ट माइल) उडब्ल्यू कार्गो खंड में आमूल बदलाव लाने के लिए तैयार है। ग्राहकों को सशक्त बनाने के लिए तैयार यह वाहन बेजोड़ रेंज और शक्ति प्रदान करता है, जो विभिन्न इलाकों में अधिक कमाई और सहज प्रदर्शन सुनिश्चित करता है। इस मौके पर कंपनी ने 200 से अधिक सुपर कार्गो की आपूर्ति के लिए समझौता भी किया। सुपर कार्गो में 13.8 केडब्ल्यूएच की लिथियम-आयन बैटरी है जो 170 किलोमीटर की श्रेणी में ऑन-रोड रेंज प्रदान करती है।

यूटेलसैट में भारती स्पेस करेगी 3.14 करोड़ यूरो का निवेश

नई दिल्ली। फ्रांसीसी उपग्रह ऑपरेटर यूटेलसैट के 1.35 अरब यूरो (11250 करोड़ रुपए) की पूंजी जुटाने की योजना के तहत भारती एंटरप्राइजेज का अंतरिक्ष उद्यम भारती स्पेस लिमिटेड 3.14 करोड़ यूरो का निवेश करेगा जो लगभग 313 करोड़ रुपए या 3.6 करोड़ डॉलर के बराबर है। पूंजी जुटाने का काम ऐसे समय में किया जा रहा है, जब सैटेलाइट इंटरनेट क्षेत्र में, खास तौर पर भारत में, गतिविधियां बढ़ गई हैं। यूटेलसैट द्वारा गुरुवार को जारी एक विज्ञप्ति के अनुसार, कंपनी का लक्ष्य नए फंड का इस्तेमाल कर्ज कम करने और सैटेलाइट तारामंडल में निवेश बढ़ाना है, क्योंकि यह वैश्विक अंतरिक्ष संचार बाजार में अपनी भूमिका को मजबूत करने के लिए काम कर रही है। यूटेलसैट 71.6 करोड़ यूरो (6,865 करोड़ रुपए) की आरक्षित पूंजी वृद्धि और 63.4 करोड़ यूरो (6,330 करोड़ रुपए) के राइट्स इश्यू के मिश्रण के माध्यम से पूंजी जुटा रहा है।

लिवाली की बदौलत गिरावट से उबरा बाजार

- सेंसेक्स 1.29 प्रतिशत की छलांग लगाकर 82408.17 अंक पर
- निफ्टी 1.29 प्रतिशत की तेजी के साथ 25112.40 अंक पर बंद

मुंबई, 20 जून (एजेंसियां)। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के इजराइल-ईरान संघर्ष में अमेरिकी सैन्य भागीदारी का निर्णय वापस लेने से यूरोपीय बाजार में आई तेजी से उत्साहित निवेशकों की स्थानीय स्तर पर हुई चौतरफा लिवाली की बदौलत पिछले लगातार तीन दिनों की गिरावट से उबरकर आज शेयर बाजार एक प्रतिशत से अधिक उछल गया।

बीएसई का तीस शेयरों वाला संवेदी सूचकांक सेंसेक्स 1046.30 अंक अर्थात 1.29 प्रतिशत की छलांग लगाकर 82408.17 अंक और नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) का निफ्टी 319.15 अंक यानी 1.29 प्रतिशत की तेजी के साथ 25112.40 अंक पर बंद हुआ। इसी तरह बीएसई का मिडकैप 1.20 प्रतिशत उछलकर 45,480.26 अंक और स्मॉलकैप 0.55 प्रतिशत मजबूत होकर 52,378.52 अंक पर पहुंच गया।

इस दौरान बीएसई में कुल 4094 कंपनियों के शेयरों में कारोबार हुआ, जिनमें से 2463 में तेजी जबकि 1484 में गिरावट रही वहीं 147 में कोई बदलाव नहीं हुआ। इसी तरह एनएसई में कारोबार के लिए रखी गई कुल 2954 कंपनियों के शेयरों में से 1912 में लिवाली जबकि 963 में बिकवाली हुई वहीं 79 में टिकाव रहा।

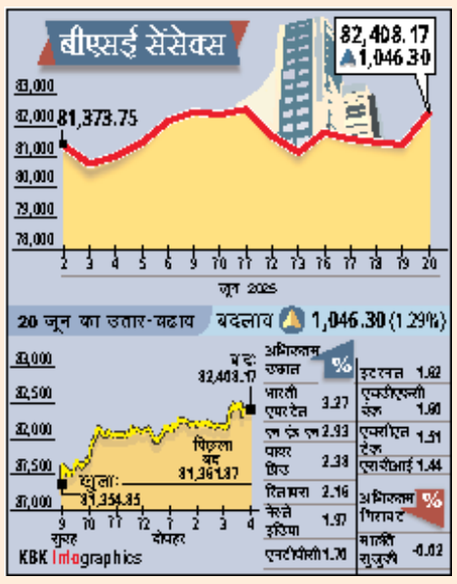

बीएसई के सभी 21 समूहों का रुझान सकारात्मक रहा। इससे कमोडिटीज 0.54, सीडी 1.12, ऊर्जा 0.99, एफएमसीजी 0.52, वित्तीय सेवाएं 1.35, हेल्थकेयर 0.78, इंडस्ट्रियल्स 1.21, आईटी 0.65, दूरसंचार 2.73, यूटिलिटीज 1.62, ऑटो 0.84, बैंकिंग 1.15, कैपिटल गुड्स 1.17, कंज्यूमर ड्यूरेबल्स 0.84, धातु 1.10, तेल एवं गैस 0.61, पावर 1.46, रियल्टी 2.22, टेक 1.42, सर्विसेज 0.99 और फोकस्ड आईटी समूह के शेयर 0.83 प्रतिशत उछल गए।

शुरुआती कारोबार में सेंसेक्स सात अंक फिसलकर 81,354.85 अंक पर लगभग सपाट खुला और बिकवाली होने से थोड़ी देर बाद ही 81,323.20 अंक के निचले स्तर पर आ गया। वहीं, लिवाली होने से कारोबार के अंतिम चरण में यह 82,494.49 अंक के उच्चतम स्तर पर पहुंच गया। अंत में पिछले दिवस के 81,361.87 अंक के मुकाबले 1.29 प्रतिशत की छलांग लगाकर 82408.17 अंक हो गया।

इसी तरह निफ्टी भी छह अंक उतरकर 24,787.65 अंक पर सपाट खुला और सत्र के दौरान 24,783.65 अंक के निचले जबकि 25,136.20 अंक के उच्चतम स्तर पर रहा। अंत में पिछले दिवस के 24,793.25 अंक की तुलना में 1.29 प्रतिशत की तेजी के साथ 25,112.40 अंक पर बंद हुआ।

इस दौरान सेंसेक्स में मारुति की 0.02 प्रतिशत की गिरावट को छोड़कर अन्य कंपनियों में तेजी रही। भारती एयरटेल 3.27, महिंद्रा एंड महिंद्रा 2.93, पावरग्रिड 2.38, रिलायंस 2.16, नेस्ले इंडिया 1.97, एनटीपीसी 1.70, इटरनल 1.62, एचडीएफसी बैंक 1.60, एचसीएल टेक 1.51, एसबीआई 1.44, आईसीआईसीआई बैंक 1.13, कोटक बैंक 1.13, एलटी 1.12, सन फार्मा 1.01 और अडानी पोर्ट्स के शेयर 0.99 प्रतिशत लाभ में रहे। बजाज फिनसर्व 0.85, टेक महिंद्रा 0.78, एशियन पेंट 0.73, टाटा स्टील 0.63, आईटीसी 0.59, टाटा मोटर्स 0.58 प्रतिशत का मुनाफा कमाया।

2025 की पहली तिमाही में ग्लोबल सुपर-प्राइम प्रॉपर्टी की बिक्री में 6 प्रतिशत की वृद्धि

नई दिल्ली, 20 जून (एजेंसियां)। सुपर-प्राइम आवासीय संपत्तियों के वैश्विक बाजार में 2025 की पहली तिमाही के दौरान लेनदेन में 6 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई। यह जानकारी शुक्रवार को आई एक रिपोर्ट में दी गई।

रियल एस्टेट कंसल्टेंसी नाइट फ्रैंक द्वारा संकलित आंकड़ों के अनुसार, 2025 की पहली तिमाही में 12 वैश्विक शहरों में 9.43 बिलियन डॉलर के कुल 527 सुपर-प्राइम सौदे दर्ज किए गए। इन लग्जरी घरों की औसत बिक्री कीमत 17.9 मिलियन डॉलर रही। दुबई ने 111 सौदों के साथ एक बार फिर वैश्विक रैंकिंग में शीर्ष स्थान हासिल किया, जिसमें सबसे अधिक लेनदेन और सबसे अधिक लेनदेन मात्रा दर्ज की गई। पाम बीच और मियामी ने भी मजबूत प्रदर्शन किया। पाम बीच में 2025 की पहली तिमाही में 74 डील के साथ शानदार वृद्धि देखी गई, जो 2023 की चौथी तिमाही में केवल 21 डील से अपनी रिकवरी जारी रखती है। मियामी में डील की संख्या में सालाना आधार पर 35 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई, जिसमें पिछले वर्ष की समान अवधि की तुलना में लेन-देन की मात्रा लगभग दोगुनी हो गई। न्यूयॉर्क में 75 लेन-देन दर्ज किए गए, जबकि लंदन और हांगकांग में 2023 के अंत में मजबूत समापन के बाद कुछ कमी आई। हांगकांग में डील की संख्या घटकर 42 हो गई।

प्रथम पेज का शेष

तेल अवीव से लेकर.... ईरान की तरफ से ताजा मिसाइल हमलों से हाइफा में दो लोग घायल हुए हैं, जिनमें एक नाबालिग भी शामिल है। उसकी हालत गंभीर है। टाइम्स ऑफ इजराइल की रिपोर्ट के मुताबिक, घायल 16 साल के लड़के का इलाज कर रहा है। 54 साल के घायल व्यक्ति की हालत ठीक है। कई अन्य लोगों को हल्की चोटें लगी हैं।

शुक्रवार को जिनेवा में ईरानी विदेश मंत्री अब्बास अरागची ने यूरोपीय संघ की विदेश नीति प्रमुख काजा कालास, फ्रांस, जर्मनी और यूनाइटेड किंगडम के विदेश मंत्रियों के साथ लंच मीटिंग की। यह बैठक ईरान-इजराइल युद्ध के बीच तनाव कम करने और कूटनीतिक समाधान तलाशने के मकसद से हुई। हालांकि ईरान पहले ही साफ कर चुका है कि जब तक इजराइली हमले जारी रहेंगे, वह किसी भी तरह की बातचीत नहीं करेगा। फिर भी इस मुलाकात को संभावित शांति प्रयास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है। वहीं ईरान ने यूनेस्को से अपील की है कि वह इजराइली हमलों के कारण उसकी सांस्कृतिक और प्राकृतिक धरोहर पर मंडरा रहे सैन्य खतरों से उसकी रक्षा के लिए तत्काल हस्तक्षेप करे। यूनेस्को महानिदेशक ऑड्री अज़ोले को भेजे गए पत्र में ईरान ने बताया कि उसके पास 40,000 से अधिक राष्ट्रीय रूप से पंजीकृत स्थल और 28 वर्ल्ड हेरिटेज नामांकन हैं, जिनमें 54 ऐतिहासिक कारवां सराय, राष्ट्रीय रेलवे, हायर्केनियन जंगल, क़नात और ऐतिहासिक बाग शामिल हैं।

ईरान ने चेतावनी दी कि यदि यूनेस्को देरी करता है तो ये धरोहरें पूरी तरह से नष्ट हो सकती हैं। इजराइली मीडिया जेरूसलम पोस्ट की रिपोर्ट के मुताबिक, गुरुवार रात वॉशिंगटन में इजराइली प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू और शीर्ष सैन्य अधिकारियों ने अमेरिकी उपराष्ट्रपति जेडी वांस और डिफेंस सेक्रेटरी पीट हेगसेथ के साथ गुप्त बैठक की। इस बैठक में ईरान पर संभावित सैन्य कार्रवाई में अमेरिका की भूमिका को लेकर चर्चा हुई। रिपोर्ट में दो सूत्रों के हवाले से कहा गया है कि इस बैठक में इजराइली डिफेंस मिनिस्टर इसराइल काट्ज़, आईडीएफ चीफ एयाल ज़ामिर और स्ट्रैटेजिक अफेयर्स मिनिस्टर रॉन डर्मर भी शामिल थे। चर्चा के विवरण सार्वजनिक नहीं किए गए हैं।

अंग्रेजी भाषा शर्म नहीं.... है जितनी आपकी मातृभाषा, क्योंकि यही रोजगार दिलाएगी, आत्मविश्वास बढ़ाएगी। भारत की हर भाषा में आत्मा है, संस्कृति है, ज्ञान है। हमें उन्हें संजोना है, और साथ ही हर बच्चे को अंग्रेजी सिखानी है। यही रास्ता है एक ऐसे भारत का, जो दुनिया से मुकाबला करे, जो हर बच्चे को बराबरी का मौका दे।

एअर इंडिया ने रद्द.... हो गई थी। इसके बाद से हर हवाई अड्डे पर विमानों की ऑपरेशनल चेकिंग को सख्त कर दिया गया है। एअर इंडिया ने 21 जून से 15 जुलाई 2025 तक हर हफ्ते 38 अंतरराष्ट्रीय उड़ानें घटाने और तीन विदेशी मार्ग पर सेवाएं बंद करने का ऐलान किया है। हालिया विमान दुर्घटना के बाद सुरक्षा जांच बढ़ाई गई है, जिससे उड़ानों पर असर पड़ा है।

यह घोषणा उस समय की गई है जब एक दिन पहले एयरलाइन ने कहा था कि वह अस्थायी रूप से बड़े आकार वाले विमानों से संचालित उड़ानों में 15 प्रतिशत की कटौती करेगी। एयरलाइन ने बयान में कहा, यह कटौती 21 जून से प्रभावी होगी और कम से कम 15 जुलाई 2025 तक जारी रहेगी। इसमें दिल्ली-नैरोबी, अमृतसर-लंदन (गैटविक) और गोवा (मोपा)-लंदन (गैटविक) पर 15 जुलाई तक सेवाएं निलंबित रहेंगी। इसके अलावा, उत्तरी अमेरिका, यूरोप, ऑस्ट्रेलिया और सुदूर पूर्व के शहरों को जोड़ने वाले 16 अंतरराष्ट्रीय मार्गों पर उड़ानों में कमी की जाएगी।

मध्यप्रदेश को बनाएंगे देश की.... में प्रदेश में साढ़े पांच करोड़ लीटर दूध उत्पादित होता है और इसमें से लगभग आधा घरेलू उपयोग और शेष मार्केट तक पहुंचता है। फूड प्रोसेसिंग यूनिट स्थापित कर प्रदेश में दुग्ध से समृद्धि के लिए नई योजनाएं बना रहे हैं। दुग्ध उत्पादन और संकलन के कार्य को व्यवस्थित बनाने के लिए समितियों की संख्या भी 9 हजार से बढ़कर 26 हजार करने का संकल्प है।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर कामधेनु योजना में गाय के पालन के लिए अनुदान दिया जा रहा है। गाय के गोबर से किसान खाद बनाएं, सरकार प्राकृतिक खाद से उत्पादित अनाज का ज्यादा भाव देगी। वर्तमान में इंदौर, देवास, रीवा एवं कुछ अन्य जिलों में गौ-शालाओं के माध्यम से सीएनजी गैस का उत्पादन किया जा रहा है। किसानों को रसायन मुक्त प्राकृतिक और जैविक खाद उपलब्ध हो रही है। बड़ी गौशाला खोलने के लिए राज्य सरकार 125 एकड़ जमीन प्रदान करेगी। वर्तमान बजट में इसके लिए प्रावधान भी किया गया है। अगले तीन साल में गौ-पालन के क्षेत्र में प्रदेश का परिदृश्य बदलेंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि आज 7 गौ-शालाएं पुरस्कृत हुई हैं और गौ सेवी भी सम्मानित हुए हैं। यह भोपाल, दमोह, अनूपपुर, रायसेन, छिंदवाड़ा, हरदा और विदिशा जिलों के हैं। कार्यक्रम में 73 गौशालाओं को पंजीकरण प्रमाण पत्र प्रदान किए गए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने गौशाला संचालकों को अनुदान राशि का अंतरण किया एवं गौसेवा और गौशाला संचालन के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने वाली संस्थाओं को वर्ष 2023- 24 के लिए आचार्य श्री विद्यासागर जीवदया गौसेवा सम्मान पुरस्कार प्रदान किए।

पशुपालन राज्य मंत्री स्वतंत्र प्रभार लखन पटेल ने कहा कि मुख्यमंत्री डॉ. यादव के नेतृत्व में प्रदेश में निरंतर गौ संरक्षण एवं संवर्धन का कार्य किया जा रहा है। प्रदेश में 9 अप्रैल 2024 से 29 मार्च 2025 तक गौ संरक्षण वर्ष मनाया गया जिसके अंतर्गत प्रदेश भर में गौ संरक्षण एवं गौ सेवा के कार्य किए गए। सरकार ने प्रदेश में स्वावलंबी गौशालाएं बनाने का निर्णय लिया है। मध्यप्रदेश ऐसा करने वाला देश का पहला राज्य है।

सांसद विष्णुदत्त शर्मा ने कहा कि गौपालन और गौसेवा मुख्यमंत्री डॉ. यादव के जीवन का हिस्सा है। उन्होंने प्रदेश को पशुपालन में अग्रणी बनाने का लक्ष्य रखा है। यह प्रदेश में इस क्षेत्र का ऐतिहासिक सम्मेलन है। राज्य सरकार ने नेशनल डेयरी विकास बोर्ड के साथ समझौता किया है। कामधेनु योजना से किसानों को गौपालन और डेयरी शुरू करने का अवसर मिलेगा। गौपालन से कृषि क्षेत्र ही नहीं सम्पूर्ण आर्थिक क्षेत्र को मजबूती मिलेगी।

खेल एवं सहकारिता मंत्री विश्वास सारंग ने कहा कि गौ-माता की सेवा से पुण्य कार्य कोई नहीं हो सकता है। गौ-माता की सेवा से वैतरणी पार हो जाती है। प्रदेश की समृद्धि के लिए गौ-पालन और गौ-सेवा पर ध्यान देना होगा। गौसेवकों को सिंगल क्लिक से अनुदान राशि भेजने का निर्णय प्रशंसनीय है।

मुख्यमंत्री निवास में आयोजित राज्य स्तरीय गौ-शाला सम्मेलन में विधायक भगवानदास सबनानी, भोपाल महापौर श्रीमती मालती राय, भोपाल नगर निगम अध्यक्ष किशन सूर्यवंशी, अपर मुख्य सचिव अशोक वर्णवाल, प्रमुख सचिव उमाकांत उमराव सहित अनेक जनप्रतिनिधि एवं प्रदेशभर से आए गौ-पालक उपस्थित थे।

पत्रकार प्रकाशन प्रा.लि. के लिए गिरिराज चाचा द्वारा मेसर्स डी.बी. कार्प लिमिटेड फौजदार गैरेज पवारखेड़ा इटारसी रोड नर्मदापुरम से मुद्रित एवं 45, वार्ड नं. 6, कसेरा मुहल्ला नर्मदापुरम म.प्र. से प्रकाशित, संपादक: **पलाश सुरजन,** कार्यकारी संपादक: **ज़ाकिर अली*** फोन 422297। ई-मेल deshbandhuhbd1@gmail.com समाचार चयन के लिए पी.आर.बी. एक्ट के तहत जिम्मेदार।